मासिक
शिविरा
पत्रिका
वर्ष : 57 | अंक : 4 | अक्टूबर, 2018 | पृष्ठ : 52 | मूल्य : ₹15
शुभ दीपोत्सव

## चित्रावीथिका

माननीया मुख्यमंत्री श्रीमती वसुंधरा राजे को राज्यस्तरीय शिक्षक सम्मान समारोह-2016 के अवसर पर गार्ड ऑफ ऑनर प्रदान किया गया।

माननीया मुख्यमंत्री श्रीमती वसुंधरा राजे शिक्षा विभाग की प्रदर्शनी का उद्घाटन करते हुए।

माननीया मुख्यमंत्री श्रीमती वसुंधरा राजे राज्यस्तरीय शिक्षक सम्मान समारोह-2016 का दीप प्रज्वलन कर शुभारम्भ करते हुए, साथ में हैं माननीय बच्चा शिक्षा मंत्री श्री कालीचरण सराफ।

माननीया मुख्यमंत्री श्रीमती वसुंधरा राजे को राज्यस्तरीय शिक्षक सम्मान समारोह-2016 के अवसर पर श्री तरुण राज पांचाल डॉ. राधाकृष्णन् की स्वनिर्मित कलाकृति प्रतीक चिह्न के रूप में भेंट करते हुए।

शिक्षक सम्मान प्रशस्तियाँ (संस्कारों के सोपान) पुस्तिका का लोकार्पण गरिमामय मंच द्वारा किया गया।

शिविरा पत्रिका के 'शिक्षक दिवस विशेषांक' (सितम्बर, 2016) का लोकार्पण गरिमामय मंच द्वारा किया गया।

राज्यस्तरीय शिक्षक सम्मान समारोह-2016 में उपस्थित सम्मानित शिक्षकों, अभिकारियों और गणमान्य अतिथियों को सम्बोधित करते हुए माननीया मुख्यमंत्री श्रीमती वसुंधरा राजे, माननीय शिक्षा राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) प्रो. वासुदेव देवनानी तथा आभार प्रकट करते हुए निदेशक माध्यमिक शिक्षा राजस्थान श्री बी.एल. स्वर्णकार।

(बाएं) माननीया मुख्यमंत्री श्रीमती वसुंधरा राजे के सान्निध्य में राज्य सरकार और जेम्स एकेडमी के मध्य शिक्षा के क्षेत्र में कार्य करने हेतु एम.ओ.यू. पर हस्ताक्षर हुए। इस अवसर पर माननीय शिक्षा राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) प्रो. वासुदेव देवनानी, विधायक एवं प्रदेशाध्यक्ष (भाजपा) अशोक परनामी, जेम्स समूह के अध्यक्ष श्री अमरीश चन्द्र और सिने अभिनेता अक्षय कुमार उपस्थित रहे। (दाएं) शासन सचिव श्री नरेश पाल गंगवार एवं श्री अमरीश चन्द्र एम.ओ.यू. के पत्र हस्तांतरित करते हुए।

**4 सितम्बर, 2016** — **शिक्षक सम्मान समारोह से पूर्व सांस्कृतिक संध्या** — **विद्या समागार, जयपुर**

राज्यस्तरीय शिक्षक सम्मान समारोह–2016 की पूर्व संध्या 4 सितम्बर, 2016 को विद्या समागार, जयपुर में राज्य के विभिन्न जिलों से आए शिक्षक कलाकारों ने सांस्कृतिक संध्या के रूप में मनमोहक, आकर्षक एवं रंगारंग प्रस्तुतियाँ प्रस्तुत की।

डाक पंजीयन संख्या Jaipurcity/486/2014-16

शिविरा पत्रिका (मासिक) ● अक्टूबर, 2016
प्रकाशन तिथि : 2 अक्टूबर, 2016 पृष्ठ 52 ● प्रेषण : हर माह की 5, 6 तारीख

समाचार पत्र पंजीयन संख्या 10350/66

राज्यस्तरीय शिक्षक सम्मान समारोह-2016 में सम्मानित शिक्षकगण

फोटो सौजन्य : मोहन गुप्ता 'मिलवा', जयपुर मो. 9414265628

पत्रिका अवितरित होने की स्थिति में इस पते पर भेजें : वरिष्ठ सम्पादक, शिविरा प्रकाशन, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर-334001

मासिक

# शिविरा पत्रिका

न हि ज्ञानेन सदृशं पवित्रमिह विद्यते -श्रीमद्भगवद्गीता 4/38

इस संसार में ज्ञान के समान पवित्र करने वाला निःसंदेह कुछ भी नहीं है।
In this world there is no purifier as great as knowledge.

वर्ष : 57 | अंक : 4 | आश्विन-कार्तिक २०७३ | अक्टूबर, 2016



प्रधान सम्पादक
**बी.एल. स्वर्णकार**

वरिष्ठ सम्पादक
**प्रकाश चन्द्र जाटोलिया**

सम्पादक
**गोमाराम जीनगर**

सह सम्पादक
**मुकेश व्यास**

प्रकाशन सहायक
**नारायण दास जीनगर**
**रमेश व्यास**



मूल्य : ₹ 15

**वार्षिक चंदा दर व शर्तें**

- शिक्षकों/लिपिकों के लिए ₹ 75
- राजकीय संस्थाओं/कार्यालयों/विद्यालयों के लिए ₹ 150
- गैर राजकीय संस्थाओं के लिए ₹ 200
- मनीऑर्डर/बैंक ड्रॉफ्ट/पोस्टलऑर्डर **निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर** के नाम देय हैं।
- चैक स्वीकार्य नहीं है।
- कृपया पूर्ण पता मय पिन कोड लिखें।
- नवीनीकरण हेतु चंदा राशि कृपया दो माह पूर्व भिजवाएं।



**पत्र व्यवहार हेतु पता**
**वरिष्ठ सम्पादक, शिविरा पत्रिका**
**माध्यमिक शिक्षा राजस्थान**
**बीकानेर-334 001**
दूरभाष : 0151-2528875
फैक्स : 0151-2201861
E-mail : shivira.dse@rajasthan.gov.in



शिविरा पत्रिका में व्यक्त विचार लेखकों के अपने विचार होते हैं। अभिव्यक्त विचारों से **शिक्षा विभाग राजस्थान** का सहमत होना आवश्यक नहीं है। **-वरिष्ठ संपादक**


## इस अंक में


**अपनों से अपनी बात**

- विद्यादान-महाअभिमान 4

**दिशाकल्प : मेरा पृष्ठ**

- सबल राष्ट्र के सशक्त नागरिक 5
- **राज्यस्तरीय शिक्षक सम्मान समारोह-2016**
  भावी पीढ़ी का निर्माण : कल का राजस्थान-वसुन्धरा राजे 8
  **महावीर प्रसाद गर्ग**

**आलेख**

- तमसो मा ज्योतिर्गमय 12
  **मधुबाला शर्मा**
- बहुआयामी प्रतिभा के धनी : महात्मा गाँधी 14
  **सांवलाराम नामा**
- शास्त्रीजी : एक पुण्य स्मरण 15
  **गोमाराम जीनगर**
- 'बा' से पूछ लो 16
  **सत्यनारायण शर्मा**
- डॉ. अब्दुल कलाम : व्यक्तित्व एवं कृतित्व 17
  **अजीत कुमार मोदी**
- भारत रत्न डॉ. विश्वेश्वरैया 18
  **रूपनारायण काबरा**
- आपकी आदत 35
  **डॉ. दाऊदयाल गुप्ता**
- जिन्ह के रही भावना जैसी... 36
  **रामकिशोर**
- महात्मा गाँधी का बचपन और भारतीय संस्कृति 37
  **त्रिलोकचन्द वर्मा**
- शिक्षण की तैयारी 38
  **डॉ. आर.पी. कर्मयोगी**
- सेवाकालीन शिक्षक 41
  **शंकर लाल**
- हाईटेक होते सरकारी स्कूल 42
  **घनश्याम साँखला**
- ऐसे थे महान् शिक्षाविद् डॉ. दूलसिंह 43
  **पवन कुमार स्वामी**
- भगवान से भी पहले देश 45
  संकलन : **दुर्गाशंकर हर्ष**
- विजय पर्व दशहरा 47
  **अचल चन्द जैन**

**मासिक गीत**

- जय-जय भारत माता 13
  संकलन : **महावीर प्रसाद आसोपा**

**लेखा स्तम्भ**

- लेखों का अंकेक्षण-संक्षिप्त परिचय 44
  **विष्णुदत्त पुरोहित**

**स्तम्भ**

- पाठकों की बात 6-7
- आदेश-परिपत्र 19-33
- विद्यालय प्रसारण कार्यक्रम 34
- शिविरा पञ्चाङ्ग (अक्टूबर-नवम्बर 16) 34
- शाला प्रांगण से 48
- चतुर्दिक समाचार 49
- हमारे भामाशाह 50

**पुस्तक समीक्षा** 46-47

- पर्यावरण प्रदूषण-समाधान चिंतन
  लेखक : मोहन लाल गहलोत
  समीक्षक : **डॉ. कृष्णा आचार्य**
- भक्तिमति समान बाई : जीवन और काव्य
  सम्पादन : डॉ. मंजुला बारैठ
  समीक्षक : **पृथ्वीराज रतनू**


**मुख्य आवरण :**
**नारायणदास जीनगर, बीकानेर**
**मो. 9414142641**

सत्यमेव जयते

**प्रो. वासुदेव देवनानी**
**राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार)**
**प्राथमिक, माध्यमिक शिक्षा एवं भाषा विभाग**
**राजस्थान सरकार, जयपुर**

**अपनों से अपनी बात**

# विद्यादान-महाअभिमान

25 सितम्बर' 2016 को हमने भारत माता के महान सपूत ऋषिपुरुष एकात्म मानवदर्शन विचार प्रणेता पं. दीनदयाल उपाध्याय का सौ वा जन्मदिन मनाया। वे हमारे शताब्दी पुरुष हैं। राष्ट्रीय राजधानी नई दिल्ली सहित देश के भिन्न-भिन्न भागों और विश्व क्षितिज पर अनेक देशों में शताब्दी के महानायक, उदात्तचिन्तक और मनीषी विद्वान पं. उपाध्याय को श्रद्धा सुमन भेंट कर उनके प्रति कृत्तज्ञता प्रकट करने के लिए कार्यक्रम आयोजित किए गए। इस अवसर पर राजस्थान में जगह-जगह पर रक्तदान शिविर लगाए गए, जहाँ हजारों युवाओं ने रक्तदान कर मानवता के कल्याण की दिशा में एक अभिनव पहल की। पण्डितजी राजनीति में शुचिता के पर्याय थे। पक्ष-विपक्ष दोनों को खरी बात कहने वाले उपाध्याय के कोई शत्रु नहीं था। वे अजातशत्रु थे। पं. दीनदयाल उपाध्याय को प्रणाम करते हुए मैं उनके द्वारा बताए गए मार्ग पर चलने की अपील करता हूँ।

यह वर्ष पं. दीनदयाल उपाध्याय का जन्म शताब्दी वर्ष है। इस वर्ष उनके सम्मान में देश-विदेश में अनेक समारोह आयोजित किए जाएँगे। उनके द्वारा प्रणीत 'एकात्म मानव दर्शन' का सिद्धान्त 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की मंगलभावना को साकार रूप देने वाला है। हमें इस महान दर्शन का अनुगमन कर तदनुरूप आचरण करना चाहिए।

वर्तमान शिक्षण सत्र के तीन माह व्यतीत हो चुके हैं। पहली अक्टूबर 2016 से विद्यालयों का समय बदल चुका है। अब एकल पारी विद्यालयों का समय प्रात: 09:20 बजे से अपराह्न 03:40 तक तथा दो पारी विद्यालयों का समय प्रात: 07:30 बजे से सायं 05:30 बजे (प्रत्येक पारी 5 घंटे) निर्धारित किया गया है। आने वाले चार-पाँच महीने शिक्षण अधिगम एवं अभ्यास की दृष्टि से बड़े महत्त्वपूर्ण हैं। शिक्षा के इस पावन यज्ञ में विद्यार्थियों के लिए मंगलभाव के साथ शिक्षा की अलख जगा रहे विभिन्न महानुभावों से मैं चाहूँगा कि-

- शिक्षक पूर्ण मनोयोग से विद्यार्थियों का अध्यापन एवं मार्गदर्शन करें। वे अपने द्वारा तैयार की गई वार्षिक एवं मासिक शिक्षण योजना के आधार पर दैनिक पाठ योजना (Lesson Plan) अपनी शिक्षक डायरी में विस्तार से तैयार कर उसके अनुसार शिक्षण कार्य करवाएं। याद रखिए, जो लोग अपने कार्यों की स्पष्ट योजना पहिले से तैयार कर लेते हैं, उनकी सफलता एवं प्रतिष्ठा की सम्भावना द्वि-गुणित हो जाती है। गृहकार्य देना, उसकी यथोचित जाँच, टेस्ट सीरिज, विशेष कक्षाएं आदि ऐसे उपक्रम हैं जो उत्तम परीक्षा परिणाम के आधार होते हैं। हमें इन्हें व्यवहार में लाना चाहिए।
- संस्था प्रधान अपने विद्यालयों के शैक्षणिक एवं भौतिक क्रियाकलापों के मुख्य सूत्रधार होते हैं। वे शिक्षकों का उचित मार्गदर्शन करते हुए विभागीय अधिकारियों, अभिभावकों एवं प्रशासन के साथ अपेक्षित तादातम्य रखते हुए अध्यापन-अधिगम (Teaching-Learning) की भावभूमि तैयार करते हैं। वे शिक्षकों की पाठ योजनाओं को प्रभावी बनाने में मददगार बनें। शिक्षकों की डायरी औपचारिक न रहकर अनौपचारिक एवं शिक्षक का प्रतिबिम्ब बन जाए, यह संस्था प्रधानों को सुनिश्चित करना है। डायरी को उचित ढंग से संधारित करना नियमानुसार आवश्यक है। मैं चाहता हूँ की आदर्श पाठ योजनाएं तैयार करने के लिए शिक्षकों के मध्य स्वस्थ प्रतिस्पर्धा का विकास हो।
- विभागीय अधिकारियों से मैं चाहूँगा कि वे अधिकाधिक समय फील्ड में देकर संस्था प्रधानों, शिक्षकों एवं छात्र-छात्राओं का सम्बलन करें। उनकी फील्ड विजिट बिना कहे, स्वत: ही एक वातावरण का निर्माण करने वाली होती है जिसकी छाया में शिक्षा का उपवन महकता, फलता-फूलता है। वे यह सुनिश्चित करें कि सब के सब अपनी पूरी क्षमता के साथ विद्यादान के इस महाअभियान में दत्तचित्त होकर लगें। हमारे ध्यान में विद्यार्थी सर्वोपरि रहना चाहिए। वही विद्यालय रूपी मंदिर का देव है, हम तो उसके उपासक एवं पुजारी हैं। यह भाव हमारे मन में रहना चाहिए।
- इस माह शक्ति उपासना का महापर्व नवरात्रि भी है, मेरा मानना है कि नवरात्रि में विद्यालयों में कन्या पूजन के कार्यक्रम आयोजित होने चाहिए। जो हमारे 'बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ' अभियान की भावना के अनुरूप समाज जागरण का एक सार्थक प्रयास बन सके।

ऋषिपुरुष पं. दीनदयाल उपाध्याय जी के जन्म शताब्दी वर्ष में हम उनके जीवन एवं कर्म से प्रेरणा लेकर हमारी लोकप्रिय एवं यशस्वी मुख्यमंत्री श्रीमती वसुंधरा राजे के स्वप्न अनुसार शिक्षा के क्षेत्र में राजस्थान को देश के अग्रणी राज्यों में स्थापित कर अपने शिक्षक होने को सार्थक करें।

इन्हीं शुभकामनाओं के साथ...।

**(प्रो. वासुदेव देवनानी)**
**शिक्षामंत्री**

> "याद रखिए, जो लोग अपने कार्यों की स्पष्ट योजना पहिले से तैयार कर लेते हैं, उनकी सफलता एवं प्रतिष्ठा की सम्भावना द्वि-गुणित हो जाती है। गृहकार्य देना, उसकी यथोचित जाँच, टेस्ट सीरिज, विशेष कक्षाएं आदि ऐसे उपक्रम हैं जो उत्तम परीक्षा परिणाम के आधार होते हैं। हमें इन्हें व्यवहार में लाना चाहिए।"

सत्यमेव जयते

**बी.एल. स्वर्णकार**
निदेशक, माध्यमिक शिक्षा

## दिशाकल्प : मेरा पृष्ठ

# सबल राष्ट्र के सशक्त नागरिक

सुखद संयोग है कि लोकमंगल की भावना से परिपूर्ण नवरात्रि, विजयादशमी और दीपावली पर्व अक्टूबर माह में हैं। प्रत्येक भारतीय, दीपावली की तैयारी का प्रारम्भ घर की साफ-सफाई से करता है; स्वतःस्फूर्त चेतना ही इस अभियान की मुख्य शक्ति होती है। स्वच्छता का यह अभियान हमारी सांस्कृतिक परम्परा का हिस्सा है। आइए, हमारी इस विराट परम्परा में एक कदम आगे बढ़ें, जो स्वच्छता अभियान हमारे घर और संस्थान की स्वच्छता तक ही सीमित है उस अभियान को अपने गली, मौहल्ले, नगर, राज्य और राष्ट्र तक आगे बढ़ाएँ। कहा भी गया है 'स्वच्छता में ईश्वर का वास होता है।' हम संकल्पित हों कि स्वतःस्फूर्त प्रेरणा से पूरे राज्य और राष्ट्र में स्वच्छता अभियान अपनाकर अपनी विशिष्ट पहचान बनाएँगे।

स्वच्छता और स्वास्थ्य एक दूसरे के पूरक हैं। 'स्वस्थ शरीर में स्वस्थ मस्तिष्क विकसित होता है।' हमारे विद्यालयों में विद्यार्थियों के रूप में भारत का स्वस्थ मस्तिष्क, शिक्षा और संस्कार प्राप्त कर रहा है। विद्यालय का शैक्षिक वातावरण आनन्ददायक हो इस हेतु विद्यार्थी, विद्यालय और समुदाय मिलकर अपनी महती भूमिका निभाते हैं।

विद्यालय और शिक्षक-अभिभावक परिषद् (पी टी ए) विद्यार्थी हित में संवाद स्थापित कर श्रेष्ठ परिणाम प्राप्त कर सकते हैं। विद्यालय की भौतिक सुख-सुविधाओं और विद्यार्थियों के लिए परिष्कृत शैक्षिक वातावरण हेतु शालाप्रबंधन समयबद्ध कार्ययोजना बनाकर प्रभावी रूप से क्रियान्विति करें। शिक्षक-अभिभावक संवाद सुदृढ़ होने से चहुँमुखी विकास का मार्ग प्रशस्त होता है। विद्यार्थियों में सीखने-सिखाने की प्रक्रिया प्रभावी रूप से संचालित हो पाती है।

देश का भविष्य विद्यालयों में उच्च गुणवत्तापूर्ण शिक्षा और श्रेष्ठ संस्कार प्राप्त करे, यह हमारा दायित्व है। वे विचार और कर्म से भी हिंसक न हों तभी हम गाँधी और शास्त्री के सपनों के भारत का निर्माण कर सकेंगे। हमारे विद्यार्थियों को सबल राष्ट्र के सशक्त नागरिक के रूप में तैयार करना है।

नवरात्रि, विजयादशमी, दीपावली पर्व की हार्दिक शुभकामनाएँ और बहुत-बहुत बधाई!

(बी.एल. स्वर्णकार)

"देश का भविष्य विद्यालयों में उच्च गुणवत्तापूर्ण शिक्षा और श्रेष्ठ संस्कार प्राप्त करे, यह हमारा दायित्व है। वे विचार और कर्म से भी हिंसक न हों तभी हम गाँधी और शास्त्री के सपनों के भारत का निर्माण कर सकेंगे। हमारे विद्यार्थियों को सबल राष्ट्र के सशक्त नागरिक के रूप में तैयार करना है।"

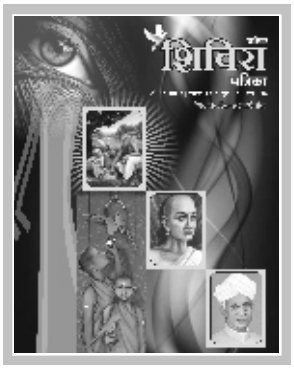


## ▼ चिन्तन

**स्वदेशे पतिते कष्टे**
**दूरस्था लोकयन्तिये।**
**नैव च प्रति कुर्वन्ति**
**ते नराः शत्रुनन्दनाः।।**

**अर्थात्: जब देश संकट में पड़ा हो और जो लोग दूर खड़े देखते रहते हैं तथा प्रतिकार का कोई प्रयत्न नहीं करते, वे शत्रुओं को ही आनन्दित करने वाले होते हैं।**

## पाठकों की बात

- 'शिक्षक दिवस विशेषांक 2016' वास्तव में उत्कृष्टता की ओर एक सार्थक संवाद संप्रेषण का सेतुबंध बन प्रस्तुत हुआ है। 120 से अधिक रचनाओं के मौलिक-संग्रहित विचार पुष्पों की महक से यह सुवासित हो रहा है। शिक्षा मंत्री जी का यह भाव कि 'मैं मंत्री होने से पहले शिक्षक हूँ और मुझे शिक्षक होने पर गर्व है।' शिक्षकों के गौरव का प्रतीक है। पं. दीनदयाल उपाध्याय का नाम स्मरण आनन्द देने वाला है। दिशाकल्प में निदेशक महोदय का प्रस्तुत विचार कि 'अनीति से प्राप्त सफलता की तुलना में नीति से प्राप्त असफलता को शिरोधार्य करना' निराशा में आशा का संचार करता है। शैक्षिक चिन्तन हिन्दी विविधा-राजस्थानी विविधा और इस माह का गीत-'यह कल कल छल छल बहती क्या कहती गंगा धारा...' में शैक्षिक सामाजिक और राष्ट्रीय मूल्यों का प्रभावी सन्देश सम्प्रेषण हो रहा है। 'सम्भवामी युगे-युगे', 'शिक्षक एक कालजयी खोज', 'भारत की खोज- करे कौन?', 'गुरु की गुरुता', 'अध्यापक क्या नहीं चाहते' आदि लेखों में शिक्षकों के लिए वर्तमान युग की चिन्ता-चुनौति और दायित्वों का बोध समाहित है। पगडंडी, पौधारोपण, पीपल की छांव आदि अनेक रचनाओं में भविष्य के भारत के सुन्दर दर्शन हो रहे हैं। 'आओ हम अच्छे बनें', 'माटी हिन्दुस्तान की', 'मेरा प्यारा देश', 'तिरंगा', 'मेरे दादाजी' से झंकृत काव्य कल्प माँ भारती की अथक साधना के पुष्प है विशेषांक के मुख्य पृष्ठ से अंतिम पृष्ठ तक प्रत्येक रचना मोतियों की अद्भुत माला के वे मोती हैं, जिनकी संभाल यदि शिक्षक अपने मन-मस्तिष्क में करे तो न केवल शिक्षक समाज का गौरव बढ़ेगा बल्कि समाज और राष्ट्र की अपेक्षाओं पर खरे उतरने का मार्ग प्रशस्त होगा। सम्पादक मण्डल, रचनाकारों, चित्रकारों व उन समस्त बंधुओं को बधाई व शुभकामनाएँ जिनके परिश्रम कणों से यह विशेषांक हीरे की तरह चमक पड़ा है।

**प्रकाश चन्द्र शर्मा,** डूंगरपुर

- शिक्षक दिवस विशेषांक शिविरा की प्रतीक्षा करते-करते आखिरकार आपके द्वारा आध्यात्मिक, सामाजिक और मानवीय मूल्यों से ओत-प्रोत हीरे की खान स्वरूप 'शिक्षक दिवस विशेषांक' पढ़ने को मिला। पत्रिका का मुख्य पृष्ठ प्रकृति के सृजन का संदेश देता प्रतीत होता है। गुरु संदीपन की आश्रम शिक्षा प्रणाली, महर्षि चाणक्य और आधुनिक युग के छात्र प्रेम के प्रेरणा पुंज डॉ. राधाकृष्णन् के जीवन अनुभवों से प्रेरित सहृदय, नीति और वर्तमान युग के मानव निर्माण मूल्यों का संदेश दे रहे है। 'गुरु की गुरुता', 'चंगुल में चहकता बचपन', 'विद्यालय की घंटी', 'मिट्टी और पत्थर', समर्पण भाव की श्रेष्ठता' आदि के साथ सजा संवरा यह विशेषांक और आप सब सृजन कर्ता बधाई के पात्र है।

**रेखा शर्मा,** डूंगरपुर

- लोक देवता बाबा रामदेवजी का जीवन चरित्र वास्तव में सर्वपन्थ समभाव एवं सामाजिक समरसता का प्रेरक प्रसंग है। बेटियों को बचाना तो अति आवश्यक है, साथ ही उनको पढ़ाना, कौशलों से ओत-प्रोत करना और स्वावलंबी बनाना आज की महत्ती आवश्यकता है। यदि बच्चे संस्कारी नहीं होंगे और बच्चों को मन की बात न करने दी जाएगी तो समाज में अंधकार छा जाएगा। सरकारी स्कूल संवैधानिक मूल्यों में सृजन के आदर्श केन्द्र है। सभी वैचारिक मणियों से सजा संवरा यह विशेषांक आपके अथक प्रयासों परिश्रम और वैचारिक यज्ञ का प्रतिफल है। बधाई एवं शुभकामनाएँ।

**प्रज्ञा त्रिवेदी,** डूंगरपुर

- विशेषांक 2016 को पढ़कर मेरा मन अत्यन्त प्रसन्न हुआ। विश्वास है कि विशिष्ट वर्ग के बालकों की शिक्षा से सम्बन्धित जानकारी बालकों के लिए बहुत लाभप्रद होगी, भावी पीढ़ी की खुशी के लिए दिए गए विचार भी सराहनीय है। 'विद्यालय की घण्टी' कविता से पारम्परिक विद्यालय व्यवस्था की यादें ताजा हो गई। बच्चों से खुलकर संवाद करने के लिए लेखक द्वारा 'खुलकर रखनें दे अपनी बात' और 'भावी पीढ़ी की खुशी को प्राथमिकता दें' बच्चों में विद्रोहीपन दूर करने की जिज्ञासा और उत्सुकता बनाए रखने में सहयोगी होगी। हिन्दी भाषा और कन्या भ्रूण हत्या पर लिखा

आलेख लोगों की संकीर्ण सोच में परिवर्तन लाने में अपना अहम किरदार निभाएगा। मायड़ भाषा के सपूत 'कागद' के व्यक्तित्व और कृतित्व से पाठकों को राजस्थानी साहित्य लेखन के अनुभव की गहराई और शिल्प के बांकपन का अहसास आवश्यक रूप से होगा। इसी प्रकार राजस्थानी वीर गाथा 'बलजी-भूरजी' ने भी अंग्रेजी शासन के विरुद्ध स्वतंत्रता सैनानियों के बलिदान को हृदयपटल पर पुनः रेखांकित कर दिया। 'मायां रूखां री' कविता और 'वचन रो धणी' कहानी भी रोचक लगी। नई पीढ़ी के लिए माँ और पिता के प्रति सम्मान और श्रद्धा कविता 'माँ' और 'पिता' पढ़ने से स्वतः ही प्रस्फुटित होगी। शिक्षक दिवस विशेषांक पर 'गागर में सागर' जैसी तैयार इस पत्रिका में साहित्य और संस्कृति से सराबोर पठनीय सामग्री तैयार करने के लिए शिक्षाविदों और सम्पादक मण्डल को साधुवाद।

**हरिप्रसाद राणा,** बीकानेर

- 'शिक्षक दिवस विशेषांक' सृजनशील शिक्षकों की रम्य रचनाओं की विचित्र रंगों की फुलवारी है। काव्य की विविध विधाओं-गद्य,पद्य, एकांकी, गजल, हाइकू, लघुकथा, कहानी, आलेख आदि भी प्रचुर पाठ्यसामग्री पाठकों को एक साथ ही परोस दी गई है। इसमें से मनवांछित पाठ्यसामग्री मनमाफिक ग्रहण कर सकते हैं। यही नहीं इस प्रचुर पाठ्य सामग्री को शैक्षिक चिंतन, हिन्दी विविधा, राजस्थानी विविधा, बाल साहित्य व कविताओं में विविधीकरण इस अंक की महत्ती विशिष्टता है। अंक पठनीय, स्मरणीय, संग्रहणीय शैक्षिक आयाम व जीवन हेतु उपादेय है। दो-तीन रम्य रचनाओं के बारे में कहने से तो अपने को नहीं रोक पाता। आदरणीय श्री शिवचरण मंत्री ने अपनी लघुकथा के माध्यम से अपनी ममतामयी माँ के भाई बहिन के प्रति किए हुए पक्षपातपूर्ण व्यवहार को बच्ची के आँसुओं द्वारा जिस व्यंग्यात्मक शैली में अभिव्यक्त किया है। वह सराहनीय। एक नाबालिग बच्ची लैंगिक पक्षपात को भली भाँति जानती समझती व महसूस करती है। भाई मनमोहन अभिलाषी ने अपने गवेषणापूर्ण तथ्यों से स्वतंत्रता क्रान्ति के पुरोधा तात्या टोपे का जो जीवन्त वर्णन प्रस्तुत किया है। वह सराहनीय है।
तीनों रचनाकारों को बहुत-बहुत साधुवाद। शिविरा संपादक मण्डल को हार्दिक बधाई।

**टेकचन्द्र शर्मा,** झुंझुनूं

- शिविरा पत्रिका का माह सितम्बर 2016 का अंक बहुत ही आकर्षक छापा गया है। इसमें शैक्षिक चिंतन, हिन्दी विविधा, व बाल साहित्य तथा शिक्षक दिवस पर बहुउपयोगी रचनाएँ पढ़ने को मिली। निदेशक महोदय का 'दिशाकल्प' शिक्षक सम्मानः प्रेरणा पर्व एवं मंत्रीजी की 'अपनों से अपनी बात' प्रेरणास्पद है। इस हेतु सम्पादक मण्डल का बहुत-बहुत आभार।

**भंवरलाल वर्मा,** जोधपुर

## शिविरा को सब गले लगाते

**नए कलेवर में शिविरा पाते,**
**पाठकों की बात है पढ़ते।**
**दिशाकल्प से बढ़ते जाते,**
**शिविरा को सब गले लगाते।**

**आदेश परिपत्र हर माह पाते,**
**शिक्षा की रीति-नीति समझते।**
**तद्नुसार कार्य है करते,**
**शिविरा को सब गले लगाते।**

**महापुरुषों की जीवनियाँ पढ़ते,**
**पर्व, उत्सव और त्यौहार है रचते।**
**गीत-कविता हर माह गाते,**
**शिविरा को सब गले लगाते।**

**नए-नए आलेख हैं पढ़ते,**
**पढ़ते-पढ़ते नहीं अघाते।**
**चिंतन को है आगे बढ़ाते।**
**शिविरा को सब गले लगाते।**

**संस्कृति से रूबरू है होते,**
**चरित्र निर्माण की बात है करते।**
**शिक्षा की है अलख जगाते,**
**शिविरा को सब गले लगाते।**

**सजा-धजा के कैलेण्डर पाते।**
**चहुँओर उसके गुण गान गाते,**
**शिविरा करें और तरक्की।**
**यही कामना हम सब करते।।**

**-महेश कुमार चतुर्वेदी,** प्रतापगढ़

- शिविरा पत्रिका सितम्बर 2016 में प्रकाशित श्री भूरमल सोनी कृत लेख 'प्लास्टिक सर्जरी के जनक' पढ़ा। लेखक का प्रयास प्रशंसनीय है। लेखक ने पुरातन-मानव मूल्यों को प्रस्तुत कर भारतीय शल्य प्रक्रिया को उजागर किया है। भगवान महादेव ने हाथी का मस्तक काटकर गणपति के शरीर में प्रत्यारोपण किया था। वस्तुतः भारतीय संस्कृति में संस्कृत साहित्य में अभूतपूर्व प्रयोग छिपे पड़े हैं। आज भी हस्त लिखित आयुर्वेदिक ग्रन्थ घर-घर में मौजूद है। जिसके आधार पर हमारे पूर्वज चिकित्सा करते थे। सम्पादक मण्डल बधाई का पात्र है जो हमारी भूली-बिसरी संस्कृति को शिविरा में स्थान दे रहा है। सत्य है। पहला सुख निरोगी काया।

**अंबालाल स्वर्णकार,** अजमेर

- 'शिक्षक दिवस विशेषांक' का आकर्षक आवरण युक्त अंक में आते ही मन बाग-बाग हो गया। मुखपृष्ठ पर पाँचों बोलते चित्रों को मेरा शत-शत नमन है। 'गागर में सागर' समेटे हुए पुस्तक का अंक मात्र नहीं है, अनमोल धरोहर है। कलेवर शैक्षिक चिंतन, हिन्दी विविधा, राजस्थानी विविधा, बाल साहित्य आदि 'देखने में छोटे लगे घाव करे गंभीर' को चरितार्थ करता है।

**सांवलाराम नामा,** जालोर

- 'शिविरा पत्रिका विशेषांक' में प्राचीन गुरु-शिष्य परम्परा गुरु संदीपन, आचार्य चाणक्य एवं एस. राधाकृष्णन् का दर्शन होते ही गौरवमयी भारतीय शिक्षादर्शन एवं लोकदेवता बाबा रामदेव के समरसता व समन्वय का साक्षात्कार होता है। विशेषांक का प्रत्येक लेख शिक्षा व संस्कार से सराबोर है। डॉ. अजय जोशी व डॉ. मदनगोपाल लढ्ढा सहित सभी रचनाएँ कसौटीपूर्ण है। शिविरा परिवार द्वारा किए जा रहे प्रयास सकारात्मक परिणाम लाकर पत्रिका को उत्तरोत्तर प्रगति पथ पर अग्रसर कर रहे है जो शैक्षिक जगत एवं शिक्षा विभाग के लिए मील के पत्थर के रूप में विद्यालयों का मार्गदर्शन एवं मूल्य आधारित शिक्षा के स्वरूप को साकार करेगा।

**मोहनलाल जीनगर,** बीकानेर

## राज्यस्तरीय शिक्षक सम्मान समारोह-2016

# भावी पीढ़ी का निर्माण; कल का राजस्थान-वसुन्धरा राजे

❒ महावीर प्रसाद गर्ग

महान शिक्षक पूर्व राष्ट्रपति डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन् की जयन्ती के अवसर पर हर वर्ष की भाँति 5 सितंबर 2016 को राज्यस्तरीय शिक्षक सम्मान का आयोजन राजस्थान की राजधानी गुलाबी नगर जयपुर के बिड़ला सभागार में आयोजित किया गया। सम्पूर्ण राष्ट्र में शिक्षक दिवस के अवसर ऐसे निष्ठावान सेवाभावी शिक्षकों का चयन कर सम्मानित करते हैं जो बच्चों की बौद्धिक और नैतिक नींव के निर्माण और सशक्तता में लगे हुए हैं। शिक्षा विभाग राजस्थान द्वारा ऐसे 36 शिक्षकों, राजकीय विद्यालयों को आदर्श विद्यालय के रूप में विकसित करने के लिए उत्कृष्ट कार्य करने वाले एक जिला शिक्षा अधिकारी, एक अतिरिक्त जिला परियोजना समन्वयक RMSA, एक आदर्श विद्यालय एवं संस्था द्वारा Skilled परियोजना में उत्कृष्ट कार्य करने वाले 02 शिक्षकों का पुरस्कार के लिए चयन किया गया। इस प्रकार कुल 41 शिक्षकों को सम्मानित किया गया।

गुरु ज्ञान के मन्दिर के पुजारी के सम्मान समारोह की मुख्य अतिथि श्रीमती वसुंधरा राजे मुख्यमंत्री राजस्थान, अध्यक्ष प्रो. वासुदेव देवनानी शिक्षा राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार), विशिष्ट अतिथिगण श्री कालीचरण सराफ उच्च शिक्षा मंत्री, डॉ. बी.एल. चौधरी अध्यक्ष माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान, श्री ओ.पी. मीणा मुख्य सचिव, श्री नरेशपाल गंगवार शासन सचिव स्कूल एवं संस्कृत शिक्षा, श्री राजहंस उपाध्याय अतिरिक्त मुख्य सचिव, श्रीमती पूनम आयुक्त राष्ट्रीय माध्यमिक शिक्षा परिषद एवं श्री बी.एल. स्वर्णकार निदेशक माध्यमिक शिक्षा राजस्थान उपस्थित रहे।

सम्मान समारोह में माननीया मुख्यमंत्री श्रीमती वसुंधरा राजे एवं अन्य अतिथियों को एन.सी.सी.के छात्रों ने मधुर बैण्ड धुन के साथ गार्ड ऑफ ऑनर दिया गया। इसी अवसर पर श्री नरेशपाल गंगवार शासन सचिव ने मुख्य द्वार पर मुख्य अतिथि मुख्यमंत्री श्रीमती वसुंधरा राजे,

उच्च शिक्षा मंत्री श्री कालीचरण सराफ एवं शिक्षा राज्यमंत्री श्री प्रो. वासुदेव देवनानी की अगवानी की।

इसके बाद अतिथियों ने राष्ट्रीय माध्यमिक शिक्षा अभियान द्वारा लगाई गई प्रदर्शनी का उद्घाटन किया तथा प्रदर्शनी के माध्यम से राजस्थान में शिक्षा के विभिन्न आयामों का सफर एवं प्रगति को देखा। माननीय अतिथियों ने इस अवसर पर छात्र-छात्राओं से सीधा संवाद किया। इसके बाद मुख्य अतिथि एवं अतिथियों का मंच पर आगमन हुआ। राष्ट्रगीत-वन्देमातरम् का सस्वर गायन हुआ। माँ सरस्वती एवं डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन् की प्रतिमा पर माल्यार्पण एवं दीप प्रज्वलन किया गया। मंचस्थ अतिथियों का पुष्प गुच्छों द्वारा हार्दिक स्वागत किया गया। जयपुर के शिक्षकों द्वारा शिक्षक सम्मान गीत प्रस्तुत किया गया।

'गुरु महिमा के गीत गीत हैं
गायें मुदित मन मीत प्रीत है।
युग युग से प्रति जन जन मन से
आज सुदिन वह अरुणोदय है
दिन मणि शिक्षक सम्मानित है
गुरु महिमा का पुण्य पर्व है....''

बिड़ला सभागार में उपस्थित जन समूह को 'बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ' का संदेश दिया गया।

कन्या भ्रूण हत्या की रोकथाम, बालिकाओं की शिक्षा एवं उनके सर्वांगीण विकास हेतु अन्तर्विभागीय समन्वय द्वारा 'बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ' की शपथ माननीय मुख्यमंत्री ने सभागार में उपस्थित जनसमूह को दिलाई।

**''मैं भारत का नागरिक, आज यह शपथ लेता/लेती हूँ कि मैं लिंग भेद और लिंग चयन जो कि बालिकाओं के जन्म एवं उनके अस्तित्व को जोखिम में डालता है, उस मानसिकता का त्याग करूँगा/करूँगी। जिससे यह सुनिश्चित हो कि लड़कियाँ जन्म लें, उन्हें समान प्यार व शिक्षा मिले और देश का सशक्त नागरिक बनने का समान अवसर मिले।**

**मैं यह भी संकल्प लेता/लेती हूँ कि जन्म पूर्व लिंग पहचान के आधार पर हो रही कन्या भ्रूण हत्या को व्यक्तिगत रूप से और सामूहिक रूप से समाप्त करने की मुहिम में अपना भरपूर सहयोग दूँगा/दूँगी।**

**यह भी संकल्प लेता/लेती हूँ कि मैं अपने देश की महिलाओं एवं पुरुषों में बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ के संदेश का प्रचार-प्रसार करूँगा/करूँगी। जय हिन्द''**

राजस्थान में शिक्षा का सफर, एक सोच एक संकल्प के साथ एक लघु फिल्म प्रदर्शित की गई। इस फिल्म के द्वारा शिक्षा में बदलते परिदृश्य को बेहतरीन तरीके से संजोया गया है। इसमें योजनाओं का आकार तथा शिक्षा में वर्तमान सरकार के प्रयासों एवं विकास की झलक प्रदर्शित की गई।

## विभिन्न संस्थाओं से गुणवत्तापूर्ण शिक्षा हेतु किए गए एम.ओ.यू.

**1. खान एकेडमी– Memorendom at Understanding with khan Academy and Tata Trust**

खान एकेडमी के श्री संदीप बाफना कन्ट्री मैनेजर इंडिया, टाटा ट्रस्ट के चीफ फाइनेंशियल ऑफिसर एवं राष्ट्रीय माध्यमिक शिक्षा परिषद की आयुक्त श्रीमती पूनम के मध्य त्रिपक्षीय MOU हस्ताक्षर कर किया गया। खान एकेडमी ई-कंटेट (ऑनलाइन), उच्च गुणवत्ता वाले वीडियो व लेख ऑनलाइन मिल सकेंगे। गणित व विज्ञान विषय का हिन्दी अनुवाद करके शैक्षणिक पोर्टल पर वर्कशीट मिलेगी।

**2. भारती फाउण्डेशन** के श्री विजय चड्डा एवं RMSA की आयुक्त श्रीमती पूनम ने हस्ताक्षर कर MOU किया। जोधपुर बाड़मेर जैसे दूरदराज के क्षेत्र में 'भारती' लर्निंग सेंटर स्थापित करेगा। जो छात्र ड्राप आउट होंगे उन्हें शिक्षा की मुख्य धारा में जोड़ा जाएगा। इन क्षेत्रों के पुस्तकालयों में पुस्तकें भी उपलब्ध होंगी। इससे राजस्थान की शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार होगा।

**3. आर.बी. ग्रुप** के प्रतिनिधि श्री रवि भटनागर एवं राष्ट्रीय माध्यमिक शिक्षा परिषद की आयुक्त श्रीमती पूनम के मध्य MOU हस्ताक्षर कराए गए। इस करार के तहत जयपुर, अजमेर, झालावाड़ व उदयपुर जिले के 3200 विद्यालयों में उक्त ग्रुप स्वास्थ्य योजना के तहत हाथ धोने का प्रबंध करेगी तथा स्वास्थ्य सम्बन्धी कार्य करेगी।

**4. सरकार और जेम्स एकेडमी के बीच एमओयू :** प्रदेश में शिक्षा के क्षेत्र में सुधार के लिए मुख्यमंत्री की अध्यक्षता में राज्य सरकार और जेम्स एकेडमी के बीच एक MOU हस्ताक्षर किया गया। जेम्स एकेडमी ग्रुप राज्य सरकार के साथ मिलकर शिक्षा के क्षेत्र में गुणवत्तापूर्ण परिवर्तन लाएगा। सरकार की ओर शिक्षा सचिव नरेशपाल गंगवार तथा जेम्स एकेडमी की ओर से ग्रुप अध्यक्ष अमरीश चंद्र ने MOU पर हस्ताक्षर किए। जेम्स एकेडमी ग्रुप प्रदेश के 50 आदर्श एवं उत्कृष्ट विद्यालयों को गोद लेकर इनमें कौशल विकास आधारभूत संरचना, शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार तथा क्षमता संवर्द्धन का कार्य करेगा।

जेम्स एकेडमी पाँच जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान (डाइट) और राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान उदयपुर को गोद लेगा साथ ही सामाजिक नियमित उत्तरदायित्व (सी.एस.आर.) मॉडल पर सर्वपल्ली राधाकृष्ण पुस्तकालय का उन्नयनीकरण करेगी। पिछले दिनों प्रदेश में शिक्षा के क्षेत्र में क्रान्तिकारी परिवर्तनों के फलस्वरूप विभिन्न उपसमूहों अधिकारियों, प्राचार्यों एवं शिक्षकों के साथ मिलकर राजस्थान को देश की इन्टेलेक्चुअल केपीटल (बौद्धिक सम्पदा) बनाने की दिशा में कार्य कर रहे हैं। इस अवसर पर जेम्स एजुकेशन के चेयरमेन श्री सन्नी वार्की, विधायक एवं प्रदेशाध्यक्ष (भाजपा) श्री अशोक परनामी, अतिरिक्त मुख्य सचिव राजहंस उपाध्याय एवं अन्य अधिकारी उपस्थित थे।

## शिक्षक दिवस की पूर्व संध्या पर सांस्कृतिक कार्यक्रम

**4 सितंबर 2016 को बिड़ला सभागार में सम्मानित होने वाले शिक्षकों के सम्मान में शिक्षक कलाकारों द्वारा सांस्कृतिक संध्या का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्री कालीचरण सराफ मंत्री उच्च, तकनीकी, संस्कृत शिक्षा थे तथा कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रो. वासुदेव देवनानी शिक्षा राज्य मंत्री स्वतंत्र प्रभार राजस्थान द्वारा की गई। राजस्थान के शिक्षक कलाकारों ने अत्यंत रोचक व शिक्षाप्रद कार्यक्रमों द्वारा 2:45 घण्टे अनवरत खचाखच भरे बिड़ला सभागार में दर्शकों को बाँधे रखा। इस कार्यक्रम का संचालन श्रीमती आभा द्विवेदी ने किया।**

## शिक्षक सम्मान प्रशस्ति पुस्तिका व शिविरा विशेषांक का विमोचन

सम्मानित शिक्षकों के द्वारा कराए गए कार्य एवं उनके जीवन परिचय को प्रशस्ति पुस्तिका में उल्लेखित किया गया है तथा इसी अवसर पर 'शिविरा विशेषांक' का प्रकाशन किया गया है। इस अवसर पर माननीय मुख्यमंत्री एवं अन्य अतिथियों द्वारा दोनों प्रकाशनों का विमोचन किया गया।

### शिक्षक सम्मान

माननीया मुख्यमंत्री श्रीमती वसुंधरा राजे द्वारा सम्मानित शिक्षकों को ताम्रपत्र, माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के अध्यक्ष द्वारा शॉल, माननीय उच्च शिक्षा मंत्री एवं शिक्षामंत्री द्वारा सम्मानित शिक्षकों को चैक प्रदान किए गए।

सम्मान कार्यक्रम अत्यंत गरिमामयी वातावरण में उत्साहवर्द्धक था। पूरे समय बिड़ला सभागार करतल ध्वनि से गुँजायमान रहा।

**शिक्षक छात्रों का जीवन संवारने वाला व दिशा देने वाला–शिक्षा राज्यमंत्री**

राज्यस्तरीय शिक्षक सम्मान के गौरवमयी कार्यक्रम में शिक्षा राज्यमंत्री प्रो. वासुदेव देवनानी ने उपस्थित जनसमूह के समक्ष कहा कि 'मां' जन्म देती है परन्तु बालक के जीवन को संवारने व सही दिशा देने का काम शिक्षक करता है। इसी अवसर पर 'शिक्षक' शब्द की व्याख्या

करते हुए कहा–

शि–शिखर तक पहुँचाने वाला
क्ष–क्षमा करने की क्षमता देने वाला
क–कमियों को दूर करने वाला

शिक्षामंत्री ने कहा ''शिक्षा विभाग बड़ा परिवार है जहाँ लगभग 70000 विद्यालय, 465000 अध्यापक व 85 लाख विद्यार्थी अध्ययनरत हैं। इतने बड़े परिवार की आवश्यकताएँ भी होती है। शिक्षा का समाज की आवश्यकतानुसार परिवर्धन भी करना होता है यह सब 'शैक्षिक टीम राजस्थान' से ही सम्भव हो पा रहा है और राजस्थान को देश के पहले पाँच राज्यों में खड़ा करने का संकल्प दोहराया।

शिक्षक दिवस के अवसर पर शिक्षकों को बधाई देते हुए कहा कि आज विद्यालय स्तर, खण्ड स्तर, जिला स्तर व संभाग स्तर शिक्षक सम्मानित होंगे। खण्ड स्तर पर 4, जिला स्तर पर 7 अध्यापक सम्मानित होंगे। गणेश चतुर्थी व शिक्षक दिवस एक ही दिन होने को संस्कारों का प्रतीक कहा। इस अवसर पर सम्मानित होने वाले शिक्षकों को शुभकामनाएँ प्रेषित की।

**मुख्यमंत्री का उद्‌बोधन**

शिक्षक सम्मान के अवसर पर सभी शिक्षकों को गणेश चतुर्थी एवं शिक्षक दिवस के पावन दिवस की बधाई देते हुए डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन् को नमन किया और कहा राधाकृष्णन् जी कहते थे ''पहले मैं शिक्षक हूँ और इस पर गर्व है कि मैं शिक्षक हूँ।'' अपने शिक्षामंत्री जी के लिए कहा कि वह भी इसी रास्ते पर चलने का प्रयास कर रहे हैं। शिक्षामंत्री व पूरे शिक्षकों को बधाई देते हुए कहा कि भावी पीढ़ी का निर्माण, कल का राजस्थान, गौरव की ऊँचाई छू रहा है। सभी लोग इसका लोहा मानते हैं। यह सब शिक्षक के परिश्रम व लगन के कारण सम्भव हुआ है। मुख्यमंत्री ने अपने जीवन का संस्मरण सुनाया कि उनके बालपन में गणित समझ नहीं आता था। अन्तिम दो वर्ष में एक अध्यापक उनके जीवन में आए, उन्होंने जादू किया, उनके दिमाग के ताले खोल दिए ऐसे अध्यापक को वह भूल नहीं पाएगी। शिक्षकों को कहा कि बालक को चुनौतियाँ स्वीकारने के लिए तैयार करें वह उनका सामना करने के लिए तैयार हो सके। कम्प्यूटर के क्षेत्र में इमरान की तारीफ करते हुए कहा कि 465000 अध्यापकों में से एक नहीं बल्कि कई इमरान जैसे शिक्षक होने चाहिए। मुख्यमंत्री ने कहा कि जनता गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, अच्छी सड़क, बिजली, पानी, रोजगार व अच्छी चिकित्सा चाहती है। इसलिए अच्छी एवं गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के लिए एकीकृत विद्यालय खोले गए जहाँ कक्षा 1 से 12 तक बालक एवं साथ अध्ययन करें। मुख्यमंत्री ने शिक्षकों की तारीफ करते हुए कहा कि इसके अच्छे सकारात्मक परिणाम देखने को मिले हैं। इससे 15 लाख विद्यार्थियों का नामांकन बढ़ा हैं तथा माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान के परीक्षा परिणाम में भी उत्साहजनक वृद्धि हुई है। इसी कारण मुख्यमंत्री ने कहा–'शिक्षा एक ऐसा शास्त्र है जो सारी कठिनाइयों का निवारण करता है।'

इस अवसर पर मुख्यमंत्री के भाव शिक्षकों के लिए सजीव व निर्जीव, चर व अचर, इस जगत में जो कुछ भी है उसका ज्ञान कराने वाला शिक्षक ही है। जो ज्ञान शक्ति सम्पन्न है, तत्वमाला से विभूषित है जो मुक्ति प्रदाता है उस गुरु को प्रणाम करती हूँ। ऐसे भाव थे माननीया मुख्यमंत्री के।

मुख्यमंत्री ने कहा कि स्वामी विवेकानन्द विद्यालय सीबीएससी पैटर्न पर खोले हैं। प्रतिभाओं को पर्याप्त अवसर दे रहे हैं जो प्रतिभा खुले आसमान में पंख लगाकर जितना ऊँची उड़ान भरना चाहती है उसके अवसर राज्य सरकार देगी, जो छात्र–छात्रा सपना देखते हैं उनको अवसर मिलेगा।

अनेक नवाचार किए हैं जैसे शाला दर्पण, शाला दर्शन, ई–ज्ञान पोर्टल, स्मार्ट कक्षाएँ इससे पिछड़े क्षेत्र जैसे अन्ता, बाँरा, डूंगरपुर, प्रतापगढ़ को सीधे अमेरिका से जोड़ दें तो छात्र अपने होंसलों की उड़ान भर सकेगा इस हेतु एम.ओ.यू. किए हैं।

मुख्यमंत्री ने सभी को सम्बोधित करते हुए शिक्षकों की कमी के कारण स्कूलों पर हो रही तालाबंदी को ठीक नहीं बताया और कहा कि 2017 तक शिक्षकों की कमी नहीं रहेगी।

मुख्यमंत्री ने कहा–''तालाबंदी बन्द हो, समस्या का समाधान करें, प्रभारी मंत्री, सचिव सरकारी स्कूल में औचक निरीक्षण करें। विधायक स्कूलप्रधान से मिलकर समस्या का समाधान करें क्योंकि राजस्थान शिक्षा के क्षेत्र में दूसरे राज्यों के लिए मॉडल बन गया है। 'बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ' का नारा दिया तथा बेटों के साथ बेटियों को आगे बढ़ा कर राजस्थान में उन्नति व खुशहाली लाओ।''

इस अवसर पर मुख्यमंत्री ने पुनः शिक्षकों को शुभकामनाएँ दीं।

## शिक्षा विभाग की उपलब्धियाँ

- स्कूलों का एकीकरण और क्रमोन्नयन करने वाला देश का पहला राज्य बना। शिक्षा के क्षेत्र में गत 60 सालों में जो नहीं हुआ वह गत दो वर्षों में सम्पन्न हुआ।
- 5 हजार माध्यमिक विद्यालयों को उच्च माध्यमिक विद्यालयों में क्रमोन्नत किया गया है। अब पंचायत स्तर पर 9 हजार 895 आदर्श उच्च माध्यमिक विद्यालयों में पहली से 12 वीं तक की शिक्षा एक ही स्कूल में मिल रही है।
- 9 हजार 610 उत्कृष्ट विद्यालयों में कक्षा 1 से 8 तक की पढ़ाई एक ही स्कूल में हो रही है।
- पिछड़ी पंचायत समितियों में स्वामी विवेकानन्द राजकीय मॉडल स्कूलों की स्थापना की गई है। सीबीएसई पैटर्न के इन विद्यालयों में अच्छी प्रयोगशालाएँ, अच्छे क्लास रूम्स और खेल मैदान हैं।
- विद्यालयों एवं शिक्षकों की समस्त सूचनाएँ पहली बार शाला दर्पण एवं शाला दर्शन पोर्टल के जरिए ऑनलाइन हुई है।
- कक्षा 6 से 12 तक की 28 हजार बालिकाओं को निशुल्क आवास, शिक्षा, भोजन एवं दैनिक सामग्री की सुविधा उपलब्ध कराई जा रही है।
- 83 हजार शिक्षकों की पदोन्नतियाँ एक रिकॉर्ड है। पहली बार प्राचार्यों के लिए 5 हजार नये पद सृजित किए गए हैं।
- शिक्षकों के रिक्त पद 60 प्रतिशत से घटकर 25 प्रतिशत रह गए।
- नये स्टाफिंग पैटर्न से दूर–दराज के विद्यालयों में शिक्षक उपलब्ध हुए हैं। इन सुधारों का परिणाम हैं कि कक्षा 10 का रिजल्ट 66 प्रतिशत से बढ़कर 73 प्रतिशत और कक्षा 12 का 78 प्रतिशत से बढ़कर 88 प्रतिशत हो गया है।

**अतिथियों को हस्तनिर्मित कलाकृति भेंट :** तरुण राज पांचाल, कला शिक्षक गुरुनानक भवन संस्थान, जयपुर ने मुख्यमंत्री व अन्य सात अतिथियों को स्वयं के द्वारा निर्मित डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन् की कलाकृति भेंट की। इस प्रकार विनय त्रिवेदी व्याख्याता ने भगवान गणेश का सुन्दर चित्र मुख्यमंत्री को स्मृति चिह्न के रूप में भेंट किया।

**धन्यवाद ज्ञापन**

राज्यस्तर शिक्षक सम्मान समारोह के अवसर पर माननीया मुख्यमंत्री, शिक्षामंत्री, उच्च शिक्षामंत्री, अधिकारी गण, सम्मानित शिक्षक, सभागार में उपस्थित एवं प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष सहयोग करने वालों को धन्यवाद ज्ञापन माध्यमिक शिक्षा निदेशक बी.एल. स्वर्णकार ने किया।

कार्यक्रम का संचालन डॉ. ज्योति जोशी एवं डॉ. सुभाष कौशिक ने किया।

अन्त में राष्ट्र गान 'जन गण मन' गायन के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

## डिजिटल लर्निंग सोल्यूशन रूम के लोकार्पण पर किया संवाद

झालाना डूंगरी स्थित राजस्थान पाठ्य पुस्तक मण्डल परिसर में सोमवार को 12 डिजिटल लर्निंग सोल्यूशन रूम (डीएलएसआर) का लोकार्पण किया गया। मुख्यमंत्री ने कनेक्टेड लर्निंग सेटअप के माध्यम से इन संस्थानों से जुड़कर वहाँ के शिक्षकों, सरकारी स्कूली विद्यार्थियों, जनप्रतिनिधियों तथा अधिकारियों से बातचीत की। इस दौरान मुख्यमंत्री ने सभी से सवाल किए और बच्चों के पूछे गए सवालों के जवाब भी दिए। 'सिस्को' कंपनी के सहयोग से ये डीएलएसआर. अजमेर, जयपुर, उदयपुर, जोधपुर, कोटा, झालावाड़, बारां, पाली, बीकानेर, भरतपुर, चूरू एवं गोनेर में स्थापित किए गए हैं।

### पॉलिटिशियन बनना चाहती हूँ

मुख्यमंत्री ने 'कनेक्टेड लर्निंग सेटअप' के जरिए प्रदेश के सरकारी स्कूलों में पढ़ने वाले दूरदराज के गाँवों के बालक-बालिकाओं से पूछा कि ''वे क्या बनना चाहेंगे?'' इस पर कई छात्राओं ने कहा कि ''वे डॉक्टर, इंजीनियर, जज, आईएएस बनना चाहती हैं।'' एक छात्रा ने कहा कि ''मैं आपकी तरह पॉलिटिशियन बनना चाहती हूँ।''

### खेलकूद में लें हिस्सा

मुख्यमंत्री ने छात्राओं से ट्रांसपोर्ट बाउचर और साइकिल वितरण की सुविधाओं के बारे में पूछा तथा विधायकों और सांसदों से भी बातचीत की। उन्होंने बालिका शिक्षा पर ध्यान देने तथा लैंगिक समानता पर जोर देते हुए छात्राओं से खेलकूद और शारीरिक गतिविधियों में हिस्सा लेने की बात भी कही।

## सम्मानित शिक्षकों की सूची

1 **जसवन्त सिंह,** शारीरिक शिक्षक, राउमावि, राजगढ़, चूरू
2 **शिवशंकर व्यास,** व्याख्याता, राउमावि, नागौर
3 **रामलाल जाट,** व्याख्याता, राउमावि, तुलसीरामपुरा, सीकर
4 **डॉ. जयश्री भार्गव,** प्रधानाचार्य, राउमावि. हरसोली, जयपुर
5 **अरुणा बैंस,** प्रधानाचार्य, राउमावि, खारीचारणान, बीकानेर
6 **मामराज सिंह शेखावत,** व्याख्याता, राउमावि, विराटनगर, जयपुर
7 **छगनलाल व्यास,** प्रधानाचार्य, राउमावि सरवड़ी चारणान बाड़मेर
8 **मंगलचन्द कुमावत,** व्याख्याता, राउमावि, रींगस सीकर
9 **डॉ. गिरिजेश शर्मा,** प्रधानाचार्या, एस.एस. जैन सुबोध बाउमावि, जयपुर
10 **कैलाश कुमार,** व.शा.शि., राउमावि, समेजा, श्रीगंगानगर
11 **सुनील कुमार पण्ड्या,** व.अ., रा.आ.उमावि, करावाड़ा, डूंगरपुर
12 **रामराय मीणा,** व्याख्याता, राउमावि, शाहपुरा, भीलवाड़ा
13 **मंगलेश कुमार शर्मा,** व्याख्याता, राउमावि, केसरियावाद, प्रतापगढ़
14 **वेद प्रकाश आदित्य,** प्रधानाचार्य, राउमावि, नोरंगपुरा, झुंझुनूं
15 **बसन्त कान्त शर्मा,** अध्यापक, राउमावि, कलिंजरा, बांसवाड़ा
16 **उगम सिंह तंवर,** व्याख्याता, राआउमावि, रामदेवरा, जैसलमेर
17 **अजीज अहमद शेख,** प्रधानाचार्य, राउमावि, महाड़ी, उदयपुर
18 **लीला चतुर्वेदी,** प्रधानाचार्य, राउमावि, माताजी की पाण्डोली, चित्तौड़गढ़
19 **पुष्पा देवी मंगल,** व.अ., राआउमावि, महू इब्राहिमपुर, करौली
20 **रामावतार अरुण,** प्रधानाचार्य, स्वामी विवेकानन्द रा. मॉडल स्कूल, बानसूर, अलवर
21 **डूंगरराम सुथार,** प्रधानाचार्य, राउमावि, शिकारपुरा, जोधपुर
22 **राजेन्द्र कुमार शर्मा,** प्रधानाचार्य, राउमावि, काली पहाड़ी, दौसा
23 **स्नेहलता पारीक,** व्याख्याता, राबाउमावि, फॉयसागर रोड, अजमेर
24 **पुरुषोत्तम लाल सुयन,** व्याख्याता, राआउमावि, भिलवाड़ी, झालावाड़
25 **बजरंग लाल जेठू,** प्रधानाचार्य, राउमावि, सुनारी (लाडनू) नागौर
26 **पवन कुमार शर्मा,** वरिष्ठ अध्यापक, राउप्रावि, विजयनगर, भरतपुर
27 **विनोद कुमार जोशी,** शा.शि., राउप्रावि, उदैया, गलियाकोट, डूंगरपुर
28 **नारायण सिंह तंवर,** अध्यापक, राप्रावि, पोकरपुरा, सांकड़ा, जैसलमेर
29 **सतीश कुमार गुप्ता,** प्रधानाध्यापक, रा.प्र.सं.वि., नारायणपुर, अलवर
30 **कामनाथ शर्मा,** प्राध्यापक, रावउ. संस्कृत विद्यालय, सामोद, जयपुर
31 **फूलाराम,** वरिष्ठ अध्यापक, रावउ. संस्कृत विद्यालय, खाटूश्यामजी
32 **संत कुमार शर्मा,** शा.शि. ग्रेड ।।, रावउ. संस्कृत विद्यालय, मूण्डरू
33 **ओमप्रकाश शर्मा,** अध्यापक, रा.प्र.सं.वि., फतेहपुर शेखावाटी, सीकर
34 **उदयभान सिंघल,** अध्यापक, रा.प्रा.सं.वि.सिरोड़ खुर्द मुण्डावर, अलवर
35 **मोहम्मद इमरान खान,** मेवाती अध्यापक, रावउ.सं.वि., अलवर
36 **श्री शक्तिसिंह गोड,** शा.शि. रामावि, लोहागल, अजमेर
37 **सुभाषचन्द शर्मा,** उपनिदेशक, माध्यमिक शिक्षा, कोटा सम्भाग, कोटा
38 **दिनेश कुमार गुप्ता,** ए.डी.पी.सी., रमसा, सवाईमाधोपुर
39 **कृष्ण कुमार विश्नोई,** प्रधानाचार्य, राउमावि, काकड़ा, बीकानेर
40 **दीपचन्द,** प्रधानाचार्य, स्वामी विवेकानन्द रा. मॉडल वि. देरोल, सिरोही
41 **सरूपाराम माली,** अध्यापक, राआउमावि सरतरा, सिरोही

प्रधानाचार्य,
शहीद अमित भारद्वाज राजकीय उ.मा.वि., माणक चौक, जयपुर,
**मो. 9414466463** ई-मेल : gsssmanakchowk@gmail.com

## दीपावली पर्व विशेष

# तमसो मा ज्योतिर्गमय

❒ मधुबाला शर्मा

भारतीय संस्कृति व्यक्ति तथा समाज को सुसंस्कृत बनाने वाली संस्कृति है। उसके प्रत्येक सिद्धांत, आदर्श एवं विधि-विधान की रचना इसी दृष्टि से हुई है कि उसका प्रभाव जनमानस को ऊँचा उठाने एवं परिष्कृत बनाने के लिए उपयोगी सिद्ध हो।

जनजीवन को सत्प्रवृत्तियों से भर देना त्योहारों और पर्वों का मूल उद्देश्य है। त्योहार आदि का विधान वैसे संसार की सभी जातियों और देशों में पाया जाता है।

कार्तिक माह के अमावस्या को हिन्दुओं का प्रमुख त्योहार 'दीपावली' मनाया जाता है। प्राचीनकाल में यह मुख्यरूप से फसल तैयार होने की खुशी में मनाया जाता था और इसका नाम 'शारदीय नव सस्येष्टि' था। जिसका अर्थ है- 'नये अन्न या फसल के लिए यज्ञ।' भारतवर्ष में मनाए जाने वाले सभी त्योहारों में दीपावली का सामाजिक, धार्मिक तथा आध्यात्मिक दृष्टि से अत्यधिक महत्त्व है। इस दिन अयोध्या के राजा श्रीरामचन्द्र अपने चौदह वर्षों के वनवास के पश्चात् अयोध्या लौटे थे। अध्योध्यावासियों का हृदय अपने परम प्रिय राजा के आगमन से उल्लसित था। श्रीराम के स्वागत में अयोध्यावासियों ने घी के दीपक जलाए। कार्तिक मास की सघन काली अमावस्या की वह रात्रि दीपकों की रोशनी से जगमगा उठी। तब से आज तक भारतीय प्रति वर्ष यह प्रकाश पर्व हर्ष व उल्लास से मनाते हैं। यह पर्व अधिकाँशतः अक्टूबर या नवम्बर माह में आता है। वैसे तो विजयादशमी के बाद से ही इस त्योहार की तैयारियाँ शुरू हो जाती हैं। वर्षाकाल में जल की अधिकता से घरों में और नगरों के वातावरण में जो विकृति आ जाती है और उसके लिए विशेष से स्वच्छता की व्यवस्था करना भी इस त्योहार का एक उद्देश्य है। इसलिए दीपावली से कई दिन पहले साफ-सफाई का कार्य प्रारम्भ हो जाता है।

दीपावली एक दिन का नहीं अपितु पर्वों का समूह है। दीपावली से दो दिन पूर्व कार्तिक कृष्ण त्रयोदशी अर्थात् धन त्रयोदशी का त्योहार आता है। साधारण भाषा में इसे 'धनतेरस' भी कहा जाता है। इस दिन बाजारों में चारों तरफ जनसमूह उमड़ पड़ता है। बर्तनों की दुकानों पर विशेष रूप से साज-सज्जा एवं भीड़ दिखाई देती है। धनतेरस के दिन बर्तन खरीदना शुभ माना जाता है, अतएव प्रत्येक परिवार अपनी-अपनी आवश्यकता एवं सामर्थ्यानुसार कुछ न कुछ खरीददारी करता है। इस दिन तुलसी या घर के द्वार पर एक दीपक जलाया जाता है। व्यापारी वर्ग अपनी तिजोरी का पूजन करते हैं। आयुर्वेद की दृष्टि से यह दिन 'धन्वन्तरि जयन्ती' का है। वैद्य लोग इस दिन देवताओं के वैद्य धन्वन्तरि जी का पूजन करते हैं। हित् भुक्, मित् भुक् और ऋत् भुक् का संदेश देता यह पर्व सभी को आरोग्य प्राप्ति के लिए अग्रसर करता है।

धन त्रयोदशी के अगले दिन 'नरक चतुर्दशी' अथवा छोटी दीपावली होती है। इसे रूप चतुर्दशी भी कहा जाता है। श्रीमद् भागवतपुराण में ऐसी एक कथा है कि नरकासुर का अन्त कर कृष्ण ने सभी राजकुमारियों को मुक्त किया था। मरते समय नरकासुर ने कृष्ण से यह वर माँगा कि आज के दिन मंगल स्नान करने वाला नरक की पीड़ा से बच जाए। कृष्ण ने उसे तदनुसार वर दिया। इस कारण कार्तिक कृष्ण चतुर्दशी को नरक चतुर्दशी के नाम से मानने लगे। इस दिन लोग सूर्योदय से पूर्व अभ्यंग स्नान करने जाते हैं। इसके पश्चात् तीसरा दिन कार्तिक अमावस्या का होता है। यह प्रमुख दिन होता है। इस दिन घरों में सुबह से ही तरह-तरह के पकवान बनाए जाते हैं। बाजारों में खील-बताशे, मिठाइयाँ, चीनी के खिलौने, लक्ष्मी-गणेश आदि की मूर्तियाँ बिकने लगती हैं। स्थान-स्थान पर आतिशबाजी और पटाखों की दुकानें सजी होती हैं। सुबह से ही लोग रिश्तेदारों, मित्रों, सगे-सम्बन्धियों के घर मिठाइयाँ एवं उपहार बाँटने लगते हैं। दीपावली की शाम महालक्ष्मी और प्रथम पूज्य गणेश की पूजा की जाती है। पूजा के बाद लोग अपने-अपने घरों के बाहर दीपक और मोमबत्तियाँ जलाकर रखते हैं। चारों ओर चमकते दीपक अत्यंत सुन्दर दिखाई देते हैं। बच्चे और प्रत्येक आयु वर्ग के लोग तरह-तरह के पटाखों व आतिशबाजियों का आनन्द लेते हैं। देर रात तक कार्तिक की अंधेरी रात पूर्णिमा से भी अधिक प्रकाशयुक्त दिखाई पड़ती है। इस रात्रि को जागरण का भी विधान है। पुराणों में कहा गया है कि कार्तिक अमावस्या की रात लक्ष्मी सर्वत्र संचार करती है व अपने निवास के लिए योग्य स्थान ढूँढ़ने लगती है। जहाँ स्वच्छता, शोभा व रसिकता दिखती है, वे वहीं आकर्षित होती हैं। जिस घर में चारित्रिक, कर्त्तव्यपरायण, संयमी, धर्मनिष्ठ, क्षमाशील लोग रहते हैं, माँ लक्ष्मी को उस घर में वास करना बहुत अच्छा लगता है।

दीपोत्सव का चतुर्थ दिन गोवर्धन पूजा के रूप में मनाया जाता है। ऐसा माना जाता है कि इसी दिन भगवान कृष्ण ने गोवर्धन पर्वत को अंगुली पर उठाकर इन्द्र के कोप से डूबते ब्रजवासियों को बचाया था। इस दिन लोग अपनी गायों को, बैलों को सजाते हैं। गोबर का गोवर्धन बनाकर उसकी पूजा करते हैं।

अगले दिन 'भैया दूज' का पर्व होता है। इसे 'यम द्वितीया' भी कहा जाता है। यह भाई और बहिन के स्नेह को प्रकट करने वाला त्योहार है। इस दिन यमराज अपनी बहिन यमुना के घर भोजन करने जाते हैं और उस दिन नरक में सड़ रहे जीवों को मुक्त करते हैं। ऐसा माना जाता है कि इस दिन किसी भी पुरुष को अपने घर पर या अपनी पत्नी के हाथ का अन्न नहीं खाना चाहिए। इस दिन उसे अपनी बहिन के घर यथा-योग्य सामग्री लेकर जाना चाहिए तथा उसके घर भोजन करना चाहिए। भैया-दूज मुख्यतः नारियों का त्योहार है, जो उनको लोकोपकार, जन-सेवा के कार्यों के लिए प्रेरित करता है।

इसके अतिरिक्त दीपावली से जुड़े अनेक तथ्य हैं, जो इतिहास के पन्नों में अपना विशेष स्थान बना चुके हैं। यह भी कथा प्रचलित है कि जब श्रीकृष्ण ने आततायी नरकासुर जैसे दुष्ट का वध किया तब ब्रजवासियों ने अपनी प्रसन्नता

दीपों को जलाकर प्रकट की।

इसी संदर्भ में एक ऐसी भी कथा आती है कि महाप्रतापी तथा दानवीर राजा बलि ने अपने बाहुबल से तीनों लोकों पर विजय प्राप्त कर ली, तब बलि से भयभीत देवताओं की प्रार्थना पर भगवान विष्णु ने वामन रूप धारण कर प्रतापी राजा बलि से तीन पग पृथ्वी दान के रूप में माँगी। महा प्रतापी राजा बलि ने भगवान विष्णु की योजना को समझते हुए याचक को निराश नहीं किया और तीन पग पृथ्वी दान में दे दी। विष्णु ने तीन पग में तीनों लोकों को नाप लिया। राजा बलि की दानशीलता से प्रभावित होकर विष्णु ने उन्हें पाताल लोक का राज्य दे दिया, साथ ही यह भी आश्वासन दिया कि उनकी याद में भूलोकवासी उनको याद किया करते हैं।

इसके अलावा गौतम बुद्ध के समर्थकों और अनुयायियों ने 2500 वर्ष पूर्व गौतम बुद्ध के स्वागत में हजारों दीप जलाकर दीपावली मनाई थी। सम्राट विक्रमादित्य का राज्याभिषेक भी दीपावली के दिन हुआ था। इसलिए उस दिन दीप जलाकर खुशियाँ मनाई गई थी।

अमृतसर के स्वर्ण-मंदिर का निर्माण भी दीपावली के दिन ही शुरू हुआ था। पंजाब में जन्मे स्वामी रामतीर्थ का जन्म व महाप्रयाण दोनों दीपावली के दिन ही हुआ। इन्होंने दीपावली के दिन गंगातट पर स्नान करते हुए 'ओम्' कहते हुए समाधि ले ली थी।

इस प्रकार दीपोत्सव त्रेता युग से आज तक किसी न किसी रूप में लगातार मनाया जा रहा है। किन्तु दीपोत्सव मनाने की सार्थकता तभी है, जब मानव के अन्तर्मन में संवेदनाओं, सद्भावनाओं के दीप जल उठें। दीया और बाती दोनों एक दूसरे के पूरक हैं। स्वयं निरन्तर जलते रहकर दूसरों को राह दिखाना इसकी विशेषता है।

वास्तविकता तो यही है कि दीपों की सार्थकता अप्रतिम है-प्रत्यक्ष व परोक्ष दोनों रूपों में। स्नेह रूपी घृत या तेल से भरा दीपक द्वैत और अद्वैत के मिलन का भी द्योतक है। यह प्रतीक है अपनी माटी, धरा पूजन का अर्थात् पहले अपनी मिट्टी को उसके वास्तविक रूप में स्वीकार किया जाए, पंचतत्वों को पहचाना जाए, फिर उसे प्रकाशित कर नमन किया जाए।

विशेष बात यह है कि इस वर्ष दीपावली में हमें दीया जलाने पर लौ के तरलता रूपी जीवन मूल्यों की निष्ठुरता का त्यागकर, सब श्वासों की श्वास में बसे अद्वैत को अंगीकार कर, आत्मज्योति दीप्त कर दीपावली का आरंभ करना होगा। इस बार दीपों की मालिका कुछ अनूठी अवश्य होनी चाहिए। शिक्षा का दीप, मानवता का दीप, प्रेम का दीप, भाईचारे व स्नेह के घृत में डूबी चेतना की बात, उसका स्वयं जलकर दूसरे को आलोकित करना, सभी कुछ इस वर्ष सार्थक हो सकते हैं। तभी महात्मा बुद्ध का 'अप्प दीपो भव' चरितार्थ हो सकता है। हम सभी मिलकर इतने दीए जलाएँ, इतने दीए जलाएँ कि अन्तर्मन, घर, आँगन, गली, चौबारे, गाँव, देश और दुनिया में कहीं अंधेरा न रह जाए। हो तो सिर्फ उजियारा, दीपों की उजास। चहुँ ओर गूँज सुनाई दे इस वेदवाणी की-''तमसो मा ज्योतिर्गमय''।

रा.उ.मा. विद्यालय
मोरखाणा, नोखा
**मो. 9414452701**

## इस माह का गीत

# जय-जय भारत माता

**जय-जय भारत माता!**
**तेरा बाहर भी घर जैसा रहा प्यार ही पाता!!**

**ऊँचा हिया हिमालय तेरा, उसमें कितना दर्द भरा,**
**फिर भी आग दबाकर अपनी, रखता है वह हमें हरा,**
**सौ स्रोतों से फूट-फूट कर, पानी बहता जाता!**
**जय-जय भारत माता।।1।।**

**कमल खिले तेरे पानी में, धरती पर है आम फले,**
**इस धानी आँचल में आहा, कितने देश-विदेश पले,**
**भाई-भाई लड़े भले ही, टूट सका क्या नाता?**
**जय-जय भारत माता।।2।।**

**तेरी लाल दिशा में ही माँ, चन्द्र-सूर्य चिरकाल उगें,**
**तेरे आँगन में मोती ही, हिल मिल तेरे हंस चुगें,**
**दुःख घट जाता, सुख बढ़ जाता, जब है वह बँट जाता!**
**जय-जय भारत माता।।3।।**

**हम सब तेरे प्यारे बच्चे, बन्धन में बहु बार पड़े,**
**किन्तु मुक्ति के लिए बता माँ, कहाँ न जूझे कब न लड़े,**
**मरण शान्ति की दाता है तू जीवन क्रान्ति विधाता!**
**जय-जय भारत माता।।4।।**

(साभार 'सरल समूहगान' से)

संकलनकर्त्ता-**महावीर प्रसाद आसोपा**
अध्यापक
रा.बा.मा.वि. झाड़ेली, जायल, नागौर
**मो. 9461022277**

## गाँधी जयन्ती

# बहुआयामी प्रतिभा के धनी : महात्मा गाँधी

❒ सांवलाराम नामा

विश्व के महान् राजनीतिज्ञ, शिक्षाशास्त्री, समाजशास्त्री, अर्थशास्त्री, मानवतावाद के पोषक, गरीबों के मसीहा, भारत के राष्ट्रपिता और सहस्राब्दी महापुरुष महात्मा गाँधी भारत के स्वाधीनता आन्दोलन के सूत्रधार थे। कहा जाता है कि महात्मा गाँधी भारतीय राजनीति में मसीहा की भाँति सन् 1919 में उभरे और फिर 1947 में स्वाधीनता मिलने तक भारतीय राजनीति में छाए रहे। इसीलिए भारत के इतिहास में सन् 1919 से 1947 तक का समय गाँधी युग कहलाता है। 'सत्य का साथी रहा, झूठ से लड़ता रहा।'

गाँधी जी दक्षिण अफ्रीका में अंग्रेजों के विरुद्ध जंग लड़कर भारतीयों को उनके वाजिब अधिकार दिलाने में सफल हो चुके थे। उन्होंने दक्षिण अफ्रीका में ही अपने 'सत्याग्रह' के अहिंसक अस्त्र का आविष्कार कर लिया था जो सत्य और अहिंसा की राजनीति पर आधारित था। महात्मा गाँधी के पूर्व का स्वाधीनता आन्दोलन मुख्यतः नेताओं का आंदोलन था, वह जन-आंदोलन नहीं बन पाया। महात्मा गाँधी ने भारत के स्वाधीनता आंदोलन को शहरों की सीमाओं से आगे बढ़कर गाँवों की जनता को जागृत करने के लिए पहुँचा दिया। इस प्रकार वह जन-जन का आंदोलन बन गया।

भारत के स्वाधीनता आंदोलन का गाँवों तक का विस्तार कर जन-आन्दोलन बनाने हेतु गाँधी जी ने भारत की जनता के हितों की रक्षा के लिए न केवल अंग्रेजों के विरुद्ध अहिंसात्मक संघर्ष प्रारम्भ किया अपितु अनेक संस्थाओं की स्थापना कर भारत के जनमानस की आर्थिक, सामाजिक, धार्मिक और राजनीतिक दशा व दिशा सुधारने का अभिनव सद्प्रयास किया।

सर्वप्रथम गाँधी जी ने सन् 1915 में अहमदाबाद के 'साबरमती आश्रम' की स्थापना कर अछूत दूधाभाई और उसकी दुधमुँही बच्ची को उसमें प्रवेश देकर अस्पृश्यता के खिलाफ संघर्ष शुरू किया। सन् 1918 में हिन्दी साहित्य सम्मेलन के सभापति के रूप में दक्षिण भारत में हिन्दी प्रचार-प्रसार की योजना बनाई एवं

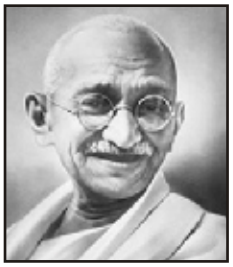

शिक्षकों के प्रथम दल के साथ अपने पुत्र देवदास को हिन्दी के प्रचारार्थ दक्षिण भारत भेजा। इतना ही नहीं स्वयं अहिन्दी भाषी होते हुए भी उन्होंने हिन्दी भाषियों से हिन्दी में पत्र-व्यवहार प्रारम्भ किया और सार्वजनिक सभाओं तथा कांग्रेस की परिषदों में हिन्दी पर जोर दिया। इस प्रकार गाँधीजी ने हिन्दी को विशुद्ध साहित्य के घेरे से बाहर निकालकर राजनीतिक मंच की भाषा बना दिया। इससे हिन्दी जन-जन की भाषा और आशा बन गई और राष्ट्रीय एकता स्थापित करने का प्रखर, प्रबल माध्यम बन गई। सन् 1942 को गाँधी जी ने लिखा- ''अंग्रेजों तुम चले जाओ। भारत को ईश्वर के हाथों में छोड़ दो। होने दो अराजकता, डकैतियाँ और गृहयुद्ध। जो आज झूठा भारत देख रहे हैं, उसके स्थान पर एक सच्चा भारत जन्म लेगा।''

महात्मा गाँधी जी एक संत राजनीतिज्ञ थे। भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के सैनिक के रूप में उनकी बराबरी कोई नहीं कर सकता। उन्होंने देश के स्वाधीनता के आंदोलन को एक हिन्दू धर्म सुधारक, एक समाज सुधारक, एक सच्चा शिक्षा शास्त्री, एक मानवतावादी और एक राष्ट्रवादी विभूति के रूप में लड़ा। उनका उद्देश्य यही था कि हिन्दू धर्म की कट्टरता और अंधविश्वास दूर हो, देश जातिवाद, छुआछूत, भाषा विवाद के सभी भेदभाव मिटाकर समाजवादी समाज के निर्माण में सफल हो तथा उनमें प्रजातंत्र के साथ-साथ व्यक्तिगत तथा राष्ट्रीय स्वतंत्रता की विशुद्ध भावना का उदय हो। राष्ट्र के नव निर्माण में चौबीसों कौम आपस में मिलजुल कर कार्य करें। भारत की चहुँ दिशाओं में राष्ट्र भक्ति की भावना हिलोरे लेवे। निर्भय, निर्भीक होने के साथ सबका कल्याण करें। मानव जीवन में सुख-शांति, अमन चैन बना रहे। अहिंसा परमो धर्म अपनाएं।

अहिंसा का पालन मनुष्य को नई साहसिकता से भर देता है। गाँधी जी लोगों में इसी साहस व निडरता की शक्ति का पूर्ण उत्कर्ष पाते हैं। तभी तो महान वैज्ञानिक आइंस्टाइन ने गाँधीजी को एक पत्र लिखा था- ''अपने कार्यों से आपने यह दिखा दिया है कि अहिंसा के बल पर उन लोगों को भी जीता जा सकता है जो हिंसा का तरीका अख्तियार करते हैं।'' गाँधी जी ने अहिंसा के माध्यम व सत्य को ईश्वर का स्थान दिया था। निसंदेह वर्तमान में हम अहिंसा के जिस स्वरूप से परिचित हैं वह गाँधीजी की अनमोल देन है। गाँधीजी ने आम स्त्री की पीड़ा को समझकर आजादी के आन्दोलनों में उसे जोड़कर घर से बाहर निकलने का एक अवसर दिया और उसका यह कदम बहुत बड़ा कारण बन गया। उनके आंदोलनों की सफलता का।

महात्मा गाँधीजी जैसा अद्वितीय और बहुआयामी महापुरुष शताब्दियों में कभी जन्म लेता है। इसीलिए विश्व विख्यात वैज्ञानिक आइंस्टीन ने उनके बारे में कहा कि ''आनेवाली पीढ़ियों को विश्वास नहीं होगा कि हाड़-माँस का ऐसा विलक्षण व्यक्ति सदेह रूप से कभी इस धरती पर रहता था।'' तभी तो महात्मा गाँधी के शताब्दी वर्ष के समय 24 दिसंबर 1969 को भारतीय संसद ने उनकी स्मृति में एक प्रस्ताव पारित करते हुए लिखा-''यह सदन महात्मा गाँधी जी को शताब्दी वर्ष अवसर पर अपनी आदरपूर्ण श्रद्धांजलि, राष्ट्रपिता के प्रति अर्पित करता है, जिन्होंने अहिंसात्मक साधनों से देश को स्वतंत्रता दिलाई, जिन्होंने जनता में एक नवीन स्फूर्ति फूँक दी, जिन्होंने करोड़ों पीड़ित और पददलित लोगों को ऊपर उठाया। जिन्होंने इस कलहपूर्ण संसार को विश्व भ्रातृत्व और 'मानववाद' का संदेश दिया।

पाकिस्तान ने भी महात्मा गाँधी जी के प्रति आभार व्यक्त किया। विश्व विभूति महात्मा गाँधी जी राष्ट्रपिता को शत-शत नमन...।

सदर बाजार रोड,
निकट बड़ा चौराहा, भीनमाल-343029

## शास्त्री जयन्ती विशेष

# शास्त्रीजी : एक पुण्य स्मरण

❐ गोमाराम जीनगर

अपने देश भारत के लिए 2 अक्टूबर का दिन अत्यन्त महत्त्वपूर्ण दिन है क्योंकि इस दिन भारतीय आकाश क्षितिज में दो देदीप्यमान नक्षत्रों का उदय हुआ था । जिनमें से एक नक्षत्र मुगलसराय (उत्तरप्रदेश) नामक शहर में मुंशी शारदाप्रसाद श्रीवास्तव के घर उनकी सहधर्मिणी रामदुलारी की कोख से उत्पन्न हुआ, जो बड़ा होकर पूरे देश का 'लाल' कहलाया और देश के द्वितीय प्रधानमंत्री लालबहादुर शास्त्री के रूप में जिन्होंने भारत के स्वाभिमान की रक्षा मात्र ही नहीं की बल्कि देश का गौरव भी बढ़ाया।

बचपन में सभी का दुलारा 'नन्हे' नाम से पुकारा जाने वाले बालक के सिर से पिता का साया जन्म से मात्र 18 माह पश्चात ही उठ जाने के कारण नाना हजारीलाल के घर मिर्जापुर में पालन पोषण हुआ। इसी दौरान नाना की मृत्यु का एक और वज्राघात हुआ। कहते हैं कि ईश्वर एक मार्ग बन्द करता है तो कोई दूसरा मार्ग अवश्य ही खोलता है । ऐसा ही इस बालक के साथ हुआ। ननिहाल में मौसा जी रघुनाथ प्रसाद के सहयोग से प्राथमिक शिक्षा के पश्चात काशी विद्यापीठ से हाईस्कूल उत्तीर्ण करने एवं 'शास्त्री' की उपाधि मिलने के फलस्वरूप श्रीवास्तव के स्थान पर शास्त्री शब्द का उपयोग कर इस शब्द को मूलनाम लालबहादुर का पर्याय ही बना डाला। उनका विद्यार्थी जीवन बहुत ही प्रेरणादायी है। कागज, स्याही व समय की बचत के प्रयोजन से वे छोटे-छोटे व सुंदर अक्षर धैर्यपूर्वक लिखते थे, साथ ही पैसों के अभाव में पढ़ने के लिए नाव में न जाकर उन्हें नदी तैर कर पार करनी पड़ती थी ।

कहा है -'जो लाक्षागृह में जलते हैं, वे ही सूरमा निकलते हैं' इसी अनुरूप उनका जीवन भी भारी कष्ट व अभावग्रस्त होने के कारण वे गरीब और गरीबी दोनों से परिचित थे । संस्कृत में स्नातक पश्चात भारत सेवक संघ से जुड़कर उन्होंने देशसेवा का व्रत लेकर सारा जीवन सादगीपूर्ण व गरीबों की सेवा में बिताने का

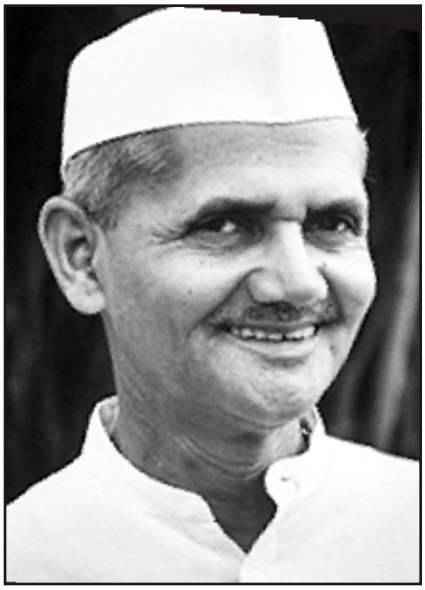

निश्चय किया । स्वतंत्रता आंदोलन के ज्वार में नेताजी के 'आजाद हिन्द फौज' को 'दिल्ली चलो' और गाँधी जी के 'करो या मरो' के आह्वान की तर्ज पर 9 अगस्त 1942 के दिन इलाहाबाद पहुँचकर 'मरो नहीं मारो' का नारा देकर क्रांति का शंखनाद कर दिया, फलस्वरूप 19 अगस्त 1942 के दिन ब्रिटिश सेना ने उन्हें गिरफ्तार कर लिया। समाजसेवा, ईमानदारी, निस्वार्थता, उत्साह, समर्पण व सहृदयी भाव के फलस्वरूप न केवल उन्होंने केन्द्रीय मंत्रीमंडल में स्थान बनाया अपितु सादगीपूर्ण जीवन, कर्मठता, कथनी करनी की एकरुपता एवं देशसेवा के गुणों के कारण नेहरुजी के निधन के पश्चात प्रधानमंत्री जैसा गुरुत्तर दायित्व भी उन्हें सौंपा गया ।

इस कार्यकाल के दौरान 1965 में पाकिस्तान द्वारा युद्ध थोपने की स्थिति में उन्होंने कुशल नेतृत्व के कारण सिद्ध कर दिखाया कि-

'राष्ट्रभक्ति ले हृदय में हो खड़ा यदि देश सारा।
संकटों पर मात कर यह राष्ट्र विजयी हो हमारा।।'

आपात बैठक में सेनाधिकारियों के ''सर क्या हुकम है?'' का एक वाक्य में तपाक से उत्तर दिया ''आप देश की रक्षा कीजिये और मुझे बताइये कि हमें क्या करना है?'' इस प्रकार जनता के मनोबल को बढाते हुए आत्म निर्भर बनाने हेतु 'जय जवान जय किसान' का उत्साहवर्द्धक नारा देकर प्राण फूंक दिए।

उन्होंने 'यथा राजा तथा प्रजा' बात को भी चरितार्थ किया। अमेरिका द्वारा भारत को गेहूँ उपलब्ध न कराने की धमकी का प्रत्युत्तर अद्‌भुत व अकल्पनीय कृतित्व से दिया। उन्होंने देश की जनता से सप्ताह में एक दिन उपवास रखने का आह्वान किया। जनता ने उनके समर्पणभाव और देश भक्ति से प्रभावित होकर भारत के उस लाल का इतना मान रखा कि उन दिनों घरों में ही भोजन की छुट्टी नहीं रही बल्कि होटल/भोजनालय भी एक दिन बन्द रहने लगे । इस प्रकार आत्मनिर्भरता व स्वाभिमानपूर्वक जीवन जीने की प्रेरणा हमें दी। वे मात्र जनप्रिय ही नहीं थे अपितु जनता भी उनके लिए प्रिय थी । इसका एक उदाहरण इस प्रकार है- प्रधानमंत्री लाल बहादुर शास्त्री ने बिहार के कुछ लोगों को प्रधानमंत्री आवास पर मिलने का समय दिया किन्तु उसी समय विदेशी अतिथियों के सम्मान में आयोजित समारोह में उन्हें जाना पड़ा । अत: बिहार से आए बंधु प्रतीक्षा करके चले गए। कुछ ही देर बाद शास्त्री जी प्रधानमंत्री आवास में लौट आए। आते ही उन्होंने अपने सचिव से बिहार के उन लोगों के विषय में पूछा जो उनसे मिलने आने वाले थे । जब उन्हें बताया कि वे चले गये तो शास्त्री जी को बहुत दु:ख हुआ । पता लगाने पर कि वे अभी तक बस अड्डे तक ही पहुँचे होंगे, शास्त्री जी जो देश के प्रधानमंत्री थे, पैदल ही, बस स्टॉप की ओर भाग चले ।

सचिव ने कहा ''हम उन्हें यहीं बुला लेते है।'' पर शास्त्री जी ने कहा, ''नहीं दोष मेरा है, मैंने जब समय दिया तो मुझे उनसे मिलना ही चाहिए।''

सचिव ने कहा-''लेकिन मान्यवर, आप प्रधानमंत्री है और आपके इस प्रकार उन लोगों से बस स्टॉप पर ..... ।'' सचिव पूरी बात कह नहीं पाये कि शास्त्री जी बोल पड़े-''भाई मैं

इस घड़ी प्रधानमंत्री हूँ, इससे पहले नहीं था और सम्भवत: आगे भी नहीं रहूँ, लेकिन मैं मनुष्य तो जन्म से हूँ। पहले मुझे मनुष्य धर्म निभाना पड़ेगा।'' और शास्त्री जी लोगों से मिलने पैदल ही चल पड़े तथा उन लोगों को पुन: प्रधानमंत्री निवास लाकर खूब बातें की। ऐसा था अपने प्रधानमंत्री का प्रेम, विनयशीलता और व्यवहार।

प्रधानमंत्रीत्वकाल में भी उन्होंने पद का स्वार्थवश न व्यक्तिगत जीवन मे दुरुपयोग किया और न ही परिजनों को भी करने दिया। एक शुचितापूर्ण निस्पृह सिद्ध पुरुष की तरह था उनका सम्पूर्ण जीवन। एक प्रसंग उनके जीवन का विचारणीय है- लालबहादुर शास्त्रीजी जब प्रधानमंत्री बने, उस समय उनका बड़ा बेटा हरिकृष्ण अशोक लेलैण्ड कम्पनी में कार्य कर रहा था तथा शास्त्रीजी प्रधानमंत्री बनने के बाद तुरन्त उस कम्पनी ने हरिकृष्ण को पदोन्नति (प्रमोशन) देकर सीनियर जनरल मैनेजर का पद दे दिया। इस पदोन्नति के बारे में हरिकृष्ण ने कभी सोचा भी नहीं था।

एक दिन सुबह अल्पाहार करते समय हरिकृष्ण ने इस पदोन्नति के बारे में पिताजी को कहा। यह सुनते ही शास्त्री जी थोड़ा गम्भीर हो गए तथा उन्होंने कहा कि ''यह प्रमोशन तुम्हारा कार्य देखकर नहीं, बल्कि मेरे प्रधानमंत्री होने की वजह से हुआ है। आगे कुछ समय में अशोका लेलैण्ड कम्पनी में कुछ काम हो और वे मेरे पास आएँगे-अगर मैंने न्यायसंगत भी सहायता की तो भी लोग क्या सोचेंगे? तथा तुम्हारे साथ कम्पनी में काम करने वाले लोग भी इस बारे में क्या सोचेंगे?'' हरिकृष्ण ने शास्त्री जी से कुछ भी नहीं कहा। उनकी जो प्रमोशन की खुशी थी, वह पूरी तरह समाप्त हो गई। फिर शास्त्री जी ने कहा कि ''हरिकृष्ण, तुम उस कम्पनी को अभी अपना त्यागपत्र भिजवा दो और जब तक मैं प्रधानमंत्री हूँ, तब तक उस कम्पनी में काम नहीं करना।'' हरिकृष्ण ने उसी दिन कम्पनी को अपना त्यागपत्र भेज दिया। आज इस प्रकार के उदाहरण दुर्लभ भले ही हो परन्तु अति आवश्यक है।

1965 के युद्ध में भारतीय नेतृत्व की प्रेरणा व प्रोत्साहन से भारतीय सेना अद्‌भुत शौर्य का परिचय देते हुए बरकी गाँव के समीप नहर को पार करने में सफलता अर्जित कर लाहौर हवाई अड्डे पर हमला करने की हद में पहुँच गई। परिणामस्वरूप इस अप्रत्याशित घटना से भयभीत होकर लाहौर से अपने नागरिकों को सुरक्षित निकालने के लिए अमेरिका ने युद्ध विराम की भारत से अपील की।

आखिरकार रूस और अमेरिका की मध्यस्थता के साथ रूस की राजधानी ताशकन्द में 11 जनवरी 1966 के दिन पाकिस्तान के जीते हुए भाग उसे वापस लौटाने की शर्त से असमहमत होने के बावजूद अन्तरराष्ट्रीय दबाव में पाकिस्तान के राष्ट्रपति याकूब खाँ के साथ समझौते पर यह कहते हुए हस्ताक्षर किए कि ''वे हस्ताक्षर जरूर कर रहे हैं पर यह जमीन कोई दूसरा प्रधानमंत्री ही लौटाएगा, वे नहीं।''

नियति को यही मन्जूर था कि इस दिन की रात उनके जीवन की ऐसी रात बन गई जिसका कभी प्रभात नहीं आया। दुर्भाग्यवश देश को अपूर्णीय क्षति झेलनी पड़ी। समूचा देश 12 जनवरी 1966 को शोक मग्न था, सभी की आँखें नम थीं। आज उनके जन्मदिन के अवसर पर समूचा देश माँ भारती के लाल का श्रद्धापूर्वक पुण्य स्मरण करता है, शत शत वंदन करता है। आइये, हम सभी आज उनके गुणों को अपने जीवन में अपनाकर भारत को परम वैभवशाली व स्वाभिमानी राष्ट्र के रूप में विश्व में खड़ा करने में अपनी आहुति देने का संकल्प लें। यही उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

**सहायक निदेशक (शिविरा)**
**माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर**
**मो. 9413658894**

---

# 'बा' से पूछ लो

❐ सत्यनारायण शर्मा

स्वतंत्रता संग्राम के दिनों में बापू भारत-भ्रमण कर रहे थे। आंदोलन का संदेश देते हुए इसी दौरान बापू मद्रास पहुँचे तो वहाँ का व्यवस्थापक बापू की दिनचर्या को लेकर चिंतित था। वह बार-बार बापू को पूछने आ जाता था- बापू चाय कब लेंगे, बापू आप स्नान कब करेंगे, पानी गरम लेंगे या ठंडा? बापू धैर्यपूर्वक इन प्रश्नों का उत्तर दे देते थे। परंतु अन्य लोगों से बात करने में बार-बार के इस व्यवधान से परेशान होकर अबकी बार बापू ने कहा, 'ये सब बाते तुम 'बा' से ही पूछ लो।

अब व्यवस्थापक परेशान। 'बा' कौन है, कहाँ है 'बा'। अपने एक साथी से पूछा तो उसने इशारा करके बता दिया कि दूर वह महिला बैठी है ना, वो है 'बा'। कब क्या करना है ये सारी बातें तुम उन्हीं से पूछ लो।

जिज्ञासावश व्यवस्थापक ने फिर पूछा 'बा' का मतलब क्या होता है। तो बताया गया कि 'बा' का अर्थ होता है 'माँ'। व्यवस्थापक भी समझ गया कि गुजराती भाषा में 'माँ' को 'बा' कहते हैं। उसका काम फिर सरल हो गया।

मिटिंग का आयोजन हुआ तो वह व्यवस्थापक (संयोजक) बहुत उत्साहित था। भूमिका बनाते हुए उसने कार्यक्रम का प्रारंभ किया। आज हमारे लिए गौरव की बात है कि हमारे प्रिय, आदरणीय महात्मा गाँधीजी हमारे बीच आए हैं और उससे अधिक खुशी की बात है ये है कि उनकी माँ भी उनके साथ आई हैं। संयोजक के इतना कहते ही सभा में हलचल मच गई। सक्रिय कार्यकर्ता भागे।

संयोजक को रोका, टोका। कि अरे गलत बोल गया तू। सुधार अपनी बात को। ये गाँधीजी की माँ नहीं है, उनकी पत्नी है। लेकिन मुझे तो 'बा' का अर्थ 'माँ' बताया गया है। व्यवस्थापक ने कहा।

गाँधीजी वहीं बैठे हुए ये सब कुछ सुन रहे थे। उन्होंने जोर से बोलकर कहा, ''अरे रोको मत उसे उसने भूल से सही बात कह दी है। वास्तव में यह मेरी माँ ही है। बाद में स्पष्टीकरण देते हुए बापू ने बताया कि कुछ समय पूर्व अहिंसा, सत्य, अस्तेय और अपरिग्रह के साथ ब्रह्मचर्य का व्रत भी मैंने लिया था।

एक बार हम वाराणसी गये थे तो पंडित बुलाकर हमने विवाह के सात फेरों को पलटकर उल्टे सात फेरे ले लिए थे।

तब से यह 'बा' है अर्थात मेरी माँ ही है।

मनीषा साड़ी सेन्टर
एम.डी.वी कॉलोनी, बीकानेर-334004
**मो. 9413278960**

जन्म दिवस विशेष

# डॉ. अब्दुल कलाम : व्यक्तित्व एवं कृतित्व

❒ अजीत कुमार मोदी

डॉ. कलाम का जन्म 15 अक्टूबर 1931 को एक मुस्लिम परिवार में तमिलनाडु के रामेश्वरम् जिले के धनुषकोड़ी गाँव में हुआ। डॉ. अब्दुल कलाम का पूरा नाम अब्दुल पाकिर जैनुल आब्दीन अब्दुल कलाम था, जिन्हें 'मिसाइल मैन' के नाम से भी प्रसिद्धि मिली।

डॉ. कलाम के पिता जैनुल आब्दीन मछुआरों को नावें किराए पर देकर उस आय से परिवार का भरण-पोषण करते थे। कलाम के पाँच भाई और पाँच बहनें थी। डॉ. अब्दुल कलाम ने पाँच वर्ष की आयु में प्राथमिक विद्यालय से अपनी शिक्षा प्रारंभ की। प्राथमिक शाला के शिक्षक इया दुराई सोलोमन ने शाला की कक्षा में पढ़ाते समय उनसे कहा था कि- **''जीवन में सफलता और अनुकूल परिणाम प्राप्ति के लिए दृढ़ इच्छाशक्ति, कार्य के प्रति पूर्ण आस्था और अपेक्षा हो तो हमें अपने जीवन में आगे बढ़ने से कोई रोक नहीं सकता।''**

डॉ. कलाम संयुक्त परिवार में रहते थे। संयुक्त परिवारों में बड़े खर्चों की आवश्यकता रहती है। बड़े परिवार व अधिक खर्चों के कारण कलाम ने प्राथमिक शिक्षा कठिनाइयों के साथ पूर्ण की। आपने अपने जीवन में बहुत संघर्ष किया। अपनी प्राथमिक शिक्षा को निरन्तर जारी करने के लिए आपने प्रातः अखबार बेचने का कार्य किया। डॉ. कलाम के पैर उस समय जमीन पर अवश्य थे, परन्तु उनके सपने नील गगन से ऊँचे थे। डॉ. कलाम का व्यक्तित्व एक तपस्वी के समान था। आपका सम्पूर्ण जीवन लगन और कड़ी मेहनत की मिसाल था।

डॉ. कलाम का व्यक्तिगत जीवन अनुशासन प्रिय था। आप आजीवन अविवाहित रहे। आपके मन में सभी धर्मग्रन्थों के प्रति आदर भाव था। आप कुरान और भगवद्गीता दोनों का अध्ययन करते थे। आपको संगीत सुनने का बहुत शौक था।

डॉ. कलाम ने 1958 ई. में मद्रास इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी से अन्तरिक्ष विज्ञान में स्नातक की उपाधि प्राप्त की। तत्पश्चात् इन्होंने हावर क्राफ्ट परियोजना पर काम करने के लिए भारतीय रक्षा अनुसंधान एवं विकास संस्थान में दाखिला ले लिया।

**डॉ. अबुल पाकीर जैनुलआबद्दीन अब्दुल कलाम**

| | |
|---|---|
| जन्म स्थान | : धनुषकोडी, रामेश्वरम |
| माता | : अशिमा जैनुलआबद्दीन |
| पिता | : जैनुलआबद्दीन मरकयार |
| डीआरडीओ में मुख्य वैज्ञानिक | : 1960 |
| इसरो में स्थानान्तरण | : 1969 |
| प्रधानमंत्री के मुख्य वैज्ञानिक सलाहकार | : 1992-99 |
| भारत के राष्ट्रपति | : 2002-2007 |

पहले राष्ट्रपति जिन्होंने सुखोई विमान उड़ाया और सियाचिन भी गए।

**जन्म :** 15 अक्टूबर, 1931 ✧ **निधन :** 27 जुलाई, 2015

**आखिरी ट्वीट :**

शिलांग जा रहा हूँ। लिवेबल प्लेनेट अर्थ पर आईआईएम में कार्यक्रम में भाग लेने।

**-ए.पी.जे. अब्दुल कलाम**

डॉ. कलाम 1962 ई. में भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन से जुड़ गए। यहाँ इन्होंने अनेक उपग्रह प्रक्षेपण परियोजनाओं पर कार्य किया। इन परियोजनाओं पर कार्य करते हुए आपने परियोजना निदेशक के पद को भी सुशोभित किया। आपने भारत का पहला स्वदेशी उपग्रह प्रक्षेपण यान एस.एल.वी. 3 का निर्माण किया तथा जुलाई 1982 में रोहिणी उपग्रह को सफलतापूर्वक अन्तरिक्ष में प्रक्षेपित किया।

डॉ. कलाम जुलाई 1992 से दिसम्बर 1999 तक रक्षामंत्री के विज्ञान सलाहकार तथा सुरक्षा शोध और विकास विभाग के सचिव रहे। भारत में परमाणु हथियारों के निर्माण की क्षमताओं में वृद्धि की। नब्बे के दशक में आपने भारत के परमाणु परीक्षण कार्यक्रम 'ऑपरेशन स्माइलिंग बुद्धा' में अपनी महती भूमिका अदा की। इसके बाद ही डॉ. कलाम को 'मिसाइल मैन' के नाम से पुकारा जाने लगा। आपकी उपलब्धियों और राष्ट्र के प्रति योगदान के लिए ही आपको 1981 ई. में पद्मभूषण व 2007 ई. में भारत रत्न से सम्मानित किया गया।

डॉ. अब्दुल कलाम सन् 2002 से 2007 तक देश के ग्यारहवें राष्ट्रपति रहे। सन् 1999 में डॉ. कलाम की आत्मकथा 'विंग्स ऑफ फायर' ने अत्यधिक लोकप्रियता प्राप्त की, चूँकि इस पुस्तक को इन्होंने स्वयं के जीवन-संघर्ष के दिनों को याद करते हुए लिखा था। यह पुस्तक युवाओं के उज्ज्वल भविष्य हेतु ऊर्जावान बनाने के लिए लिखी गई।

जीवन-संग्राम में बाधाएँ तो सभी के समक्ष उपस्थित होती हैं, परन्तु आप इन बाधाओं-मुश्किलों को लांघकर सदा गतिशील बने रहें। महानायक बनने के लिए बड़े सपने देखना आवश्यक हैं। जो अपनी श्रम-साधना को पूर्ण कर लेते हैं, उनके सपने साकार होते हैं। जन-जन के प्रिय राष्ट्रपति कलाम शिलांग में आई.आई.एम. संस्थान के छात्रों को 'जीवन योग्य ग्रहों' पर व्याख्यान देते-देते अचानक बेहोश होकर गिर पड़े और हृदयाघात के कारण 27 जुलाई 2015 को भारतवर्ष को सदा-सदा के लिए अलविदा कह गए। 84 वर्षीय डॉ. अब्दुल कलाम अपने अन्तिम समय में भी देश के लिए समर्पित थे। भारतवर्ष के ऐसे सच्चे सपूत को हमारा कोटि-कोटि नमन।

व्याख्याता
राजकीय चौपड़ा उ.मा.विद्यालय
गंगाशहर, बीकानेर (राज.)
**मो. 9828543001**

## कर्मयोगी इंजीनियर

# भारत रत्न डॉ. विश्वेश्वरैया

❒ रूपनारायण काबरा

अपने अथक परिश्रम के बल पर कोई व्यक्ति कैसे अपने राष्ट्र के लिए महान कार्य कर सकता है इसका सबसे सुन्दर उदाहरण 'भारत रत्न' डॉ. विश्वेश्वरैया हैं। उनका व्यक्तित्व, जीवन और उनके कार्य अत्यन्त प्रेरणादायक हैं।

उनका जन्म 15 सितम्बर 1861 को बंगलौर से 38 मील दूर सोने की खानों के लिए प्रसिद्ध कोलार जिले के छोटे से गाँव मदन हल्ली में हुआ था। इनके पिता श्रीनिवास शास्त्री का परिवार अत्यंत निर्धन था इसलिये पढ़ने में काफी कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। उनको शाला पहुँचने में प्रायः नित्य ही देर होती थी। वह नवीं कक्षा का विद्यार्थी था पर कुछ लापरवाही, आलस्य और समय की अनियमितता से शीघ्रता में कभी कोई पुस्तक अथवा कॉपी ही भूल जाता था।

माता-पिता ने बालकों के चाचा के सामने समस्या रखी तो चाचा ने तुरंत अपनी कलाई से घड़ी उतारी। बालक की कलाई पर बाँधते हुए बोले-''यह है तुम्हारे रोग की दवा। याद रखो बेटा यदि अपने व्यक्तित्व को किसी महानता के साँचे में ढालना है, तो समय की नियमितता सबसे प्रमुख है।'' बालक की दिनचर्या उसी दिन से नियमित होती गई। 19 वर्ष की उम्र में बंगलौर के सेंट्रल कॉलेज से बी.ए. पास किया। उनकी प्रतिभा और परिश्रम ने महाविद्यालय के आचार्यों और प्रिन्सिपल को इतना प्रभावित कर दिया कि उन्होंने विश्वेश्वरैया को पुणे के विज्ञान महाविद्यालय में प्रवेश दिलाकर छात्रवृत्ति भी दिलवा दी। यहाँ उनके अध्ययन का विषय यंत्र शास्त्र यानी मैकेनिकल इंजीनियरिंग था। वे परीक्षा में प्रथम श्रेणी से उत्तीर्ण हुए और 1884 में असिस्टेंट इंजीनियर के पद नासिक में अत्यंत परिश्रम और ईमानदारी से काम किया और उनकी प्रतिभा से बड़े-बड़े अंग्रेज इंजीनियरों को आश्चर्य हुआ, वे दंग रह गये। बड़े नगरों में जल कहाँ से किस प्रकार लाया जाए, कहाँ इकट्ठा किया जाय, कैसे घरों तक

पहुँचाया। यह सब सोचना और कर पाना सरल काम नहीं था। सिंध उस समय बंबई प्रांत का ही भाग था और उसमें रेगिस्तानी भाग अधिक होने के कारण जल की घोर समस्या थी। इस समस्या को हल करने का कार्य डॉ. विश्वेश्वरैया को सौंपा गया। प्रसिद्ध सक्खर बाँध का निर्माण करके वाटरवर्क्स, नल और नाली व्यवस्था करके सबको चौंका दिया। बंगलौर, मैसूर, कराची, बड़ौदा, ग्वालियर, इन्दौर, कोल्हापुर, सूरत, नासिक, बीजापुर, धारवाड़ आदि नगरों में उन्होंने पानी एवं नालियों की व्यवस्था की। 1906 में उन्होंने अदन जाकर वहाँ की जल-वितरण व्यवस्था के लिए वाटर वर्क्स तथा निष्कासन नालियाँ बनाई।

इन कार्यों ने उनको देश का महान इंजीनियर बना दिया। उनकी इस महान सफलता से और पदोन्नति से उनके साथी इंजीनियर्स उनसे ईर्ष्या करने लगे। तब 47 वर्ष की उम्र में ही अपने पद से त्यागपत्र देकर वे यूरोप चले गए लेकिन कुछ समय बाद ही हैदराबाद के निजाम के आग्रह पर वे लौट आए और निजाम के राज्य में आई मुझी नदी की बाढ़ को नियंत्रित करके बाढ़ की समस्या को स्थायी रूप से सुलझा दिया। इसके बाद मैसूर के महाराजा कृष्णराज के निमंत्रण पर 1909 में वहाँ राज्य के मुख्य अभियंता का पद स्वीकार कर लिया। अपने कार्यकाल में उन्होंने मैसूर राज्य की काया पलट दी। कावेरी नदी पर कृष्ण राज सागर बाँध का निर्माण कर सिंचाई के लिए जल तथा उद्योग धंधों के लिए बिजली की व्यवस्था कर दी। इस बाँध के निर्माण से देश आश्चर्य चकित हो गया क्योंकि इस समय तक भारत में जलशक्ति से विद्युत उत्पादन का कार्य प्रारंभ ही नहीं हुआ था।

इस प्रकार डॉ. विश्वेश्वरैया ने अपने देश के लिए महान कार्य किए। उन्होंने जितना कार्य किया उतना शायद एक सौ इंजीनियर मिलकर भी न कर सकें। 15 से भी अधिक विश्वविद्यालयों ने उन्हें सम्मानार्थ उपाधियों से विभूषित किया। ब्रिटिश सरकार ने 'सर' की उपाधि दी और भारत के राष्ट्रपति ने उन्हें 'भारत रत्न' से अलंकृत किया। वास्तव में डॉ. विश्वेश्वरैया भारत में पढ़ने वाले इंजीनियरिंग के सभी छात्रों के लिए सदैव प्रेरणास्रोत बने रहेंगे।

ए-438, किशोर कुटीर
वैशाली नगर, जयपुर-302021

### सूचना

शिविरा की सदस्यता हेतु जो ग्राहक ई.एम.ओ. के माध्यम से शुल्क भिजवाते है उनसे आग्रह है कि वे अपना पूर्ण पता (पिन कोड व मोबाइल नम्बर सहित) लिख कर ई.एम.ओ. रसीद की छाया प्रति संलग्न कर वरिष्ठ संपादक के नाम एक पत्र अवश्य भेजें। इस कार्यालय को प्राप्त होने वाली ई.एम.ओ. की रसीद में पूर्ण पता अंकित नहीं होने के कारण पत्रिका प्रेषण/प्राप्ति में असुविधा होती है। सभी ग्राहक ध्यान दें। **-वरिष्ठ संपादक**

### भूल सुधार

सितम्बर-2016 के अंक के पृष्ठ सं. 118 पर 'उडीक' के अंत में व्याख्याता के साथ 'सेठ किशनलाल कांकरिया रा.उ.मा.वि. नागौर' भी सुधी पाठकगण सुधार कर पढ़ें। **-वरिष्ठ संपादक**

# आदेश-परिपत्र : अक्टूबर, 2016

**● 1. शिक्षा विभागीय (राज्य स्तरीय) मंत्रालयिक एवं चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी पुरस्कार एवं सम्मान समारोह-2016 ● 2. विद्यार्थियों/कर्मियों को स्वच्छ पेयजल की उपलब्धता। ● 3. शिविरा पत्रिका (मासिक) हेतु अपने अधीनस्थ विद्यालयों की संख्यानुसार समेकित वार्षिक अंशदान मय विद्यालय सूची भिजवाने बाबत। ● 4. राज्य बीमा एवं प्रा.नि. विभाग द्वारा जारी किए जाने वाले भुगतान अधिकार-पत्रों का डीडीओ द्वारा पे-मैनेजर पर ऑनलाइन पारित हेतु प्रक्रिया। ● 5. अनुदानित एवं गैर अनुदानित शिक्षण संस्थाओं के लिए विद्यार्थी सुरक्षा दुर्घटना बीमा योजना। ● 6. समस्त राजकीय विद्यालयों में कार्यरत शिक्षक/कार्मिकों का विवरण मय फोटो प्रदर्शित किए जाने तथा विद्यार्थियों के छवि अवलोकन हेतु विद्यालय परिसर में दर्पण की व्यवस्था किए जाने बाबत। ● 7. प्रत्येक राजकीय माध्यमिक/उच्च माध्यमिक विद्यालय में इंटरनेट/ब्रॉड-बैण्ड कनेक्टविटी एवं कम्प्यूटर प्रिन्टर की उपलब्धता सुनिश्चित किए जाने के सम्बन्ध में। ● 8. मेधावी छात्र-छात्राओं को छात्रवृत्ति स्वीकृत किए जाने के संबंध में आवेदन आमंत्रित। ● 9. विद्यमान अधिकारी/कर्मचारियों की नियमित पदोन्नति के फलस्वरूप वेतन निर्धारण के सम्बन्ध में। ● 10. दिनांक : 01.10.2016 से विद्यालय समय संचालन परिवर्तन के सम्बन्ध में । ● 11. भारत सरकार की ई-मेल नीति के अनुसार सरकारी पत्राचार हेतु भारत सरकार की कार्यान्वयन एजेंसी द्वारा प्रदान की जाने वाली ई-मेल सेवाओं का इस्तेमाल किए जाने बाबत।**

## 1. शिक्षा विभागीय (राज्य स्तरीय) मंत्रालयिक एवं चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी पुरस्कार एवं सम्मान समारोह-2016

● कार्यालय निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर ● क्रमांक : शिविरा-माध्य/साप्र/बी-2/4399 (49)(13)/2016 दिनांक 12.8.2016 ● उप निदेशक (माध्यमिक/प्रारंभिक) शिक्षा विभाग बीकानेर/जयपुर/अजमेर/कोटा/जोधपुर/उदयपुर/पाली/भरतपुर/चूरू ● समस्त जिला शिक्षा आधिकारी (माध्यमिक/माध्यमिक-प्रथम/द्वितीय) प्रारंभिक शिक्षा विभाग ● विषय : शिक्षा विभागीय (राज्य स्तरीय) मंत्रालयिक एवं चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी पुरस्कार एवं सम्मान समारोह-2016

शिक्षा विभाग द्वारा अपने मंत्रालयिक कर्मचारी एवं चतुर्थ श्रेणी कर्मचारियों, जिन्होंने उत्कृष्ट कार्य कर विभाग की प्रतिष्ठा बढ़ाई है को प्रतिवर्ष राज्य स्तर पर पुरस्कृत एवं सम्मानित किया जाता रहा है, इस सम्बन्ध में इस कार्यालय के आदेश क्रमांक : शिविरा-माध्य/साप्र/बी-2/4399 (49) (12)/2015 दिनांक 16.11.2015 के द्वारा सम्मान समारोह की तिथि 16 दिसम्बर निर्धारित कर दी गई है तद्नुसार वर्ष 2016 का आयोजन दिनांक 16 दिसम्बर, 2016 को विभागीय मुख्यालय बीकानेर में किया जाना सुनिश्चित किया गया है।

विभाग में उत्कृष्ट एवं प्रशंसनीय कार्य करने वाले कर्मचारियों को पुरस्कृत एवं सम्मानित किए जाने बाबत उसके चयन के प्रस्ताव अनिवार्यतः निदेशालय को उपलब्ध कराने का दायित्व आपका है।

1. इस योजना में शिक्षा विभाग में कार्यरत कर्मचारी ही सम्मिलित होंगे जो अधीनस्थ मंत्रालयिक एवं चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी नियमों के अन्तर्गत वर्णित पद नाम के हैं तथा संस्थापन अधिकारी, प्रशासनिक अधिकारी, कार्यालय अधीक्षक कम सहायक प्रशासनिक अधिकारी, सहायक कार्यालय अधीक्षक, लिपिक ग्रेड-।, लिपिक ग्रेड-।।, वाहन चालक, जमादार, सहायक कर्मचारी एवं समकक्ष, निजी सचिव, अतिरिक्त निजी सचिव, निजी सहायक, आशुलिपिक इत्यादि। कुल 38 कार्मिकों को राज्य स्तरीय मेरिट बनाकर तदनुसार सम्मानित किया जाएगा।

2. जिले में संचालित समस्त विद्यालयों, कार्यालयों एवं विशिष्ट संस्थानों में कार्यस्त सहा.कर्म. संवर्ग/मंत्रालयिक संवर्ग/निजी सहायक संवर्ग/वाहन चालक संवर्ग में न्यूनतम 15 वर्ष की शिक्षा विभागीय सेवाएं पूर्ण कर चुके उत्कृष्ट कार्य वाले कार्मिकों के प्रस्ताव स्वयं संस्था प्रधान द्वारा प्रस्तावित किए जाकर गोपनीय स्तर पर तीन प्रतियों में संबंधित जिला शिक्षा अधिकारी (माध्यमिक/प्रारंभिक) को दिनांक 25.10.2016 तक भिजवाया जाना सुनिश्चित करेंगे। इस हेतु परिशिष्ट-1(क), (ख-।), (ख-।।), ग, घ, संलग्न हैं।

3. संबंधित जिला शिक्षा अधिकारी उक्त प्राप्त प्रस्तावों में प्रमाण-पत्र मय आवश्यक अनुशंसा सहित प्रस्ताव तीन प्रतियों में जिला शिक्षा अधिकारी (माध्यमिक/माध्यमिक-प्रथम) स्तर पर गठित कमेटी के समक्ष गोपनीय रूप से दिनांक 07.11.2016 तक प्रस्तुत करेंगे।

प्रपत्र की पूर्तियां संबंधित संस्था प्रधान/जिला शिक्षा अधिकारी द्वारा कार्मिक के रिकार्ड, व्यक्तिगत पंजिका, सेवा पुस्तिका तथा वार्षिक कार्य मूल्यांकन आदि स्रोतों से की जावें। इसके साथ ही सभी सूचनाएं, प्रशंसा प्रमाण-पत्रों, शैक्षिक एवं तकनीकी शिक्षा आदि की प्रमाणित फोटो प्रतियाँ तथा प्रकाशित पुस्तक, लेख साहित्य इत्यादि की पुष्टि के अभिलेख संलग्न किए जावें। वार्षिक कार्य मूल्यांकन प्रतिवेदन उपलब्ध नहीं होने की स्थिति में संबंधित वर्ष का संतोषजनक सेवा प्रमाण-पत्र संलग्न किया जावे।

4. कार्मिक से किसी भी प्रकार का प्रपत्र नहीं भरवाया जावे। अनुशंसा नितान्त निष्पक्ष एवं न्यायोचित होनी चाहिए इसमें पूर्णतया गोपनीयता बरती जावे।

5. अब तक राज्य स्तर पर पुरस्कृत समस्त कार्यरत कार्मिकों एवं भविष्य में पुरस्कृत कार्मिकों की सेवा पुस्तिका में उक्त पुरस्कार का इन्द्राज संस्था प्रधान/नियंत्रण अधिकारी द्वारा अनिवार्य रूप से स्वतः किया जावें। पूर्व वर्षों में पुरस्कृत कार्मिक जो कि वर्तमान में सेवा में है, की सेवा पुस्तिका में इन्द्राज किया जाना सुनिश्चित करावें। पुरस्कृत कार्मिकों को अपना राज्य स्तरीय प्रमाण-पत्र सम्बन्धित संस्था प्रधान/नियंत्रण अधिकारी को प्रस्तुत करना अनिवार्य होगा।

6. (i) जिले में संचालित विद्यालयों एवं कार्यालयों से प्राप्त प्रस्तावों का जिला स्तर पर चयन हेतु निम्नानुसार कमेटी का गठन किया जाता है। यह कमेटी संबंधित अधिकारियों से प्राप्त प्रस्तावों पर संलग्न सूक्ष्म अंक योजना के आधार पर कार्मिकों का चयन कर मेरिट के आधार पर न्यूनतम 10 अनिवार्य रूप से प्रस्ताव संबंधित उप निदेशक (माध्यमिक) को गोपनीय रूप से दिनांक 16.11.2016 तक भिजवाया जाना सुनिश्चित

करेंगी।

| | | |
|---|---|---|
| 1. | जिला शिक्षा अधिकारी (माध्यमिक/माध्यमिक-प्रथम) | अध्यक्ष |
| 2. | जिला शिक्षा अधिकारी (प्रारम्भिक) | सदस्य |
| 3. | प्रशासनिक अधिकारी (जिशिअ.मा./मा.-प्रथम) | सदस्य |
| 4. | प्रधानाचार्य, राउमावि, (जिशिअ.मा./मा.-प्रथम द्वारा मनोनीत) | सदस्य |
| 5. | अति. जिशिअ (माध्यमिक/माध्यमिक-प्रथम) | सदस्य सचिव |

6. (ii) एसआइईआरटी, (ईटीसेल सहित) उदयपुर, उच्च अध्ययन शिक्षण संस्थान, शा. शिक्षक महाविद्यालय, शार्दूल स्पोर्ट्स स्कूल तथा उप निदेशक (माध्यमिक/प्रारंभिक) अपने कार्यालयों में कार्यरत कार्मिकों के न्यूनतम दो प्रस्ताव तीन-तीन प्रतियों में सीधे ही संबंधित उप निदेशक माध्यमिक (नोडल अधिकारी) की अध्यक्षता में गठित समिति को गोपनीय रूप से अनुशंसा सहित दिनांक : **16.11.2016** तक प्रेषित करेंगे। मण्डल स्तर पर अंतिम चयन हेतु निम्नानुसार समिति का गठन किया जाता हैं :-

| | | |
|---|---|---|
| 1. | उप निदेशक (माध्यमिक) | नोडल अधिकारी |
| 2. | उप निदेशक (प्रारंभिक) | सदस्य |
| 3. | जिला शिक्षा अधिकारी माध्यमिक/ माध्यमिक-प्रथम मण्डल मुख्यालय | सदस्य |
| 4. | संस्थापन अधिकारी, उप निदेशक-माध्यमिक | सदस्य |
| 5. | सहायक निदेशक, उप निदेशक-माध्यमिक | सदस्य-सचिव |

उपर्युक्त समिति जिला चयन समितियां, विशिष्ट संस्थानों एवं उप निदेशक कार्यालयों से प्राप्त प्रस्तावों पर सूक्ष्म अंक योजना के आधार पर कार्मिकों का चयन कर मेरिट के आधार पर न्यूनतम 10 (दस) प्रस्ताव दो-दो प्रतियों में निदेशक माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर को गोपनीय रूप से दिनांक **23.11.2016** तक भिजवाया जाना सुनिश्चित करेंगी।

6. (iii) माध्यमिक शिक्षा निदेशालय में कार्यरत कर्मचारियों के प्रस्ताव संबंधित अनुभाव/ग्रुप अधिकारी गोपनीय रूप से कार्मिकों का चयन कर अपनी अनुशंसा सहित निदेशालय स्तर पर गठित चयन समिति के समक्ष दिनांक **16.11.2016** तक दो-दो प्रतियों में प्रस्तुत करेंगे।

**निदेशालय माध्यमिक शिक्षा में चयन समिति का गठन निम्नानुसार किया जाता है :-**

| | | |
|---|---|---|
| 1. | उप निदेशक (प्रशासन) माध्यमिक शिक्षा | अध्यक्ष |
| 2. | संस्थापन अधिकारी (संस्थापन एबी) | सदस्य |
| 3. | सहायक निदेशक (माध्यमिक) | सदस्य |
| 4. | लेखाधिकारी (बजट) | सदस्य |
| 5. | सहायक निदेशक (प्रशासन) | सदस्य सचिव |

उपर्युक्त समिति प्राप्त प्रस्तावों पर सूक्ष्म अंक योजना के आधार पर कार्मिकों का मेरिट के आधार पर चयन कर न्यूनतम दस प्रस्ताव दो प्रतियों में निदेशक, माध्यमिक शिक्षा की अनुशंसा सहित राज्य स्तरीय चयन हेतु निदेशक माध्यमिक शिक्षा को दिनांक **23.11.2016** को प्रस्तुत करेंगी।

6. (iv) प्रारंभिक शिक्षा निदेशालय में कार्यरत कर्मचारियों के प्रस्ताव संबंधित अनुभाग/ग्रुप अधिकारी गोपनीय रूप से कार्मिकों का चयन कर अपनी अनुशंसा सहित निदेशालय, प्रारम्भिक शिक्षा स्तर पर गठित चयन समिति के समक्ष दिनांक **16.11.2016** तक प्रस्ताव दो प्रतियों में प्रस्तुत करेंगे।

**निदेशालय प्रारंभिक शिक्षा में चयन समिति का गठन निम्नानुसार किया जाता है :-**

| | | |
|---|---|---|
| 1. | उप निदेशक, प्रारंभिक शिक्षा निदेशालय | अध्यक्ष |
| 2. | संस्थापन अधिकारी, प्रारंभिक शिक्षा निदेशालय | सदस्य |
| 3. | सहायक निदेशक (शैक्षिक), प्रारंभिक शिक्षा निदेशालय | सदस्य |
| 4. | लेखाधिकारी (बजट) प्रारंभिक शिक्षा निदेशालय | सदस्य |
| 5. | सहायक निदेशक, (प्रशासन) प्रारंभिक शिक्षा निदेशालय | सदस्य सचिव |

उपर्युक्त समिति प्राप्त प्रस्तावों पर सूक्ष्म अंक योजना के आधार पर कार्मिकों का मेरिट के आधार पर चयन कर न्यूनतम दस प्रस्ताव दो प्रतियों में निदेशक, प्रारम्भिक शिक्षा की अनुशंसा सहित राज्य स्तरीय चयन हेतु निदेशक माध्यमिक शिक्षा को दिनांक **23.11.2016** तक प्रस्तुत करेंगी।

7. राज्य स्तर पर चयन हेतु निम्नानुसार कमेटी का गठन किया जाता हैं :-

| | | |
|---|---|---|
| 1. | अतिरिक्त निदेशक (RAS) माध्यमिक शिक्षा | अध्यक्ष |
| 2. | अतिरिक्त निदेशक (RAS) प्रारंभिक शिक्षा | सदस्य |
| 3. | वित्तीय सलाहकार, माध्यमिक शिक्षा | सदस्य |
| 4. | संयुक्त निदेशक (प्रशासन) माध्यमिक शिक्षा | सदस्य |
| 5. | संयुक्त निदेशक, प्रारंभिक शिक्षा | सदस्य |
| 6. | सहायक निदेशक (प्रशासन) | सदस्य सचिव |

सूक्ष्म अंक योजना कुल 90 अंकों की होगी, अधिकतम 10 अंक राज्य स्तरीय चयन समिति द्वारा जाएंगे। इस प्रकार राज्य स्तरीय मेरिट कुल 100 अंकों की होगी। राज्य स्तरीय चयन समिति अधीनस्थ कार्यालयों से प्राप्त एवं निदेशालय (माध्यमिक/प्रारंभिक शिक्षा) स्तर पर गठित कमेटियों से प्राप्त प्रस्तावों एवं अंकों की जाँच रिकार्ड के आधार पर की जाकर प्रस्तावित अंकों की समीक्षा करने में सक्षम होंगी। तत्पश्चात राज्य स्तर पर मेरिट बनाकर कार्मिकों का चयन अन्तिम रूप से अनुमोदन एवं निर्णय हेतु निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर को **28.11.2016** को प्रस्तुत करेंगी।

8. पंचांग :-

मंत्रालयिक कर्मचारी सम्मान से संबंधित सभी कार्यों के लिए समयबद्ध निष्पादन के लिए निम्नानुसार पंचांग निर्धारित किया जाता है :-

| | | |
|---|---|---|
| 1. | जिला शिक्षा अधि,कारी (माध्यमिक/प्रारंभिक स्तर पर) प्रकरण अधीनस्थों से प्राप्त कर जिला स्तरीय चयन समिति को अनुशंसा सहित प्रस्ताव मण्डल अधिकारियों को उपलब्ध कराना एवं विशिष्ट संस्थानों द्वारा प्रस्तावों को अंतिम रूप देकर अनुशंसा सहित मण्डल अधिकारियों को उपलब्ध कराना। | 16.11.2016 |

| | | |
|---|---|---|
| 2. | उप निदेशक माध्यमिक (नोडल अधिकारी) स्तर पर गठित समिति द्वारा प्रस्तावों को अंतिम रूप देकर अनुशंसा सहित माध्यमिक | 23.11.2016 |
| 3. | शिक्षा निदेशालय को उपलब्ध कराना। निदेशालय माध्यमिक/प्रारंभिक शिक्षा से प्राप्त प्रस्तावों को अंतिम रूप देकर अनुशंसा सहित माध्यमिक शिक्षा निदेशालय की राज्य स्तरीय | 23.11.2016 |
| 4. | गठित कमेटी को उपलब्ध कराना। राज्य स्तर पर गठित कमेटी द्वारा चयन कर प्रस्ताव निदेशक, माध्यमिक शिक्षा के समक्ष | 28.11.2016 |
| | अंतिम निर्णय हेतु प्रस्तुत करना। | |
| 5. | चयनित कार्मिकों की सूची जारी करना। | 02.12.2016 |
| 6. | राज्य स्तरीय पुरस्कार एवं सम्मान समारोह का आयोजन, बीकानेर | 16.12.2016 |

प्रस्ताव में पूर्ण गुणवत्ता व विशेष रुचि के साथ कार्य संपादित करने की ओर विशेष ध्यान दिया जावें। सम्मान हेतु अनुशंसित किए जाने वाले प्रकरणों में पूर्णतः गोपनीयता बरती जावे। इस हेतु जिला शिक्षा अधिकारी, उप निदेशक को उप निदेशकों (नोडल अधिकारी) द्वारा निदेशालय को भिजवाए जाने वाले प्रस्ताव सीलबंद पैकेट में संबंधित प्रभारी अधिकारी के साथ ही भिजवावें। यह ध्यान रहे कि प्रस्तावों के साथ भेजे जाने वाले अग्रेषण पत्र में चयनित कर्मचारियों के नाम अंकित नहीं करें बल्कि उनके प्रस्तावों की मात्र संख्या ही अंकित की जावे।

पूर्व में शिक्षा विभागीय राज्य स्तरीय पुरस्कार से सम्मानित कार्मिक एवं जिन कार्मिकों के विरुद्ध विभागीय कार्यवाही चल रही है/प्रस्तावित है उनके प्रस्ताव नहीं भिजवावें।

उक्त प्रस्ताव हेतु अधीनस्थ अधिकारियों को निर्देश प्रदान करें कि इस संबंध में विस्तृत रूप से प्रचार किया जावे ताकि उत्कृष्ट कार्य करने वाले कार्मिकों को इस योजना का लाभ मिल सके।

पूर्व वर्षों में यह देखने में आया है कि मंत्रालयिक एवं चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी सम्मान समारोह हेतु कुछ इकाईयों द्वारा एक भी प्रस्ताव प्रस्तुत नहीं किया जाता है। ऐसी स्थिति में उस मण्डलाधीन कार्यरत उत्कृष्ट कार्मिक सम्मान से वंचित रह जाते हैं अतः समस्त मण्डल अधिकारियों/जिला शिक्षा अधिकारियों को निर्देशित किया जाता है कि आप अपने अधीन उत्कृष्ट कार्मिकों के प्रस्ताव व्यक्तिशः रुचि लेकर तैयार कर सक्षम अधिकारी को समय पर प्रस्तुत करें। यदि किसी भी स्थिति में आपके मण्डल द्वारा प्रेषित किए जाने वाले प्रस्तावों की सूचना शून्य भिजवाई जाती है तो विपरित परिस्थितियों में उत्तरदायित्व आपका निर्धारित किया जा सकता है।

उक्त पत्र मय संलग्न अधीनस्थ समस्त कार्यालयों/संस्थानों/विद्यालयों में आपके कार्यालय स्तर पर तत्काल प्रसारित किया जाकर प्रस्ताव प्राप्त करने की कार्यवाही निर्धारित पंचांग के अनुसार संपादन हेतु आपको एतद् द्वारा निर्देशित किया जाता है।

संलग्न

1. प्रपत्र 2. सूक्ष्म चयन अंक योजना

● निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर ● क्रमांक : शिविरा-माध्य/साप्र/बी-2/4399/49(13)/2016 दिनांकः 12 अगस्त 2016

**नोट :- शिक्षा विभागीय परियोजनाओं के अतिरिक्त कार्मिक की अन्य विभागों में प्रतिनियुक्ति पर की गई सेवा अवधि को कुल अनुभव अवधि में से कम किया जावे।**

**15. शैक्षिक/तकनीकी योग्यता**

**भाग-'क'**

1. क्या कार्मिक ने कार्यालय/संस्था के भौतिक विकास के लिए निर्धारित सामुदायिक संसाधनों का संघटन किया हैं? यदि हाँ तो विवरण देवें।
2. क्या कर्मचारी ने कार्यालय पद्धति अधिक प्रभाव के लिए कोई नवाचारी प्रयोग किया हैं? संक्षिप्त विवरण देवें।
3. क्या कार्मिक ने किसी सेवाकालीन प्रशिक्षण कार्यक्रमों, कार्यशालाओं आदि में भाग लिया है? यदि हाँ तो विगत पाँच वर्षों का विवरण देवें।
4. क्या कार्मिक ने कोई लेख, रचना, पुस्तक आदि लिखी हैं? यदि हां तो विवरण देवें।
5. क्या विगत पाँच वर्षों के दौरान कार्मिक को संस्था/कार्यालय समुदाय या सरकार से कोई मान्यता प्राप्त पुरस्कार या इनाम मिला है? यदि हां तो विवरण देवें।
6. उपर अनुल्लिखित कोई अन्य महत्त्वपूर्ण उपलब्धि जो कार्मिक को पुरस्कार हेतु पात्रता में सहायक हो।
7. क्या कार्मिक अपने सहकर्मियों और अन्य लोगों के साथ मधुर संबंध बनाए रखते हैं?
8. संस्था प्रधान द्वारा समग्र मूल्यांकन .....
9. जिला शिक्षा अधिकारी द्वारा समग्र मूल्यांकन .....

● हस्ताक्षर मय मोहर, जिशिअ. (माध्यमिक/प्रारंभिक) अनुभाग/ग्रुप अधिकारी निदेशालय (माध्यमिक/प्रारंभिक) संस्था प्रधान, विशिष्ट संस्थान।

**परिशिष्ट-1**

**राज्य स्तरीय सम्मान हेतु कार्मिक की अनुशंसा करने के लिए प्रपत्र**

प्रपत्र का भाग 'क' कार्मिक के वार्षिक कार्य मूल्यांकन प्रतिवेदन, सेवा पुस्तिका आदि स्रोतों से भरे जाएं। भाग 'ख-।' और 'ख-।।' क्रमशः जिला समिति एवं राज्य समिति के अध्यक्ष तथा इस प्रयोग हेतु नियुक्त समिति द्वारा भरे जाएं। प्रपत्र 'ग' मण्डल स्तर पर नॉडल समिति तथा प्रपत्र 'घ' राज्य स्तरीय समिति द्वारा भरा जाए।

फोटो यहाँ चिपकाएं

1. नाम .....
2. वैवाहिक स्थिति व स्त्री/पुरुष .....
3. पद नाम, स्कूल का पूर्ण पता (पिन कोड सहित) .....
4. नियुक्ति स्थान का पता (पिन कोड सहित) .....
5. पूर्ण स्थाई पता (पिन कोड, दूरभाष एवं मो. नंबर यदि हो तो) .....
   .....

6. कार्यालय/संस्था का नाम .....
7. जिला .....
8. जन्मतिथि .....
9. प्रथम नियुक्ति तिथि .....
10. वर्तमान आयु .....
11. सेवानिवृत्त तिथि .....
12. शिक्षा विभाग में कार्मिक द्वारा सेवा शुरू करने की तिथि सहित कुल सेवा : कुल सेवा ..... वर्ष.....माह.....
13. सेवा रिकार्ड :

| संस्था/कार्यालय का नाम | पद जिस पर कार्य किया/कार्यरत है | सेवा की अवधि दिनांक महीना एवं वर्ष सहित |
|---|---|---|
| 1 | 2 | 3 |

14. कुल अनुभव

| प्रकार | अवधि | | कुल अनुभव | | |
|---|---|---|---|---|---|
| | .....से | .....तक | वर्ष | माह | दिन |
| विद्यालय | | | | | |
| कार्यालय | | | | | |
| अन्य | | | | | |
| अन्य विभागों में प्रतिनियुक्ति | | | | | |
| कुल | | | | | |

भाग-'ख-।'

जिला समिति/मण्डल समिति (नॉडल)/मा.शि. एवं प्रा.शि. निदेशालय स्तर पर गठित समिति द्वारा भरा जावेगा
(मंत्रालयिक संवर्ग के कर्मचारियों के लिए)
कुल अंक-90

अंक-10

| 1 | **कार्य का मूल्यांकन** | उत्कृष्ट 1 | बहुत अच्छा 3/4 | अच्छा 1/2 | संतोषप्रद 1/4 |
|---|---|---|---|---|---|
| 1 | नोटिंग | | | | |
| 2 | पत्र लेखन की क्षमता | | | | |
| 3 | पंजिकाओं का संधारण | | | | |
| 4 | पीयूसी प्रस्तुत करने की स्थिति | | | | |
| 5 | लंबित प्रकरणों की स्थिति | | | | |
| 6 | दैनंदिनी संधारण | | | | |
| 7 | स्मरण डायरी की स्थिति | | | | |
| 8 | कार्य निष्पादन की गति | | | | |
| 9 | टंकण कार्य की कुशलता/ कम्प्यूटर | | | | |
| 10 | कार्यालयी कार्य क्षमता | | | | |

अंक-12

| 2 | **व्यक्तित्व एवं प्रतिष्ठा** | उत्कृष्ट 1 | बहुत अच्छा 3/4 | अच्छा 1/2 | संतोषप्रद 1/4 |
|---|---|---|---|---|---|
| 1 | व्यक्तित्व | | | | |
| 2 | व्यवहार | | | | |
| 3 | शिष्टाचार | | | | |
| 4 | धैर्यता | | | | |
| 5 | चारित्रिक गुण | | | | |
| 6 | शारीरिक क्षमता | | | | |
| 7 | मानसिक जागरूकता | | | | |
| 8 | प्रशासनिक क्षमता | | | | |
| 9 | दूरदर्शिता | | | | |
| 10 | कार्य निष्पादन क्षमता | | | | |
| 11 | जनता/सहकर्मियों से संबंध | | | | |
| 12 | मानवीय दृष्टिकोण | | | | |

अंक-06

| 3 | **व्यक्तित्व एवं प्रतिष्ठा** | उत्कृष्ट 3 | बहुत अच्छा 2 | अच्छा 1½ | संतोषप्रद 1 |
|---|---|---|---|---|---|
| 1 | स्थानीय कार्यालय/संस्था में प्रतिष्ठा | | | | |
| 2 | समाज सेवा | | | | |

अंक-10
(प्रतिवर्ष 2 अंक)

4. गत 05 वर्षों से गोपनीय वार्षिक कार्य मूल्यांकन प्रतिवेदनों की टिप्पणी

| | **वित्तीय वर्ष** | उत्कृष्ट 2 | बहुत अच्छा 1½ | अच्छा 1 | संतोषप्रद ½ |
|---|---|---|---|---|---|
| 1 | 2010-11 | | | | |
| 2 | 2011-12 | | | | |
| 3 | 2012-13 | | | | |
| 4 | 2013-14 | | | | |
| 5 | 2014-15 | | | | |

नोट-वा.का.मू. प्रतिवेदन उपलब्ध न होने की स्थिति में संबंधित वर्ष का संतोषजनक प्रमाण-पत्र संलग्न किया जावे। इस हेतु अंक योजना की गणना प्रतिवर्ष 1/2 अंक के आधार पर देय होगी।

5. अंक-7

| सेवा की पूर्ण अवधि | 15 से 20 वर्ष | 20 से 25 वर्ष | 25 से अधिक |
|---|---|---|---|
| | 1 अंक | 5 अंक | 7 अंक |
| कुल सेवा | | | |

6. अंक-10

(राष्ट्रीय-10, राज्य-7, मण्डल-5, जिला-3, स्थानीय स्तर-2)
क्या कर्मचारी ने लेख/रचनाएँ/पुस्तक लिखी हैं?
यदि हाँ तो उनका पूर्ण विवरण देवें।

7. अंक-10

(राष्ट्रीय-10, राज्य-7, मण्डल-5, जिला-3, स्थानीय स्तर-2)

क्या कर्मचारी ने विभागीय प्रतियोगिता में भाग लिया है
अथवा आयोजन में रचनात्मक कार्य/सहयोग दिया है?
उल्लेख करें।

8. अंक-02

यदि कर्मचारी विकलांग है।
(जिन्हें नियमानुसार विकलांग वाहन भत्ता देय है।)

9. अंक-10

| | |
|---|---|
| कर्मचारी को संस्था/कार्यालय/समुदाय/ | राष्ट्रीय स्तर-10 |
| समाज/जिला प्रशासन/राज्य सरकार/ | राज्य स्तर-07 |
| भारत सरकार से कोई पुरस्कार, | मण्डल स्तर-05 |
| प्रशंसा पत्र मिले हो तो विवरण दें। | जिला स्तर-03 |
| (सत्यापित प्रतियां संलग्न की जावें) | स्थानीय स्तर-03 |

10. अंक-05

अन्य महत्त्वपूर्ण कार्य/उपलब्धियाँ का जिनका उल्लेख ऊपर न आया हो

11. अंक-03

कार्यालयाध्यक्ष द्वारा समग्र मूल्यांकन/अनुशंसा

12. अंक-02

शैक्षणिक योग्यता
स्नातकोत्तर स्तर-02
स्नातक स्तर-01

13. अंक-03

तकनीकी डिग्री/डिप्लोमा (कम्प्यूटर इत्यादि)
स्नातकोत्तर स्तर-03
स्नातक स्तर-02
सर्टिफिकेट/कोर्स-1

कुल अंकों का योग-(1+2+3+4+5+6+7+8+9+10+11+12+13).....
अंकों में शब्दों में अंकित करें। .....
श्री/सुश्री/श्रीमती..... पद.....
पिता/पति का नाम..... जन्मतिथि.....
कार्यालय/विद्यालय .....
के संबंध में यह प्रमाणित किया जाता है कि :-

1. इनके विरुद्ध किसी भी प्रकार की विभागीय जाँच/कानूनी कार्यवाही वर्तमान में न तो चल रही है और न ही विचाराधीन है।
2. इनको पूर्व में शिक्षा विभागीय राज्य स्तरीय पुरस्कार से सम्मानित नहीं किया गया है।
3. कार्मिक शिक्षा विभाग के अलावा अन्य विभागों में प्रतिनियुक्ति पर कार्यरत नहीं हैं।
4. अन्य विभागों में प्रतिनियुक्ति पर की गई सेवा अवधि को कुल सेवा में से कम कर दिया गया है।
5. इनके प्रस्ताव के साथ वाँछित प्रलेख संलग्न कर दिए गए हैं तथा प्रलेखों की जाँच कर ली गई है।

| हस्ताक्षर | हस्ताक्षर | हस्ताक्षर | हस्ताक्षर | हस्ताक्षर |
|---|---|---|---|---|
| मय मोहर | मय मोहर | मय मोहर | मय मोहर | मय मोहर |
| प्रथम सदस्य | द्वितीय सदस्य | तृतीय सदस्य | सदस्य सचिव | अध्यक्ष |

भाग-'ख-।।'

जिला समिति/मण्डल समिति (नॉडल)/मा.शि. एवं प्रा.शि. निदेशालय स्तर पर गठित समिति द्वारा भरा जावेगा
(चश्रेक. व समकक्ष संवर्ग के कर्मचारियों के लिए)
कुल अंक-90

अंक-24

| 1 | **व्यक्तित्व एवं प्रतिष्ठा** | उत्कृष्ट 1 | बहुत अच्छा 1½ | अच्छा 1 | संतोषप्रद 1/2 |
|---|---|---|---|---|---|
| 1 | व्यक्तित्व | | | | |
| 2 | व्यवहार | | | | |
| 3 | शिष्टाचार | | | | |
| 4 | धैर्यता | | | | |
| 5 | चारित्रिक गुण | | | | |
| 6 | शारीरिक क्षमता | | | | |
| 7 | मानसिक जागरूकता | | | | |
| 8 | प्रशासनिक क्षमता | | | | |
| 9 | दूरदर्शिता | | | | |
| 10 | कार्य निष्पादन क्षमता | | | | |
| 11 | जनता/सहकर्मियों से संबंध | | | | |
| 12 | मानवीय दृष्टिकोण | | | | |

अंक-10

| 2 | **व्यक्तित्व एवं प्रतिष्ठा** | उत्कृष्ट 5 | बहुत अच्छा 3 | अच्छा 2 | संतोषप्रद 1 |
|---|---|---|---|---|---|
| 1 | स्थानीय कार्यालय/संस्था में प्रतिष्ठा | | | | |
| 2 | समाज सेवा | | | | |

**3** अंक-5

| सेवा की पूर्ण अवधि | 15 से 20 वर्ष | 20 से 25 वर्ष | 25 से अधिक |
|---|---|---|---|
| | 1 अंक | 2 अंक | 3 अंक |
| कुल सेवा | 15 वर्ष तक लगातार माध्यमिक/प्रारंभिक शिक्षा निदेशालय में सेवा पर 2 अंक अतिरिक्त देय होगा। | | |

4. अंक-10

(राष्ट्रीय-10, राज्य-7, मण्डल-5, जिला-3, स्थानीय स्तर-2)

क्या कर्मचारी ने लेख/रचनाएं/पुस्तक लिखी हैं?
यदि हाँ तो उनका पूर्ण विवरण देंवें।

5. अंक-10

(राष्ट्रीय-10, राज्य-7, मण्डल-5, जिला-3, स्थानीय स्तर-2)

क्या कर्मचारी ने विभागीय प्रतियोगिता में भाग लिया है।

अथवा आयोजन में रचनात्मक कार्य/सहयोग दिया है?
उल्लेख करें।

6. अंक-05
यदि कर्मचारी विकलांग है।
(जिन्हें नियमानुसार विकलांग वाहन भत्ता देय है।)

7. अंक-10
कर्मचारी को संस्था/कार्यालय/समुदाय/ राष्ट्रीय स्तर-10
समाज/जिला प्रशासन/राज्य सरकार/ राज्य स्तर-07
भारत सरकार से कोई पुरस्कार, मण्डल स्तर-05
प्रशंसा पत्र मिले हो तो विवरण दें। जिला स्तर-03
(सत्यापित प्रतियां संलग्न की जावें) स्थानीय स्तर-03

8. अंक-05
अन्य महत्त्वपूर्ण कार्य/उपलब्धियों का जिसका उल्लेख उपर्युक्त में न आया हो।

9. अंक-06
कार्यालयाध्यक्ष द्वारा समग्र मूल्यांकन/अनुशंसा

10. अंक-02
शैक्षणिक योग्यता
स्नातकोत्तर स्तर-02
स्नातक स्तर-01

11. अंक-03
तकनीकी डिग्री/डिप्लोमा (कम्प्यूटर इत्यादि)
स्नातकोत्तर स्तर-03
स्नातक स्तर-02
सार्टिफिकेट/कोर्स-1

कुल अंकों का योग-(1+2+3+4+5+6+7+8+9+10+11).....
अंकों में शब्दों में अंकित करें। .....
श्री/सुश्री/श्रीमती..... पद.....
पिता/पति का नाम..... जन्मतिथि.....
कार्यालय/विद्यालय .....
के संबंध में यह प्रमाणित किया जाता है कि :-

1. इनके विरुद्ध किसी भी प्रकार की विभागीय जाँच/कानूनी कार्यवाही वर्तमान में न तो चल रही है और न ही विचाराधीन है।
2. इनको पूर्व में शिक्षा विभागीय राज्य स्तरीय पुरस्कार से सम्मानित नहीं किया गया है।
3. कार्मिक शिक्षा विभाग के अलावा अन्य विभागों में प्रतिनियुक्ति पर कार्यरत नहीं हैं।
4. अन्य विभागों में प्रतिनियुक्ति पर की गई सेवा अवधि को कुल सेवा में से कम कर दिया गया है।
5. इनके प्रस्ताव के साथ वाँछित प्रलेख संलग्न कर दिए गए हैं तथा प्रलेखों की जाँच कर ली गई है।

| हस्ताक्षर | हस्ताक्षर | हस्ताक्षर | हस्ताक्षर | हस्ताक्षर |
|---|---|---|---|---|
| मय मोहर | मय मोहर | मय मोहर | मय मोहर | मय मोहर |
| प्रथम सदस्य | द्वितीय सदस्य | तृतीय सदस्य | सदस्य सचिव | अध्यक्ष |

भाग-'ग'
मण्डल (नॉडल) स्तर पर गठित समिति की सिफारिश

| हस्ताक्षर | हस्ताक्षर | हस्ताक्षर | हस्ताक्षर | हस्ताक्षर |
|---|---|---|---|---|
| मय मोहर | मय मोहर | मय मोहर | मय मोहर | मय मोहर |
| प्रथम सदस्य | द्वितीय सदस्य | तृतीय सदस्य | सदस्य सचिव | अध्यक्ष |

भाग-'घ'
राज्य स्तर पर गठित समिति की सिफारिश

| हस्ताक्षर | हस्ताक्षर | हस्ताक्षर | हस्ताक्षर | हस्ताक्षर |
|---|---|---|---|---|
| मय मोहर | मय मोहर | मय मोहर | मय मोहर | मय मोहर |
| प्रथम सदस्य | द्वितीय सदस्य | तृतीय सदस्य | सदस्य सचिव | अध्यक्ष |

## 2. विद्यार्थियों/कर्मियों को स्वच्छ पेयजल की उपलब्धता।

● कार्यालय निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर ● परिपत्र राज्य सरकार के पत्रांक दिनांक 06.07.2016 एवं निर्देश क्रमांक शिविरा-माध्य/साप्र/डी-3/विविध सूचना/10 दिनांक 08.04.2011 के अनुसरण में शिक्षा विभाग के अन्तर्गत संचालित समस्त राजकीय एवं गैर राजकीय विद्यालयों/कार्यालयों में स्थित पेयजल संग्रहण टंकियों की नियमित सफाई करने, उचित मापदण्ड के अनुसार से उन पेयजल टंकियों में जल को सुरक्षित रखने का उचित तरीकों को काम में लाया जाना सुनिश्चित करें, जिससे कि विद्यालयों/कार्यालयों में यथा विद्यार्थियों/कार्मिकों को स्वच्छ पेयजल की उपलब्धता रहे। उक्त के सम्बन्ध में निम्नानुसार दिशा-निर्देशों की पालना को सुनिश्चित करावें।

1. विद्यालय/कार्यालय में स्वच्छ पेयजल की उपलब्धता सुनिश्चित की जावे।
2. प्रत्येक विद्यालय/कार्यालय में स्वच्छ पेयजल की उपलब्धता सुनिश्चित एवं उपयुक्त हो। इस बाबत कार्यालयाध्यक्ष/संस्था प्रधान तथा विद्यालय विकास कोष समिति के सदस्य नियमित रूप से उचित अंतराल पर साफ-सफाई की जाँच कर पुष्टि करें।
3. पेयजल टंकियों की सफाई व्यवस्था सुनिश्चित करने एवं उचित प्रकार से ढक कर रखे जाने की उचित व्यवस्था रखी जावे जिससे विद्यार्थियों/कार्मिकों को केवल साफ सुथरा एवं कीटाणु रहित दोषमुक्त पेयजल ही उपलब्ध हो, बल्कि संभावित दूषित जल जनित बीमारियों से भी बचाव रहे।
4. विद्यालय/कार्यालय में पेयजल की पर्याप्त व्यवस्था हो तथा यह ऐसे साफ-सुरक्षित स्थान पर हो जहां आवश्यकता होने पर आसानी से पहुँचा जा सके।
5. पेजयल टंकियों की सफाई तथा नियमित अन्तराल पर जाँच का ब्यौरा एक रजिस्टर में संधारित किया जावे। इस हेतु शाला/संस्था प्रधान नियमानुसार उचित कार्यवाही अमल में लावें।
6. अध्यापक-अभिभावक परिषद की बैठकों में विद्यालय की टंकियों की सफाई/पेयजल समीक्षा एवं इसे दृढ़ करने की चर्चा/कार्यवाही

की जावें।

7. निरीक्षण दल द्वारा कार्यालय/विद्यालय का निरीक्षण अथवा आकस्मिक विजिट करने के समय विद्यालय की उक्त पेयजल सम्बन्धित स्थितियों का जायजा लिया जावे।
8. बरसात के दिनों में जलजनित रोगों की आशंका बनी रहती है अतः वर्षाकाल में विशेष रूप से टंकियों के साफ शुद्ध पेयजल की उचित व्यवस्था रखी जानी चाहिए। शाला/संस्था से सम्बन्धित क्षेत्र विशेष के जल स्वास्थ्य एवं अभियांत्रिकी विभाग से भी उक्त के सम्बन्ध में उचित सलाह/सहयोग/मार्गदर्शन प्राप्त किया जा सकता है।
9. आपात स्थितियों में बचाव के सर्वोत्तम तरीकों को विवेकानुसार इस्तेमाल किया जा सकता है।

● (जगदीश चन्द्र पुरोहित) आई.ए.एस. निदेशक माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर ● क्रमांक : शिविरा-माध्य/साप्र/डी-2/विविध/2016-17 दिनांक 26-08-2016

## 3. शिविरा पत्रिका (मासिक) हेतु अपने अधीनस्थ विद्यालयों की संख्यानुसार समेकित वार्षिक अंशदान मय विद्यालय सूची भिजवाने बाबत।

● कार्यालय निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर ● क्रमांकः शिविरा/माध्य/प्रकाशन/निविदा/5677/2015/380 दिनांक : 01.09.2016 ● समस्त जिला शिक्षा अधिकारी माध्यमिक शिक्षा प्रथम/द्वितीय ● विषयः शिविरा पत्रिका (मासिक) हेतु अपने अधीनस्थ विद्यालयों की संख्यानुसार समेकित वार्षिक अंशदान मय विद्यालय सूची भिजवाने बाबत। ● प्रसंगः शिविरा-माध्य/प्रकाशन/निविदा/5677/ 2015/367 दिनांक 28.07.2016

उपर्युक्त विषयान्तर्गत लेख है कि विभागीय पत्रिका शिविरा (मासिक) का नई निविदा उपरान्त परिवर्तित वार्षिक शुल्क (अंशदान) हेतु आपको प्रासंगिक पत्र द्वारा लिखा जा चुका है। जो ई-मेल द्वारा दिनांक 28.07.2016 को आपको प्रेषित भी किया जा चुका है। किन्तु आप द्वारा आज दिनांक तक कोई कार्यवाही अमल में नहीं लाई गई है। अतः इस स्मरण पत्र द्वारा आपको पुनः सूचित किया जाता है कि दिनांक 10.09.2016 तक वांछित अंशदान मय विद्यालय सूची क्षेत्राधिकार की भिजवाना सुनिश्चित करें ताकि पत्रिका आपके अधीनस्थ विद्यालयों को अनवरत प्रेषित की जा सकें।

संलग्नः मूल आदेश की प्रति।

(प्रकाश चन्द्र जाटोलिया) वरिष्ठ सम्पादक (शिविरा) माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर

## 4. राज्य बीमा एवं प्रा.नि. विभाग द्वारा जारी किए जाने वाले भुगतान अधिकार-पत्रों का डीडीओ द्वारा पे-मैनेजर पर ऑनलाइन पारित हेतु प्रक्रिया।

● कार्यालय निदेशक, प्रारंभिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर ● क्रमांकः शिविरा/प्रारं/निजी/पी.एफ./16 / दिनांक 02.09.16 ● सम्पादक (शिविरा) माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान बीकानेर। ● विषयः राज्य बीमा एवं प्रा.नि. विभाग द्वारा जारी किए जाने वाले भुगतान अधिकार-पत्रों का डीडीओ द्वारा पे-मैनेजर पर ऑनलाइन पारित हेतु प्रक्रिया को शिविरा में प्रकाशन करने हेतु। ● प्रसंगः प.93/कम्प/ऑनलाइन प्रोसेस/2016/785 दिनांक 31.08.2016

उपर्युक्त विषयान्तर्गत प्रासंगिक पत्र जो कि एसआईपीएफ पोर्टल एवं पे-मैनेजर पोर्टल के सम्पूर्ण इन्टीग्रेशन क्रम में नवीन विकसित प्रक्रिया के तहत अब नगद जमाकर्ता विभागों के चालान/शिड्यूल ई-ग्रास पोर्टल के बजाय एसआईपीएफ पोर्टल के माध्यम से जनरेट किए जाने तथा राज्य बीमा एवं प्रा.नि. विभाग द्वारा जारी किए जाने वाले भुगतान अधिकार-पत्रों का डीडीओ द्वारा पे-मैनेजर पर ऑनलाइन पारित हेतु निर्धारित प्रक्रिया परिपत्र संलग्न कर शिविरा में प्रकाशन करने हेतु प्रेषित है।

●संलग्नः उपर्युक्तानुसार

● (शिशिर चतुर्वेदी) अतिरिक्त निदेशक (पी.एफ.) प्रारंभिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर

**::परिपत्र::**

● राजस्थान सरकार ● निदेशालय, राज्य बीमा एवं प्रावधायी निधि विभाग ● क्रमांकः प.93/कम्प/ऑनलाइन प्रोसेस/2016/785 दिनांक 31.08.2016

मुख्यमंत्री महोदया राजस्थान सरकार द्वारा वित्तीय वर्ष 2016-17 के बजट भाषण के पैरा संख्या 244 के तहत राज्य बीमा एवं जीपीएफ के प्रकरणों को एसआईपीएफ पोर्टल के माध्यम से ऑनलाइन निस्तारण तथा एसआईपीएफ पोर्टल एवं पे-मैनेजर पोर्टल का सम्पूर्ण इन्टीग्रेशन किया जाना है। उक्त घोषणा की पालना में विभाग द्वारा राज्य बीमा ऋण, राज्य बीमा स्वत्व, जीपीएफ अस्थाई, स्थाई आहरण एवं जीपीएफ अन्तिम दावा भुगतान आदि कार्य दिनांक 15.08.2016 से ऑनलाइन किया जाना प्रारंभ कर दिए गए हैं।

एसआईपीएफ पोर्टल एवं पे-मैनेजर पोर्टल के सम्पूर्ण इन्टीग्रेशन क्रम में नवीन विकसित प्रक्रिया के तहत अब नकद जमाकर्ता विभागों के चालान/शिड्यूल ई-ग्रास पोर्टल के बजाय एसआईपीएफ पोर्टल के माध्यम से जनरेट किए जाएंगे तथा राज्य बीमा एवं प्रा.नि. विभाग द्वारा जारी किए जाने वाले भुगतान अधिकार पत्रों का डीडीओ द्वारा पे-मैनेजर पर ऑनलाइन पारित किए जाएंगे, इस हेतु निम्नांकित प्रक्रिया अपनाई जाएगी।

**1. एसआईपीएफ पोर्टल के माध्यम से केश चालान-शिड्यूल्स जनरेशन**

1. वर्तमान में वे राज्य कर्मचारी जो स्वायत्तशाषी विभागों, निगमों, बोर्ड, पंचायतराज जैसी संस्थाओं में पदस्थापित/प्रतिनियुक्ति हैं उनके द्वारा राज्य बीमा एवं प्रा.नि. विभाग से संबंधित राज्य बीमा, प्रावधायी निधि, एनपीएस, जीपीए आदि कटौतियां ई-ग्रास पोर्टल के माध्यम से जमा कराई जा रही है, किन्तु ई-ग्रास पोर्टल पर उपर्युक्त कटौतियाँ का विस्तृत शिड्यूल बनाए जाने की न तो बाध्यता है, औ न ही सुविधा है। ई-ग्रास पोर्टल के माध्यम से अब तक बीमा, जीपीएफ के जो चालान जनरेट किए जा रहे हैं, उनके अधिकांश शिड्यूल राज्य बीमा एवं प्रा.नि. विभाग को प्राप्त नहीं हो रहे हैं, फलतः विगत वर्षों में ई-ग्रास पोर्टल के माध्यम से

जमा कराई गई कटौतियों का संबंधित अंशदाताओं के खातों में खतौनियाँ/समायोजन नहीं हो पा रहा है।

2. इस समस्या के समाधान हेतु एसआईपीएफ पोर्टल एवं ई-ग्रास पोर्टल का इन्टीग्रेशन किया जाकर आवश्यक व्यवस्था/प्रावधान किया गया है, जिसके अनुसार अब राज्य बीमा एवं प्रा.नि. विभाग से संबंधित नकद चालान जमाकर्ता सीधे ई-ग्रास पर राशि जमा नहीं करवा पाएंगे इस हेतु पहले उन्हें एसआईपीएफ पोर्टल पर शिड्यूल क्रियेट करना होगा जिसे सबमिट करने पर ई-ग्रास पोर्टल का लिंक भुगतान हेतु उपलब्ध हो जाएगा, जहाँ क्रेडिट जमा कराने की शेष प्रक्रियाएं ई-ग्रास पर पूर्ववत् सम्पन्न होगी। उक्त प्रक्रिया से नकद चालान वाले शिडयूल्स की क्रेडिट राशियों की खतौनी बिना किसी मानदेय हस्तक्षेप के स्वतः एसआईपीएफ पोर्टल पर संबंधित कर्मचारियों के खातों में हो पाएंगी।

**2. ऑनलाइन डेबिट बिल पारित**

1. एसआईपीएफ पोर्टल के माध्यम से जारी ऋण, आहरण, स्वत्व इत्यादि के भुगतान अधिकार पत्रों के आहरण हेतु डीडीओ को मानवीय श्रम से बिल तैयार कर कोषागारों में भेजना होता है जिसमें विलम्ब होने, दोहरा भुगतान होने की संभावना बनी रहती है तथा कर्मचारियों को भुगतान की गई डेबिट राशियों को इन्द्राज एसआईपीएफ पोर्टल पर राज्य बीमा एवं प्रा.नि. विभाग को मानव-श्रम से पुनः करानी पड़ती है।

2. इस समस्या के समाधान हेतु एसआईपीएफ पोर्टल एवं पे-मैनेजर पोर्टल पर आवश्यक प्रावधान किया गया है, तद्नुसार एसआईपीएफ पोर्टल द्वारा ऑनलाइन जारी भुगतान अधिकार पत्रों पर अंकित संदर्भ नम्बर (रेफरेन्स नम्बर) के आधार पर डीडीओ द्वारा पे-मैनेजर पोर्टल (आईएफएमएस) के माध्यम से ऑनलाइन भुगतान करवाए जाने की प्रक्रिया अपनाई जाएगी। इस प्रक्रिया के फलस्वरूप संबंधित राज्य कर्मचारियों को भुगतान की गई राशि बिना किसी मानवीय हस्तक्षेप के एसआईपीएफ पोर्टल पर संबंधित कर्मचारी के खाते में डेबिट हो जाएगी।

अतः समस्त आहरण एवं वितरण अधिकारियों तथा नकद जमाकर्ता विभागों से आग्रह है कि दिनांक 01 सितम्बर, 2016 से उपर्युक्तानुसार इस विभाग से सम्बन्धित राज्य बीमा, प्रावधायी निधि, एनपीएस, जीपीए आदि कटौतियाँ जो वर्तमान में ई-ग्रास पोर्टल पर जमा कराई जा रही हैं, को अब एसआईपीएफ पोर्टल के माध्यम से जमा करायी जावें तथा एसआईपीएफ पोर्टल द्वारा ऑनलाइन जारी भुगतान अधिकार पत्रों पर अंकित संदर्भ नम्बर के आधार पर पे-मैनेजर पोर्टल पर ऑनलाइन बिल सबमिट कर संबंधित कर्मचारियों को भुगतान किए जाने की कार्यवाही सुनिश्चित करावें।

● (एस.एस. सोहता) निदेशक ● क्रमांक प.93/कम्प/ऑनलाइन प्रोसेस/2016/786-923 दिनांक : 31.08.2016

## 5. अनुदानित एवं गैर अनुदानित शिक्षण संस्थाओं के लिए विद्यार्थी सुरक्षा दुर्घटना बीमा योजना।

● कार्यालय निदेशक, प्रारंभिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर ● क्रमांकः शिविरा/प्रारं/निजी/पी.एफ /16/ दिनांक : ● विषयः अनुदानित एवं गैर अनुदानित शिक्षण संस्थाओं के लिए विद्यार्थी सुरक्षा दुर्घटना बीमा योजना का शिविरा में प्रकाशन हेतु। ● प्रसंगः वरिष्ठ अतिरिक्त निदेशक राज्य बीमा एवं प्रावधायी निधि विभाग जयपुर के पत्र क्रमांक 1271-1272 दिनांक : 05.07.2016

उपर्युक्त विषयान्तर्गत प्रासंगिक पत्र जो कि अनुदानित एवं गैर अनुदानित शिक्षण संस्थाओं के लिए विद्यार्थी सुरक्षा दुर्घटना बीमा योजना को शिविरा में प्रकाशन करने हेतु संलग्न कर भिजवाए जा रहे हैं।

संलग्नः उपर्युक्तानुसार

● अतिरिक्त निदेशक (पी.एफ.) प्रारंभिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर।

**अनुदानित एवं गैर अनुदानित शिक्षण संस्थाओं के लिए विद्यार्थी सुरक्षा बीमा योजना।**

कार्यालय वरिष्ठ अतिरिक्त निदेशक, राज्य बीमा एवं प्रावधायी निधि विभाग

1. योजनाः- राज्य के अनुदानित एवं गैर अनुदानित विद्यालयों, महाविद्यालयों एवं अन्य शिक्षण संस्थानों के विद्यार्थियों की दुर्घटना में मृत्यु अथवा शारीरिक क्षतियों की दशा में विद्यार्थियों के माता/पिता/संरक्षक को बीमा लाभ उपलब्ध कराने के लिए राज्य बीमा एवं प्रावधायी निधि विभाग द्वारा वर्ष 2011-12 से दो पॉलिसियाँ (1) श्रेणी प्रथम प्रीमियम 50/- रुपये एवं (2) श्रेणी द्वितीय प्रीमियम 25/- रुपये जारी की जा रही है। उपर्युक्त दुर्घटना बीमा योजनाएँ शिक्षण संस्थाओं से राज्य बीमा एवं प्रावधायी निधि विभाग के जिला कार्यालय में प्रीमियम प्राप्ति दिनांक से एक वर्ष हेतु प्रभावी होगा तत्पश्चात् आगामी वर्ष हेतु प्रीमियम प्राप्त होने पर नवीनीकरण किया जाएगा।
2. योजना के संबंध में महत्त्वपूर्ण बिन्दु :-

(i) योजना का संचालन राज्य बीमा एवं प्रावधायी निधि विभाग (साधारण बीमा निधि) के जिला कार्यालय द्वारा किया जाएगा।

(ii) इस योजना के अन्तर्गत श्रेणी प्रथम की पॉलिसी हेतु प्रीमियम राशि 50/- रुपये (मय सेवाकर) प्रति विद्यार्थी तथा बीमाधन 1,00,000/- रुपये है। श्रेणी द्वितीय की पॉलिसी हेतु प्रीमियम राशि 25/- रुपये (मय सेवाकर) प्रति विद्यार्थी तथा बीमाधन 50,000/- रुपये है।

(iii) जिला कार्यालयों को प्रीमियम प्राप्त होने की दिनांक से पॉलिसी एक वर्ष के लिए प्रभावी रहेगी तथा उसके पश्चात इसका नवीनीकरण किया जा सकेगा।

(iv) विद्यार्थी की मृत्यु अथवा पॉलिसी में उल्लेखित क्षतियों की स्थिति में पॉलिसी के प्रभावी रहने की अवस्था में भारत में किसी भी स्थान और समय पर दुर्घटना घटित होने पर योजना का लाभ देय होगा।

(v) इस योजना के अन्तर्गत दी जाने वाली राशि अन्य किसी भी विधि विधान के अन्तर्गत दी जाने वाली क्षतिपूर्ति राशि के अतिरिक्त होगी।

(vi) मृत्यु अथवा शारीरिक क्षति दोनों प्रकार के दावों में दावा राशि विद्यार्थी के माता-पिता/संरक्षक एवं छात्र/ छात्रा के विवाहित होने की स्थिति में पति/पत्नी (जैसी भी स्थिति हो) को देय होगी।

(vii) राज्य बीमा एवं प्रावधायी निधि (साधारण बीमा निधि) विभाग के संयुक्त/उप/सहायक निदेशक कार्यालय जिला स्तर पर स्थित हैं।

समस्त दावों का निस्तारण एवं पॉलिसी जारी करने की प्रक्रिया जिला कार्यालयों द्वारा की जावेगी।

(viii) विभाग द्वारा स्वीकृत किए गए दावों का भुगतान दावेदार के बैंक खाते में किया जाएगा।

(ix) दावा प्रपत्र नये दस्तावेज दुर्घटना की तिथि के छः माह के अन्दर दावेदार द्वारा पूर्ति कर शिक्षण संस्था के प्राचार्य के माध्यम से इस विभाग के सम्बन्धित जिला कार्यालयों में प्रस्तुत किया जाना आवश्यक है।

(x) दावा प्रपत्र के साथ मृत्यु की स्थिति में पुलिस एफआईआर व पोस्टमार्टम रिपोर्ट एवं क्षति की स्थिति में एफआईआर इलाज का विवरण, मेडिकल बोर्ड सर्टिफिकेट आदि दस्तावेज संलग्न किए जाएं। इसी प्रकार चिकित्सा पुनर्भरण के प्रकरणों में मेडिकल बिल भी संलग्न किए जावें।

(xi) पॉलिसी अवधि में एक से अधिक दुर्घटना के होने पर बीमाधन से अधिक राशि का भुगतान नहीं किया जाएगा।

(xii) पॉलिसी अवधि के बीच में सम्मिलित होने वाले विद्यार्थी के लिए पूरी प्रीमियम राशि जमा करायी जावेगी।

(xiii) उक्त बीमा योजनान्तर्गत श्रेणी प्रथम एवं श्रेणी द्वितीय हेतु पृथक-पृथक अण्डरराइटिंग रजिस्टर एवं क्लेम रजिस्टर संधारित किए जाएंगे।

(xiv) विभाग द्वारा परिपूर्ण दावा प्रपत्र प्राप्त होने से 30 दिवस में प्रकरण निस्तारित किया जाएगा।

(xv) योजना में लाभ दुर्घटना में क्षति/मृत्यु की दिशा में ही देय है। अतः दुर्घटना के स्पष्ट साक्ष्य तथा क्षति/मृत्यु का प्रत्यक्ष/आसन्न (Proximate) कारण दुर्घटना ही है, सुनिश्चित होने के पश्चात ही प्रकरण में भुगतान देय होगा।

3. योजना किन पर लागू होगीः-

राज्य के समस्त अनुदानित/गैर अनुदानित नर्सरी से सीनियर सैकण्डरी विद्यालय समस्त राजकीय एवं निजी बी.एड. एवं एस.टी.सी. कॉलेज, समस्त राजकीय एवं निजी इंजीनियरिंग कॉलेज, समस्त राजकीय एवं निजी पॉलीटेक्निक कॉलेज समस्त राजकीय एवं निजी मेडिकल एवं नर्सिंग कॉलेज, समस्त राजकीय, निजी महाविद्यालय आदि के विद्यार्थी पर योजना लागू होगी।

4. योजना हेतु विद्यार्थी की परिभाषाः-

विद्यार्थी से तात्पर्य घटना के दिन राजस्थान स्थित किसी भी अनुदानित एवं गैर अनुदानित विद्यालय महाविद्यालय एवं शिक्षण संस्थान के नामांकन पंजिका में दर्ज विद्यार्थी से है। अनुदानित विद्यालयों एवं महाविद्यालयों के विद्यार्थी एवं निजी संस्थाओं में अध्ययनरत विद्यार्थी जिनका प्रीमियम शिक्षण संस्था द्वारा इस विभाग को प्रेषित किया गया है एवं शिक्षण संस्था द्वारा विभाग को प्रेषित सूची में जिनके नाम का उल्लेख है, योजना के अन्तर्गत शामिल है।

5. योजनान्तर्गत देय लाभ-

विद्यार्थी सुरक्षा दुर्घटना बीमा योजना के अन्तर्गत दुर्घटना में विद्यार्थी की मृत्यु अथवा अन्य शारीरिक क्षति की दशा में योजना के प्रावधानों के अनुसार भुगतान किया जाएगा। योजना के अन्तर्गत दुर्घटना में हुई क्षति का आशय किसी ऐसी शारीरिक चोट से है, जो बाह्य, हिंसात्मक एवं दृश्य माध्यम (External Voilent Visible Means) द्वारा लगी हो। शारीरिक चोट संदर्भित दुर्घटना से ही उत्पन्न हुई होनी चाहिए एवं दुर्घटना से पूर्व अस्तित्व में नहीं होनी चाहिए। स्पष्टतः योजना के अन्तर्गत केवल उन्हीं प्रकरणों पर विचार किया जाएगा। जिनमें मृत्यु अथवा शारीरिक क्षति दुर्घटना से उत्पन्न हुई है। यह स्पष्ट किया जाता है कि मृत्यु/क्षति सीधा संबंध (Proximate Cause) दुर्घटना से होना चाहिए। विद्यार्थी सुरक्षा दुर्घटना बीमा योजना लाभ मृत्यु होने अथवा निम्न प्रकार की क्षति होने पर देय होगाः-

| क्र.सं. | दुर्घटना में हुई क्षति का प्रकार | दुर्घटना पर देय लाभ/बीमाधन | |
|---|---|---|---|
| | | श्रेणी प्रथम (प्रीमियम 50/-) | श्रेणी द्वितीय (प्रीमियम25/-) |
| 1. | दुर्घटना में मृत्यु हो जाने पर | 100000 रुपये | 50000 रुपये |
| 2. | दुर्घटना में दोनों हाथों या दोनों पैरों या दोनों आँखों या एक हाथ एवं एक आँख अथवा एक पैर एक आँख अथवा एक पैर एवं एक हाथ की क्षति पर | 100000 रुपये | 50000 रुपये |
| 3. | दुर्घटना में एक हाथ अथवा एक एक पैर अथवा एक आँख की क्षति पर | 50000 रुपये | 25000 रुपये |
| 4. | उपर्युक्त क्षति के अलावा अन्य प्रकार की शारीरिक क्षति से बीमाकृत विद्यार्थी के सम्पूर्ण रूप से अयोग्य होने की दशा में | 100000 रुपये | 50000 रुपये |
| 5. | आंशिक क्षति की दशा में<br>(अ) श्रवण शक्ति की क्षति की दशा में-<br>1. श्रवण शक्ति की पूर्ण क्षति (दोनों कानों की पूर्ण क्षति)<br>2. श्रवण शक्ति की क्षति (एक कान की पूर्ण क्षति)<br>(ब) एक हाथ के अंगूठे एवं अंगुलियों की क्षतिः-<br>1. एक हाथ के अंगूठे एवं चारों अंगुलियों की क्षति (समस्त अंगुलियों की क्षति)<br>2. एक हाथ के अंगूठे के अतिरिक्त चारों अंगुलियों की क्षति (समस्त अंगुलस्थियों की क्षति)<br>(स) हाथ के अंगूठे की क्षतिः-<br>1. हाथ के अंगूठे की क्षति (दोनों अंगुलस्थियों की क्षति) | <br><br>50000 रुपये<br>15000 रुपये<br><br>4000 रुपये<br><br>35000 रुपये | <br><br>25000 रुपये<br>7500 रुपये<br><br>2000 रुपये<br><br>17500 रुपये |

| | | | |
|---|---|---|---|
| | 2. हाथ के अंगूठे की क्षति (एक अंगुलस्थी की क्षति) | 25000 रुपये | 12500 रुपये |
| | (द) हाथ के अंगूठे के अतिरक्त अन्य अंगुलियों की क्षति | 10000 रुपये | 5000 रुपये |
| | 1. किसी भी अंगुली की समस्त अंगुलस्थियों की क्षति पर | 10000 रुपये | 5000 रुपये |
| | 2. किसी भी अंगुली की दो अंगुलस्थियों की क्षति पर | 8000 रुपये | 4000 रुपये |
| | 3. किसी भी अंगुली की एक अंगुलस्थी की क्षति पर | 4000 रुपये | 2000 रुपये |
| | (य) पाँव के अंगूठे एवं अंगुलियों की क्षति की दशा में | | |
| | i. दोनों पाँवों की समस्त पाँवांगुलियों की क्षति (समस्त अंगुलस्थियों की क्षति) | 20000 रुपये | 10000 रुपये |
| | ii. पाँव के एक अंगूठे की क्षति (दोनों अंगुलस्थियों की क्षति) | 5000 रुपये | 2500 रुपये |
| | iii. पाँव के एक अंगूठे की क्षति (एक अंगुलस्थी की क्षति) | 2000 रुपये | 1000 रुपये |
| | iv. अंगूठे के अतिरिक्त पाँव की एक अथवा अधिक अंगुलियों की क्षति (दोनों अंगुलस्थियों की क्षति) | 1000 रुपये प्रति अंगुली | 500 रुपये प्रति अंगुली |
| 6. | जलने पर क्षति- | | |
| | i. 50 प्रतिशत या अधिक जलने पर | 50000 रुपये | 25000 रुपये |
| | ii. 40 प्रतिशत से अधिक किन्तु 50 प्रतिशत से कम जलने पर | 40000 रुपये | 20000 रुपये |
| | iii. 30 प्रतिशत से अधिक किन्तु 40 प्रतिशत से कम जलने पर | 30000 रुपये | 15000 रुपये |
| 7. | दुर्घटना के कारण आयी चोट के परिणामस्वरूप 24 घण्टे से अधिक चिकित्सालय (सरकारी या प्राइवेट) में भर्ती रहने पर संबंधित डॉक्टर या चिकित्सा अधिकारी के प्रमाण-पत्र एवं दवाई के बिल प्रस्तुत करने पर निम्नानुसार लाभ देय है। | 5000 रुपये | 5000 रुपये |
| नोट | उक्त योजना में पॉलिसी अवधि के अन्तर्गत निम्न राशि से अधिक लाभ देय नहीं होगा। | 100000 रुपये | 50000 रुपये |

इस योजना के अन्तर्गत हाथ की क्षति से आशय कलाई अथवा इसके ऊपर से पार्थक्य होने से है। इसी प्रकार पैर की क्षति से आशय पैर की एड़ी अथवा इसके ऊपर से पार्थक्य होने से है।

6. योजना के अपवर्जन

योजना के अन्तर्गत प्राकृतिक रूप से या बीमारी के कारण से होने वाली मृत्यु अथवा शारीरिक क्षति पर इस पॉलिसी के अन्तर्गत किसी प्रकार का लाभ देय नहीं होगा। योजना के अन्तर्गत निम्न परिस्थितियों में भी लाभ देय नहीं है-

क. हृदय गति रुक जाने से होने वाली मृत्यु अथवा अन्य क्षति।

ख. विभिन्न बीमारियों जैसे कैंसर, टी.बी. इत्यादि से होने वाली मृत्यु अथवा अन्य क्षति।

ग. आत्मक्षति, आत्महत्या या आत्महत्या का प्रयास, पागलपन अथवा किसी विद्यार्थी द्वारा नशीला द्रव्य के प्रयोग के प्रभाव से होने वाली क्षति।

घ. चिकित्सा अथवा शल्य क्रिया के दौरान होने वाली क्षति।

ङ नाभिकीय विकिरण अथवा परमाणविक अस्त्रों से होने वाली क्षति।

च. युद्ध, विदेशी आक्रमण, विदेशी शत्रु के कृत्यों, गृह युद्ध, देशद्रोह अथवा राष्ट्र विरोधी गतिविधियों से होने वाली क्षति।

छ. विद्यार्थी द्वारा आपराधिक उद्देश्य से विधि द्वारा निर्धारित कानून का उल्लंघन करते समय हुई मृत्यु अथवा क्षति।

7. विभाग के जिला कार्यालय के निर्णय से असंतुष्ट होने की स्थिति में दावेदार द्वारा निर्णय की दिनांक से 3 माह की अवधि के निर्णय के रिव्यू/रिविजन हेतु निदेशक राज्य बीमा एवं प्रा. नि. विभाग के समक्ष प्रार्थना पत्र प्रेषित किया जा सकेगा।

● (किशनाराम ईशरवाल) वरिष्ठ अतिरिक्त निदेशक, राज्य बीमा एवं प्रावधायी निधि विभाग, सा.बी.नि., जयपुर

## 6. समस्त राजकीय विद्यालयों में कार्यरत शिक्षक/कार्मिकों का विवरण मय फोटो प्रदर्शित किए जाने तथा विद्यार्थियों के छवि अवलोकन हेतु विद्यालय परिसर में दर्पण की व्यवस्था किए जाने बाबत।

● कार्यालय निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर ● क्रमांकः शिविरा/मा/निप्र/डी-I/104/II/नवाचार/2016/194 दिनांकः 08-09-2016 ● समस्त जिला शिक्षा अधिकारी माध्यमिक (प्रथम/द्वितीय) ● विषयःसमस्त राजकीय विद्यालयों में कार्यरत शिक्षक/कार्मिकों का विवरण मय फोटो प्रदर्शित किए जाने तथा विद्यार्थियों के छवि अवलोकन हेतु विद्यालय परिसर में दर्पण की व्यवस्था किए जाने बाबत। ●प्रसंगः इस कार्यालय द्वारा जारी समसंख्यक निर्देश पत्र दिनांक 10.08.2016

उपर्युक्त विषयान्तर्गत प्रासंगिक पत्र द्वारा समस्त राजकीय विद्यालयों में ''हमारे शिक्षक/कार्मिक'' शीर्षक के अन्तर्गत निर्धारित प्रारूप में समस्त शिक्षकों तथा कार्मिकों का विवरण आवक्ष चित्र सहित आगुन्तकों के लिए सहज-सुगम अवलोकनीय स्थल पर प्रदर्शित किए जाने हेतु निर्देश प्रदान किए गए हैं। इसी प्रकार विद्यार्थियों हेतु विद्यालय परिसर में सुगम स्थल पर छवि अवलोकन हेतु एक बड़े दर्पण (Mirror) की स्थाई व्यवस्था किए जाने हेतु निर्देशित किया गया है।

विभिन्न स्तरों पर विद्यालय परिवीक्षण के दौरान यह तथ्य प्रेक्षित हुआ है कि फील्ड में उपर्युक्त दोनों निर्देशों की पूर्ण पालना नहीं हुई है, जो कि खेदजनक है। अतः उक्त बाबत लेख है कि क्षेत्राधिकार के समस्त राजकीय विद्यालयों में उपर्युक्त दोनों निर्देशों की तत्काल पूर्ण पालना हेतु समस्त संस्थाप्रधानों को पाबन्द किया जाना सुनिश्चित करें। निर्देशों की सुनिश्चित पालना हेतु ब्लॉक स्तर पर नोडल केन्द्र प्रभारियों को समुचित

प्रबोधन हेतु निर्देशित कर निश्चित समयावधि में निर्देशों की शत-प्रतिशत क्रियान्विति की पालना रिपोर्ट प्राप्त कर दिनांक 30 सितम्बर 2016 तक इस कार्यालय को पूर्ण पालना सम्बन्धी अवगति प्रदान की जानी सुनिश्चित करें।

● (बी.एल. स्वर्णकार) आई.ए.एस. निदेशक माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर

## 7. प्रत्येक राजकीय माध्यमिक/उच्च माध्यमिक विद्यालय में इंटरनेट/ब्रॉड-बैण्ड कनेक्टविटी एवं कम्प्यूटर प्रिन्टर की उपलब्धता सुनिश्चित किए जाने के सम्बन्ध में।

● कार्यालय निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर ● क्रमांकः शिविरा/माध्य/मा-स/विविध/2015/360 दिनांकः 14/09/2016 ● समस्त जिला शिक्षा अधिकारी माध्यमिक शिक्षा (प्रथम/द्वितीय) ● विषयःप्रत्येक राजकीय माध्यमिक/उच्च माध्यमिक विद्यालय में इंटरनेट/ब्रॉड-बैण्ड कनेक्टविटी एवं कम्प्यूटर प्रिन्टर की उपलब्धता सुनिश्चित किए जाने के सम्बन्ध में ● प्रसंगः समसंख्यक पत्र दिनांक 23.10.2015

उपर्युक्त विषयान्तर्गत शासन से प्राप्त निर्देशों के क्रम में इस कार्यालय के प्रासंगिक पत्र द्वारा राज्य के समस्त राजकीय माध्यमिक/उच्च माध्यमिक विद्यालयों में इंटरनेट कनेक्टिविटि एवं कम्प्यूटर, प्रिन्टर की उपलब्धता सुनिश्चित किए जाने हेतु निर्देश प्रदान किए गए हैं। इसके बावजूद विद्यालय परिवीक्षण के दौरान यह तथ्य परिलक्षित हुआ है कि अनेक विद्यालयों में अभी तक अन्यान्य कारणों से इंटरनेट/ब्रॉड-बैण्ड कनेक्टिविटि एवं कम्प्यूटर, प्रिण्टर की उपलब्धता संबंधी उक्त निर्देशों की पालना नहीं हुई है।

उपर्युक्त परिप्रेक्ष्य में लेख है कि क्षेत्राधिकार के प्रत्येक राजकीय माध्यमिक/उच्च माध्यमिक विद्यालय का समुचित पर्यवेक्षण एवं व्यक्तिगत प्रबोधन कर इंटरनेट/ब्रॉड-बैण्ड कनेक्शन की उपलब्धता सुनिश्चित करावे। इस हेतु कम्प्यूटर, प्रिण्टर क्रय करने तथा मासिक व्यय पूर्ति के लिए 'RMSA से प्राप्त SFG मद' से अथवा 'विद्यालय विकास कोष'/विद्यार्थी कोष मद से किए जाने बाबत संस्था प्रधानों को समुचित मार्ग दर्शन/सम्बलन प्रदान कर आगामी 31 दिसंबर से पूर्व शासन के उपर्युक्त निर्देशों की शत-प्रतिशत क्रियान्विति संबंधी प्रमाण-पत्र अधोहस्ताक्षरकर्ता को प्रेषित किया जाना सुनिश्चित करावें। इसे सर्वोच्च प्राथमिकता प्रदान करें।

● (बी.एल. स्वर्णकार) आई.ए.एस. निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर।

## 8. मेधावी छात्र-छात्राओं को छात्रवृत्ति स्वीकृत किए जाने के संबंध में आवेदन आमंत्रित।

### :: विज्ञप्ति ::

● अखिल भारतीय सेवाएं (राजस्थान) पेंशनर्स एसोसिएशन, जयपुर दिनांक 16 अगस्त, 2016 ● विषयः मेधावी छात्र-छात्राओं को छात्रवृत्ति स्वीकृत किए जाने के संबंध में आवेदन आमंत्रित।

अखिल भारतीय सेवाएं (राजस्थान) पेंशनर्स समिति सेवानि, आई.ए.एस., आई.पी.एस एवम् आई.एफ.एस. अधिकारियों की एक रजिस्टर्ड संस्था है। संस्था ने सामाजिक सेवा क्षेत्र में कार्य करने हेतु अपने सदस्यों से सहयोग से सामाजिक कोष की स्थापना की है। संस्था इस कोष में राजस्थान सरकार, राजस्थान सरकार के उपक्रमों, भारत सरकार एवम् भारत सरकार के उपक्रमों में तृतीय एवं चतुर्थ श्रेणी पदों से सेवानिवृत्त, कर्मचारियों के प्रतिभावान छात्र/छात्राओं को छात्रवृत्ति के रूप में सहयोग करना चाहती है, जिसके लिए यह योजना बनाकर प्रकाशित की जा रही है।

छात्रवृत्ति स्वीकृति हेतु निम्नलिखित शर्तें एवं प्रक्रिया निर्धारित की जाती हैः-

1. छात्र/छात्रा के अभिभावक राजस्थान सरकार, भारत सरकार अथवा राजस्थान सरकार अथवा भारत सरकार के उपक्रमों के सेवानिवृत्त कर्मचारी (तृतीय एवं चतुर्थ श्रेणी सेवा से) होने चाहिए तथा अभिभावक की वार्षिक आय रु. 2 लाख (दो लाख) से अधिक न हो।
2. छात्र/छात्रा ने बोर्ड/यूनिवर्सिटी परीक्षा 70 प्रतिशत अंकों से उत्तीर्ण की हो।
3. छात्रवृत्ति टेक्निकल/प्रोफेशनल पाठ्यक्रम यथा मेडिकल, इंजीनियरिंग एम.बी.ए, विधि, फैशन टेक्नोलॉजी, फूड क्राफ्ट ग्राफिक्स, मास कम्युनिकेशन आदि पाठ्यक्रमों में अध्ययनरत छात्र/छात्राओं को देय होगी।
4. छात्रवृत्ति की राशि अनुदान स्वरूप यथासंभव एकमुश्त स्वीकृत की जाएगी।
5. इच्छुक छात्र/छात्रा जो उपर्युक्त पात्रता रखते हों, अपने आवेदन-पत्र संलग्न प्रारूप में संस्था के उपर्युक्त अंकित कार्यालय में दिनांक **31.10.2016** तक भिजवा सकते हैं।

छात्रवृत्ति की राशि रुपये 10000/- चैक द्वारा छात्र/छात्रा के पते पर भेजी जावेगी।

यह योजना सामाजिक सेवा का प्रयास है तथा केवल आवेदन करने एवं पात्रता रखने से छात्रवृत्ति प्राप्त करने का किसी का अधिकार स्थापित नहीं करेगा। किसी भी विवाद की स्थिति में संस्था का निर्णय अंतिम होगा। अधिक जानकारी के लिए संस्था के कार्यालय में कार्यदिवस पर प्रातः 11:00 बजे से 1:00 बजे तक सम्पर्क किया जा सकता है।

**छात्रवृत्ति आवेदन पत्र**

1. छात्र/छात्रा का पूरा नाम.....
2. छात्र/छात्रा के माता का नाम.....
3. छात्र/छात्रा के पिता का नाम.....
4. निवास पत्र व्यवहार का पता.....
5. ईमेल, टेलीफोन नं. एवम् मोबाइल नं.....
6. आवेदक की जन्म तिथि.....
7. आवेदक की शैक्षणिक योग्यता (गत बोर्ड/यूनिवर्सिटी परीक्षा परिणाम की फोटोकॉपी संलग्न करें।)
8. पाठ्यक्रम का नाम एवं विवरण जिसमें अध्ययन कर रहा है, मय शिक्षण संस्थान का नाम-

   .....
9. आवेदक के पिता/माता का नाम तथा राजकीय सेवा का पद जिससे

सेवानिवृत्ति हुए-

.....

10. आवेदक के पिता/माता की वार्षिक आय (पेंशन भुगतान आदेश की फोटो प्रति लगावें)

.....

11. अन्य किसी स्रोत से अगर वित्तीय सहायता प्राप्त है तो उसका विवरण देवें।.....

12. अन्य कोई सूचना जो आवेदक देना चाहे।

.....

प्रमाणित किया जाता है कि उपर्युक्त सूचना मेरी जानकारी के अनुसार सही है।

हस्ताक्षर छात्र/छात्रा

शिक्षण संस्थान द्वारा प्रमाणीकरण

प्रमाणित किया जाता है कि श्री/सुश्री.....पुत्र/पुत्री श्री ..... इस संस्थान में.....पाठ्यक्रम के वर्ष/सेमेस्टर में अध्ययन कर रहा/रही है तथा इसके द्वारा दी गई उपर्युक्त सूचना सही है।

शिक्षण संस्थान प्रमुख के
हस्ताक्षर मय सील

## 9. विद्यमान अधिकारी/कर्मचारियों की नियमित पदोन्नति के फलस्वरूप वेतन निर्धारण के सम्बन्ध में।

● कार्यालय निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर ● क्रमांक : शिविरा/माध्य/स्थिरी/34810/06/2016 दिनांक 21.09.2016 ● समस्त उपनिदेशक माध्यमिक शिक्षा, समस्त जिला शिक्षा अधिकारी माध्यमिक शिक्षा ● परिपत्र ● विषय : विद्यमान अधिकारी/कर्मचारियों की नियमित पदोन्नति के फलस्वरूप वेतन निर्धारण के सम्बन्ध में।

जिला शिक्षा अधिकारियों द्वारा पदोन्नति के फलस्वरूप वेतन निर्धारण सम्बन्धी जारी आदेशों के अवलोकन व इस सम्बन्ध में बार-बार माँगे जा रहे दिशा निर्देशों के सम्बन्ध में यह स्पष्ट किया जाता है कि किसी भी विद्यमान अधिकारी/कर्मचारी की विभागीय पदोन्नति समिति द्वारा रिक्त पद के विरुद्ध नियमित पदोन्नति हो जाने के फलस्वरूप सम्बन्धित अधिकारी/कर्मचारी का (चालू वेतन बैंड से एक ग्रेड वेतन से दूसरे में पदोन्नति हो जाने पर) विद्यमान चालू वेतन बैंड और ग्रेड वेतन में वेतन वृद्धि की राशि 3 प्रतिशत के बराबर एक वेतन वृद्धि सगणित की जावे तथा पदोन्नति पद के ग्रेड-पे की अन्तर राशि स्वीकृत की जावे। समस्त कार्यालयाध्यक्ष एवं आहरण वितरण अधिकारियों को निर्देशित किया जाता है कि विद्यमान अधिकारी/कर्मचारी की नियमित पदोन्नति पर राजस्थान सिविल सेवा (पुनरीक्षित वेतन) नियम-2008 के नियम-24(i) के अनुसार ही वेतन निर्धारण किया जावे। समस्त कार्यालयाध्यक्ष आहरण एवं वितरण अधिकारियों को निर्देशित किया जाता है कि राजस्थान सिविल सेवा नियम-2008 के नियम-24 (i) के प्रतिकूल नियमित पदोन्नति पर निर्धारित/स्वीकृत अधिक वेतन राशि की तत्काल प्रभाव से वसूली सुनिश्चित करें। वसूली के सम्बन्ध में जारी किए गए आदेशों व राशि के सम्बन्ध में प्रगति रिपोर्ट अधोहस्ताक्षरकर्ता को 15 दिन में अनिवार्य रूप से प्रस्तुत करें।

●वित्तीय सलाहकार, माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर

## 10. दिनांक : 01.10.2016 से विद्यालय समय संचालन परिवर्तन के सम्बन्ध में।

● कार्यालय निदेशक, माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर ● क्रमांक : शिविरा-माध्य/मा-स/22418/शिविरा पंचांग/2016-17/278 दिनांक: 27.09.16 ● समस्त जिला शिक्षा अधिकारी, माध्यमिक/प्रारम्भिक शिक्षा (प्रथम/द्वितीय) ● विषय : दिनांक : 01.10.2016 से विद्यालय समय संचालन परिवर्तन के सम्बन्ध में। ●प्रसंग : समसंख्यक पत्र दिनांक : 27.06.2016

उपर्युक्त विषयान्तर्गत प्रासंगिक पत्र के संलग्न विस्तृत शिविरा पंचांग : 2016-17 प्रेषित किया जा चुका है। पूर्व प्रेषित पंचांग की पालना में दिनांक : 01.10.2016 से 31.03.2017 तक क्षेत्राधिकार के समस्त विद्यालयों में विद्यालय संचालन निम्न विवरणानुसार करवाया जाना सुनिश्चित करें :-

**1. एक पारी विद्यालयों हेतु :-**

| क्र.सं. | विवरण | विद्यालय संचालन हेतु निर्धारित समय |
|---|---|---|
| 1 | समयावधि | 01 अक्टूबर से 31 मार्च |
| 2 | विद्यालय समय (संस्था प्रधान हेतु) | 09.20 बजे से 03.40 बजे तक ( कुल 6:20 घंटे ) |
| 3 | विद्यालय समय (शिक्षकों हेतु) | 09.30 बजे से 03.40 बजे तक (कुल 6:10 घंटे) |
| 4 | विद्यालय समय (विद्यार्थियों हेतु) | 09.35 बजे से 03.40 बजे तक (कुल 6:05 घंटे) |

**2. दो पारी विद्यालयों हेतु :-**

| क्र.सं. | विवरण | विद्यालय संचालन हेतु निर्धारित समय |
|---|---|---|
| 1 | समयावधि | 01 अक्टूबर से 31 मार्च |
| 2 | विद्यालय समय | प्रात: 07.30 बजे से 05.30 बजे तक ( प्रत्येक पारी 5:00 घंटे ) |

● (बी.एल.स्वर्णकार) आई.ए.एस., निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर

## 11. भारत सरकार की ई-मेल नीति के अनुसार सरकारी पत्राचार हेतु भारत सरकार की कार्यान्वयन एजेंसी द्वारा प्रदान की जाने वाली ई-मेल सेवाओं का इस्तेमाल किए जाने बाबत।

● कार्यालय, निदेशक, माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर ● क्रमांक : शिविरा/माध्य/कम्प्यूटर/DoIT&C/50619/2015-16 दिनांक : 11.08.16 ● 1. समस्त उपनिदेशक (माध्यमिक/प्रारम्भिक)

2. समस्त जिला शिक्षा अधिकारी (माध्य-प्रथम/द्वितीय/प्रारम्भिक) 3. जिला शिक्षा अधिकारी (विधि-जोधपुर/जयपुर) ● विषय : भारत सरकार की ई-मेल नीति के अनुसार सरकारी पत्राचार हेतु भारत सरकार की कार्यान्वयन एजेंसी द्वारा प्रदान की जाने वाली ई-मेल सेवाओं का इस्तेमाल किए जाने बाबत। ● प्रसंग : भारत का राजपत्र (The Gazette of India), नई दिल्ली, 18 फरवरी 2015

उपर्युक्त विषयान्तर्गत एवं प्रासंगिक पत्र के क्रम में निर्देशानुसार सरकार में संचार के लिए ई-मेल का उपयोग एक प्रमुख माध्यम के रूप में किया जाता है। विभागीय ई-मेल में विभागीय महत्वपूर्ण सूचना तथा निर्देशों का संचालन होता है अतः उक्त मेल को गोपनीय तथा महत्वपूर्ण होती है।

नीति के उद्देश्यनुसार यह सुनिश्चित करना है कि सरकारी ई-मेल सेवाओं का इसके प्रयोक्ताओं द्वारा सुरक्षित अभिगम और इस्तेमाल किया जाए। प्रयोक्ताओं की यह जिम्मेदारी होगी की वे इन संसाधनों का इस्तेमाल दक्षतापूर्वक, प्रभावी ढंग से, विधिमान्य और सैद्धांतिक ढंग से करेंगे।

संलग्न सूची में माध्यमिक शिक्षा विभाग के समस्त कार्यालयों के ई-मेल आई.डी. एवं पासवर्ड भेजे जा रहे हैं। सुविधानुसार पासवर्ड तुरंत बदल लेवें। दिनांक 15 अगस्त 2016 से समस्त कार्यालय आवंटित मेल एड्रैस की ही दैनिक राजकीय सूचनाओं का आदान प्रदान करने एवं राजकीय पोर्टल सम्बंधित कार्यों में उपयोग करेंगे।

**ई-मेल खोलने की प्रक्रिया :-**

Type on address bar-→https://mail.rajasthan.gov.in-ऊपर दिए गए screen शॉट के रूप में वेब पेज खुलेगा---→log इन id एवं पासवर्ड लिख कर साइन-इन करें।

संलग्न : उपर्युक्तानुसार

● (अरुण शर्मा) सिस्टम एनालिस्ट, कम्प्यूटर अनुभाग, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर

**Directorate of Secondary Education, Rajasthan, Bikaner**

| S.No | Name of the Officer | Designation | New e-mail add. of the office |
|---|---|---|---|
| 1 | Sh.B.L.Swarnkar | Director | dir.dse@rajasthan.gov.in |
| 2 | Jagdish Prasad Swami (CH) | Additional Director | adir.dse@rajasthan.gov.in |
| 3 | Jagdish Prasad Swami | Financial Adviser | fa.dse@rajasthan.gov.in |
| 4 | Hari Prakash Dandor | Joint Director(ADM) | jd.adm.dse@rajasthan.gov.in |
| 5 | Arun Sharma | System Analist(Computer Section) | sa.dse@rajasthan.gov.in |
| 6 | Mool Chand Meena | Dy.Director(Planning) | dd.plan.dse@rajasthan.gov.in |
| 7 | Subhash Chand Mahlawat | Dy.Director(Adm.) | dd.adm.dse@rajasthan.gov.in |
| 8 | Prakash Chand Jatoliya | Dy.Director(Social Education) | dd.soedu.dse@rajasthan.gov.in |
| 9 | Mool Chand Meena | Dy.Director(Statistics) | dd.stat.dse@rajasthan.gov.in |
| 10 | Hari Prakash Dandor | Dy.Director(Sports) | dd.sports.dse@rajasthan.gov.in |
| 11 | Ramesh Ranga | D.E.O(Training) | deo.trg.dse@rajasthan.gov.in |
| 12 | Prakash Chand Jatolia | Sr.Aditor"SHIVIRA" | shivira.dse@rajasthan.gov.in |
| 13 | Mool Chand Meena | D.E.O (L.M) | deo.lm.dse@rajasthan.gov.in |
| 14 | Mool Chand Meena | D.E.O (Adarsh Vidyalay-Shala Darpan) | deo.avn.dse@rajasthan.gov.in |
| 15 | Mool Chand Meena | D.E.O (Scholarship) / DBT/ Assembly | deo.scholar.dse@rajasthan.gov.in |
| 16 | Ramesh kumar Harsh | Staff Officer | so.dse@rajasthan.gov.in |
| 17 | Krishnkant Atre | Asstt.Director(G.A.D) | ad.gad.dse@rajasthan.gov.in |
| 18 | Arun Kr.Sharma | Asstt.Director(Secondary) | ad.secondary.dse@rajasthan.gov.in |
| 19 | Kailash SinghUjjwal | Asstt.Director(Estt-"A") | ad.esttab.dse@rajasthan.gov.in |
| 20 | Satish Kumar Mathur | Estt.Officer (Estt-"B") | ad.esttab.dse@rajasthan.gov.in |
| 21 | Gyan Roop Rai Mathur | Adm.Officer (Estt-"B") | ad.esttab.dse@rajasthan.gov.in |
| 22 | Ramesh Ranga | Asstt.Director(Estt-"C"-1) | ad.esttc.dse@rajasthan.gov.in |
| 23 | Satish Chand Mathur | Asstt.Director(Estt-"B") | ad.esttc.dse@rajasthan.gov.in |
| 24 | Mool Chand Gahlot | Asstt.Director(Estt-"C") | ad.esttc.dse@rajasthan.gov.in |
| 25 | Mool Chand Gahlot | Asstt.Director(Estt-"C"-3) | ad.esttc.dse@rajasthan.gov.in |
| 26 | Suraj Ratan Soni | Asstt.Director(Estt-"C"-4) | ad.esttc.dse@rajasthan.gov.in |
| 27 | Sharda H.L. Dhaka | Asstt.Director(Estt-"F") | ad.esttf.dse@rajasthan.gov.in |
| 28 | Subhash Chand Mahlawat | Asstt.Director(Planning) | ad.plan.dse@rajasthan.gov.in |

| | | | |
|---|---|---|---|
| 29 | Sunita Chawla | Asstt.Director(Social Education) | ad.soedu.dse@rajasthan.gov.in |
| 30 | Ramesh Ranga | Asstt.Director(Training) | ad.trg.dse@rajasthan.gov.in |
| 31 | Anurag Saxena | Asstt.Director(Dept.Enquiry) | ad.deptenq.dse@rajasthan.gov.in |
| 32 | Rajendra Prasad Meel | Asstt.Director(Shala Darpan) | ad.shaladarpan.dse@rajasthan.gov.in |
| 33 | Jogendra Kumar | Adm.Officer(A.C.R) | ad.acr.dse@rajasthan.gov.in |
| 34 | Ramesh Chand | Adm.Officer(RD) | ad.rd.dse@rajasthan.gov.in |
| 35 | Giriraj Tiwari | Adm.Officer(Seniority) | ad.seniority.dse@rajasthan.gov.in |
| 36 | Sanjay Senger | Asstt.Director(Sampark/Sugam) | ad.sugam.dse@rajasthan.gov.in |
| 37 | Sandeep Bhargav | Asstt.Director(Monitoring ) | ad.monitoring.dse@rajasthan.gov.in |
| 38 | Arun Kumar | Asstt.Director(RTE) | ad.rte.dse@rajasthan.gov.in |
| 39 | Bhawani Sankar Harsh | Asstt.Director(VIGGI.) | ad.viggi.dse@rajasthan.gov.in |
| 40 | JaganNath Panwar | Asstt.Director(RTI) | ad.rti.dse@rajasthan.gov.in |
| 41 | Sanjay Senger | Asstt.Director(Scholarship) | ad.sship.dse@rajasthan.gov.in |
| 42 | Pallav Mukherjee | Section Officer-Computer | sa.dse@rajasthan.gov.in |
| 43 | Narendra Gupta | Sr.Dy.D.E.O(PhyEdu) | deo.phyedu.dse@rajasthan.gov.in |
| 44 | Goma Ram Jeengar | Asstt.Director(Shivira) | ad.shivira.dse@rajasthan.gov.in |
| 45 | Mukesh Vyas | Co-Editor (Shivira) | shivira.dse@rajasthan.gov.in |
| 46 | Narendra Gupta | Asstt.Director(Legal) | ad.legal.dse@rajasthan.gov.in |
| 47 | RamKishan Sharma | A.L.R (Legal) | alr.dse@rajasthan.gov.in |
| 48 | Mahendra Choudhary | S.L.O (Legal) | slo.dse@rajasthan.gov.in |
| 49 | SatyaPrakash Sukla | Statistical Officer | statoffi.dse@rajasthan.gov.in |
| 51 | Manoj Tanwar | A.O. (Pension & Fix D-2)) | ao.pension.dse@rajasthan.gov.in |
| 52 | Mahesh Kulheri | A.O. (Budjet & Schoolarship) | ao.budjet.dse@rajasthan.gov.in |
| 53 | Vishnu Prasad Pareek | A.A.O. Audit (AG/ D-4) | ao.audit.dse@rajasthan.gov.in |
| 54 | Jugal Kishor Purohit | A.A.O (Cash & Store) | aao.cash.dse@rajasthan.gov.in |
| 55 | Bhagwana Ram Joshi | A.A.O (Grant-in-Aid)) | aao.gia.dse@rajasthan.gov.in |
| 56 | Nutan Harsh | A.A.O (Budjet/Scholarship) | ao.budjet.dse@rajasthan.gov.in |
| 57 | Kuldeep Sing Panwar | A.A.O (Audit-AG) / ESTT-FA | aao.ag.dse@rajasthan.gov.in |
| 58 | Hari Ram Verma | P.S.To-Director | dir.dse@rajasthan.gov.in |
| 59 | Pankaj Bhatnagar | PA To Director | dir.dse@rajasthan.gov.in |
| 60 | Pawan Modi | PA to Additional Director | adir.dse@rajasthan.gov.in |
| 61 | Suresh Purohit | PA to Financial Advisor | fa.dse@rajasthan.gov.in |
| 62 | Puneet Srivastava | Samanvay Kaksh (prabhari) | secedujpr.dse@rajasthan.gov.in |
| 63 | Vishnu Datt Swami | Jaipur Deputy Director | dd.jpr.dse@rajasthan.gov.in |
| 64 | Mamta Dadhich | Jounior Deputy Director | ddj.dse@rajasthan.gov.in |
| 65 | Vishnu Dutt Swami | D.E.O Jaipur-I | deo.jaipur1.dse@rajasthan.gov.in |
| 66 | Laxmi Narayan Pareek | D.E.O Jaipur-II | deo.jaipur2.dse@rajasthan.gov.in |
| 67 | Omprakash Sharma | D.E.O Alwar-I | deo.alwar1.dse@rajasthan.gov.in |
| 68 | Man Mohan Sharma | D.E.O Alwar-II | deo.alwar2.dse@rajasthan.gov.in |
| 69 | Premwati Sharma | D.E.O Dausa | deo.dausa.dse@rajasthan.gov.in |
| 70 | Giriraj Prasad Gupta | Legal Jaipur | deo.legaljpr.dse@rajasthan.gov.in |
| 71 | Nutan Bala Kapila | Jodhpur Deputy Director | dd.jod.dse@rajasthan.gov.in |
| 72 | Dineshwar Purohit | D.E.O Jodhpur-I | deo.jod1.dse@rajasthan.gov.in |
| 73 | Laxmi Devi | D.E.O Jodhpur-II | deo.jod2.dse@rajasthan.gov.in |

| | | | |
|---|---|---|---|
| 74 | Goverdhan Lal | D.E.O Barmer | deo.barmer.dse@rajasthan.gov.in |
| 75 | Pratap Singh-Ele(IC) | D.E.O Jaisalmer | dep.jai.dse@rajasthan.gov.in |
| 76 | Smt.DevLata | Legal -Jodhpur | deo.legaljod.dse@rajasthan.gov.in |
| 77 | Bharat Kumar Mehta | Pali Deputy Director | dd.pali.dse@rajasthan.gov.in |
| 78 | Naval Singh Rathore | D.E.O Pali | deo.pali.dse@rajasthan.gov.in |
| 79 | Ganpat Lal Meena | D.E.O Sirohi | deo.sirohi.dse@rajasthan.gov.in |
| 80 | Shyam Sunder Solanki | D.E.O Jalore | deo.jalore.dse@rajasthan.gov.in |
| 81 | Gayatri Devi Parjapati | Churu Deputy Director | dd.churu.dse@rajasthan.gov.in |
| 82 | Mahaveer Punia | D.E.O Churu | deo.churu.dse@rajasthan.gov.in |
| 83 | Izahar Ahmed Khan | D.E.O Jhunjhunu | deo.jhunjhunu.dse@rajasthan.gov.in |
| 84 | Rekha Ram | D.E.O Sikar-1 | deo.sikar1.dse@rajasthan.gov.in |
| 85 | Dayal Singh Yadav | D.E.O Sikar-1I | deo.sika2.dse@rajasthan.gov.in |
| 86 | Omprakash Saraswat | Bikaner Deputy Director | dd.bikaner.dse@rajasthan.gov.in |
| 87 | Hamendra Kumar Upadhya | D.E.O Bikaner | deo.bikaner.dse@rajasthan.gov.in |
| 88 | Mange Lal Budania | D.E.O SriGanganagar | deo.gan.dse@rajasthan.gov.in |
| 89 | Mohan Lal | D.E.O Hanumangarh | deo.han.dse@rajasthan.gov.in |
| 90 | Vishnu Prasad Paneri | Udaipur Deputy Director | dd.udaipur.dse@rajasthan.gov.in |
| 91 | Vinita Vohara | SIERT Director,Udaipur | director.siert@rajasthan.gov.in |
| 92 | Shiv ji Gaur (IC) | D.E.O Udaipur-I | deo.udaipur1.dse@rajasthan.gov.in |
| 93 | Shiv ji Gaur | D.E.O Udaipur-II | deo.udaipur2.dse@rajasthan.gov.in |
| 94 | Prem ji Patidar | D.E.O Banswara | deo.banswara.dse@rajasthan.gov.in |
| 95 | Prabhu Lal Meena | D.E.O Dungarpur | deo.dungarpur.dse@rajasthan.gov.in |
| 96 | Shanti Lal Suthar-(IC) | D.E.O Chittorgarh | deo.chittor.dse@rajasthan.gov.in |
| 97 | Madhu Sudan Vyas | D.E.O Rajsamand | deo.rajsamand.dse@rajasthan.gov.in |
| 98 | Kailash Chandra Joshi | D.E.O Pratapgarh | deo.pgh.dse@rajasthan.gov.in |
| 99 | Subhash Sharma-Ele(IC) | Kota Deputy Director | dd.kota.dse@rajasthan.gov.in |
| 100 | Radhye Shayam Sharma | D.E.O kota | deo.kota.dse@rajasthan.gov.in |
| 101 | Paras Chand Jain | D.E.O Bundi | deo.bundi.dse@rajasthan.gov.in |
| 102 | Surender Singh Gaur | D.E.O Jhalawar | deo.jhalawar.dse@rajasthan.gov.in |
| 103 | Shahid M. Khan | D.E.O Baran | deo.baran.dse@rajasthan.gov.in |
| 104 | Jiv Raj Jat-(IC) | Ajmer Deputy Director | dd.ajmer.dse@rajasthan.gov.in |
| 105 | Sushil Kumar Gehlot | D.E.O Ajmer -1 | deo.ajmer1.dse@rajasthan.gov.in |
| 106 | Deepak Johri | D.E.O Ajmer -2 | deo.ajmer2.dse@rajasthan.gov.in |
| 107 | Gheesa Lal Sharma | D.E.O Bhilwara-1 | deo.bhilwara1.dse@rajasthan.gov.in |
| 108 | Madan Mohan Pareek | D.E.O Bhilwara - II | deo.bhilwara2.dse@rajasthan.gov.in |
| 109 | Ramesh Chand Jain | D.E.OTonk | deo.tonk.dse@rajasthan.gov.in |
| 110 | Sita Ram Garg | D.E.O Nagaur-I | deo.nagaur1.dse@rajasthan.gov.in |
| 111 | Beni Gopal Vyas | D.E.O Nagaur-II | deo.nagaur2.dse@rajasthan.gov.in |
| 112 | Ganesh Kumar Dhakre(IC) | Bharatpur -Deputy Director | dd.bha.dse@rajasthan.gov.in |
| 113 | Kailash Chand Yadav | D.E.O Bharatpur -I | deo.bha1.dse@rajasthan.gov.in |
| 114 | Bansi Dhar Gurjar | D.E.O Bharatpur -II | deo.bha2.dse@rajasthan.gov.in |
| 115 | Mukesh Kumar Sharma | D.E.O Dholpur | deo.dholpur.dse@rajasthan.gov.in |
| 116 | Panchu Ram Saini | D.E.O Karauli | deo.karauli.dse@rajasthan.gov.in |
| 117 | Omprakash Mudgal | D.E.O S Madhopur | deo.saw.dse@rajasthan.gov.in |

| अक्टूबर 2016 | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| रवि | 30 | 2 | 9 | 16 | 23 |
| सोम | 31 | 3 | 10 | 17 | 24 |
| मंगल | | 4 | 11 | 18 | 25 |
| बुध | | 5 | 12 | 19 | 26 |
| गुरु | | 6 | 13 | 20 | 27 |
| शुक्र | | 7 | 14 | 21 | 28 |
| शनि | 1 | 8 | 15 | 22 | 29 |

**अक्टूबर 2016 ● कार्य दिवस–13, रविवार–5, अवकाश–13, उत्सव–2 ● 1 अक्टूबर**–नवरात्रि स्थापना (अवकाश) **विद्यालय समय परिवर्तन–1.** एक पारी विद्यालय–विद्यार्थियों हेतु प्रात: 09.35 से 3.40 बजे तक। (शिक्षकों हेतु प्रात: 9.30 से 3.40 बजे तक, संस्था प्रधान हेतु प्रात: 9.20 से 3.40 बजे तक) **2.** दो पारी विद्यालय–प्रात: 7.30 से सायं 5.30 बजे तक (प्रत्येक पारी 5.00 घंटे)। **2 अक्टूबर**–गाँधी जयंती व शास्त्री जयंती (उत्सव)। **3 से 6 अक्टूबर**–तृतीय समूह की जिला स्तरीय विद्यालयी खेलकूद प्रतियोगिताओं का आयोजन। **7 से 10 अक्टूबर**–द्वितीय परख। **9 अक्टूबर**–दुर्गाष्टमी (अवकाश)। **11 अक्टूबर**– विजयादशमी (अवकाश)। **12 अक्टूबर**–मोहर्रम (अवकाश–चन्द्र दर्शनानुसार)। **14 से 16 अक्टूबर**–संभाग स्तरीय केजीबीवी खेलकूद एवं सांस्कृतिक प्रतियोगिताओं का आयोजन करना। **14 से 19 अक्टूबर**–तृतीय समूह की राज्य स्तरीय विद्यालयी खेलकूद प्रतियोगिताओं का आयोजन। **15 अक्टूबर**–विश्व हाथ धुलाई दिवस का विद्यालयों में आयोजन। **20 से 21 अक्टूबर**–राज्यस्तरीय शैक्षिक सम्मेलन। **22 अक्टूबर से 2 नवम्बर**–मध्यावधि अवकाश। **24 अक्टूबर**–संयुक्त राष्ट्र संघ दिवस (उत्सव)। **24 से 26 अक्टूबर–1.** जिला स्तरीय ''जीवन कौशल विकास मेला'' आयोजन–माध्यमिक कक्षाओं हेतु (RMSA)। **2.** राज्य स्तरीय कला उत्सव का आयोजन (RMSA)। **30 अक्टूबर**–दीपावली अवकाश। **31 अक्टूबर– 1.** गोवर्धन पूजा (अवकाश) **2.** इन्दिरा गाँधी पुण्य तिथि (संकल्प दिवस) **3.** श्रेष्ठ राजकीय विद्यालय पुरस्कार 2016 के प्रस्तावों की समीक्षा कर मण्डल अधिकारी द्वारा निदेशक, माध्यमिक शिक्षा को भेजना। **4.** माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान, अजमेर द्वारा शिक्षकों के व्यावसायिक कौशल उन्नयन की जिला स्तरीय प्रतियोगिताओं का आयोजन।

| नवम्बर 2016 | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| रवि | | 6 | 13 | 20 | 27 |
| सोम | | 7 | 14 | 21 | 28 |
| मंगल | 1 | 8 | 15 | 22 | 29 |
| बुध | 2 | 9 | 16 | 23 | 30 |
| गुरु | 3 | 10 | 17 | 24 | |
| शुक्र | 4 | 11 | 18 | 25 | |
| शनि | 5 | 12 | 19 | 26 | |

**नवम्बर 2016 ● कार्य दिवस–23, रविवार–4, अवकाश–3, उत्सव–4 ● 1 नवम्बर**–भैयादूज अवकाश। **9 से 10 नवम्बर**–राज्य स्तरीय ''रोल प्ले एवं लोक नृत्य प्रतियोगिता'' का आयोजन (SIERT)। **11 नवम्बर**–राष्ट्रीय शिक्षा दिवस (उत्सव) एवं कालिदास जयन्ती (उत्सव)। **14 नवम्बर**–बाल दिवस (उत्सव), गुरु नानक जयन्ती (अवकाश–उत्सव)। **18 से 19 नवम्बर**–तहसील स्तरीय शिक्षक खेलकूद प्रतियोगिता का आयोजन। **19 से 25 नवम्बर**–कौमी एकता सप्ताह का आयोजन। **20 नवम्बर**–''नेशनल मीन्स कम मेरिट स्कॉलरशिप'' परीक्षा का आयोजन। (SIERT) **23 से 24 नवम्बर**–राज्य स्तरीय विज्ञान प्रदर्शनी का आयोजन (RMSA)। **25 से 26 नवम्बर**–जिला स्तरीय शिक्षक खेलकूद प्रतियोगिता। **28 से 30 नवम्बर**–राज्य स्तरीय केजीबीवी खेलकूद एवं सांस्कृतिक प्रतियोगिताओं का आयोजन करना (SSA)। **28 नवम्बर से 1 दिसम्बर**–राज्य स्तरीय ''विज्ञान, गणित एवं पर्यावरण प्रदर्शनी तथा जनसंख्या शिक्षा मेला'' का आयोजन (SIERT) **29 नवम्बर (अमावस्या)**–समुदाय जागृति दिवस। **नोट:–1.** द्वितीय योगात्मक आकलन का आयोजन (नवम्बर के द्वितीय सप्ताह में) (SIQE/CCE संचालित विद्यालयों में) **2.** माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान, अजमेर द्वारा विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन:–I. राष्ट्रीय प्रतिभा खोज परीक्षा, II. राज्य प्रतिभा खोज परीक्षा, III.राज्य विज्ञान प्रतिभा खोज परीक्षा।

माह : **अक्टूबर, 2016**

## विद्यालय प्रसारण कार्यक्रम

प्रसारण समय : **दोपहर 2.40 से 3.00 बजे तक**

| दिनांक | वार | आकाशवाणी केन्द्र | कक्षा | विषय | पाठ क्रमांक | पाठ का नाम |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 3.10.2016 | सोमवार | जयपुर | | गैर पाठ्यक्रम | | |
| 4.10.2016 | मंगलवार | उदयपुर | | गैर पाठ्यक्रम | | |
| 5.10.2016 | बुधवार | जयपुर | 8 | हिन्दी | 11 | गो संरक्षण से ग्राम विकास |
| 6.10.2016 | गुरुवार | उदयपुर | 8 | विज्ञान | 9 | कार्य एवं ऊर्जा |
| 7, 8 व 10 अक्टूबर 2016 द्वितीय परख सभी कक्षाओं के लिए | | | | | | |
| 13.10.2016 | गुरुवार | जयपुर | | गैर पाठ्यक्रम | | |
| 14.10.2016 | शुक्रवार | उदयपुर | | गैर पाठ्यक्रम | | |
| 15.10.2016 | शनिवार | जयपुर | 12 | हिन्दी | 12 | जैनेन्द्र कुमार (बाज़ार दर्शन) |
| 17.10.2016 | सोमवार | उदयपुर | 10 | विज्ञान | 14 | ऊर्जा के स्रोत |
| 18.10.2016 | मंगलवार | जयपुर | | गैर पाठ्यक्रम | | |
| 19.10.2016 | बुधवार | उदयपुर | | गैर पाठ्यक्रम | | |

कई बार तो ये अनुभव स्थाई प्रेम में बदल गए।

इन सफलताओं के क्रम में वैलेस ने एक आयाम विकसित किया। इस क्रम में लगभग एक मनःस्थिति के भाव सम्पन्न लोगों को लेकर कई शहरों में स्थान-स्थान पर शान्ति सभाओं का आयोजन किया, जिसमें प्रयोगकर्ताओं ने शान्ति-प्रेम, आनन्द की भाव तरंगों को धारण-सम्प्रेषण का प्रयोग गहरी तल्लीनता-तन्मयता के साथ किया। प्रयोग के पहले उन स्थानों की अपराध-दर, आत्महत्या-दर, जैसे आकलन किए गए थे, बाद में इनके घटते क्रम की सुखद अनुभूति हुई। इन सभी प्रयोगों में वैज्ञानिक विधि का पूरा-पूरा पालन किया गया। परिणामों का आकलन भी सांख्यकीय गणना प्रणाली से किया गया।

उक्त प्रयोग ऋषियों द्वारा किए गए प्रयोगों की तुलना में चाहे जितने हल्के कहे जाएँ, किन्तु उनसे अब भी भाव-प्रवाहों की क्षमता तो प्रमाणित हो ही जाती है। भावों को उभारने और सम्प्रेषित करने तथा भाव तरंगों के रहस्यमय दिव्य प्रयोगों को सम्पन्न करने में गायन का महत्व हमेशा रहा है और आज भी है। तभी इसके प्रयोग प्रत्येक शुभ कर्म के प्रारम्भ में करने का स्पष्ट निर्देश है। बात भी सही है गद्य, पद्य और गायन में से मन पर 'गायन' का विशेष प्रभाव पड़ता है। इसका अनुभव हम सबको सामान्य जीवन क्रम में भी होता रहता है। गायन से पीड़ित हृदय को शान्ति और सन्तोष मिलता है। इससे मनुष्य की सृजनशक्ति का विकास और आत्मिक प्रफुल्लता बढ़ती है। गायन की अमूल्य निधि देकर परमात्मा ने मनुष्य की पीड़ा को कम किया है। मानवीय गुणों में प्रेम और प्रसन्नता को बढ़ाया है। गायन से एकाग्र की हुई मनःशक्ति को विद्याध्ययन से लेकर जीवन के किसी भी क्षेत्र में लगाकर चमत्कारी सफलताएँ अर्जित की जा सकती हैं। इसलिए यह कहना अतिशयोक्ति पूर्ण न होगा कि इससे मनुष्य की क्रियाशक्ति बढ़ती है और आत्मिक आनन्द की अनुभूति होती है।

प्रकृति की इस व्यवस्था का लाभ आज भी इस विद्या को विकसित करके उठाया जा सकता है।

व्याख्याता (हिन्दी)
रा.सादुल उ.मा.वि. बीकानेर
**मो. 9414604631**

## गाँधी जयन्ती विशेष

# महात्मा गाँधी का बचपन और भारतीय संस्कृति

❒ त्रिलोकचन्द वर्मा

कोई भी व्यक्ति अचानक महान नहीं बन जाता। उसके जीवन पर पड़ने वाले पारिवारिक परिदृश्य के प्रभाव उसके चारों ओर का वातावरण, उसने जो कुछ देखा, सुना और पढ़ा है वो उस व्यक्ति को अवश्य ही प्रभावित करता है। कई बार ये इतने प्रभावशाली होते हैं कि एक बालक में सर्वोत्कृष्ट गुणों का भण्डार बना देते हैं।

मोहनदास करमचन्द गाँधी पर सर्वाधिक प्रभाव उनकी पूज्या माताजी पुतली बाई का रहा जो एक साध्वी और श्रद्धालु महिला थीं, वह भगवत भक्ति में नियमित समय देती थी। मन्दिर जाती, कठिनतम व्रत का प्रण लेकर उसे पूर्ण करती। यहाँ तक कि बीमार होने पर भी व्रत को निर्विघ्न पूर्ण करती थीं। यहीं गुण गाँधीजी में भी सर्वाधिक देखा गया और उन्होंने उपवास का उपयोग करके सत्याग्रह को सफल बनाया। भारतीय संस्कृति में माता को प्रथम गुरु कहा जाता है और गाँधी जी को अपनी माँ से प्राप्त पुण्य संस्कारों ने भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया। माता जी का नियमित मन्दिर जाने का क्रम 'बापू' के जीवन में भी स्थाई बना और उन्होंने अपने आश्रम पर नियमित प्रार्थना सभाओं का आयोजन रखा। तत्पश्चात् यह सर्वधर्म प्रार्थना सभाओं में परिवर्तित हो गयी और हम आज भी गाँधी जयन्ती, शहीद दिवस जैसे अवसरों पर सर्वधर्म प्रार्थना सभाओं का आयोजन कर भारत की अनेकता में एकता एवं सर्वधर्म समभाव की पुरातन व निश्छल भावना को प्रकट करते हैं। वास्तव में हमें यदि आदर्श विश्व की स्थापना करनी है तो सम्पूर्ण मानव जाति को 'बापू' की इस अद्भुत एवं अतुलनीय गतिविधि को अपनाना ही होगा।

इनके पिता श्री करमचन्द गाँधी सामान्य पढ़े लिखे थे किन्तु उनका व्यावहारिक ज्ञान बहुत अच्छा था। उन्होंने धार्मिक शिक्षा विधिवत् नहीं ली थी किन्तु जीवन के उत्तरार्द्ध में आध्यात्मिक अध्ययन करने लगे थे। श्रीमदभगवद् गीता का नियमित पाठ किया करते थे। महात्मा गाँधी के जीवन में उनके पिता के व्यावहारिक ज्ञान का प्रभाव स्पष्ट दिखाई देता है उन्होंने जीवन की कठिनतम परिस्थितियों में व्यावहारिक ज्ञान का उपयोग किया और 'गीता' के सिद्धांतों का उन्होंने अक्षरशः पालन किया, जो तय किया उसे पूर्ण भी किया, न अपनों के सम्मुख झुके न परायों के। सभी समस्याओं का तार्किक हल निकालकर अपनी लड़ाई में विजयी हुए। विकट परिस्थितियों के सामने कभी नहीं झुके। वास्तव में गाँधी जी का संघर्ष प्रबंधन गजब का था जिसमें शत प्रतिशत सफलता निश्चित थी और यदि संघर्ष आन्दोलन को बीच में छोड़ना पड़ा तो निश्चय ही भविष्य में कोई मानव हित जुड़ा होता था। भारतीय संस्कृति का महान ग्रन्थ 'गीता' गाँधी जी के जीवन कृतित्व के माध्यम से सम्पूर्ण विश्व को 'कर्मण्यवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचिन' का सन्देश देता है।

गाँधी जी अपने विद्यार्थी जीवन में औसत दर्जे के छात्र थे किन्तु कभी किसी शिक्षक को उनसे कोई शिकायत नहीं रही। उन्होंने कभी भी अपने शिक्षकों को धोखा देने का प्रयास नहीं किया और न ही उनमें कोई दोष ढूँढ़ा। उन्होंने शिक्षकों के लिए कहा 'गुरु कहे सो करना : करे उसके काजी न बनना।' यदि आज का विद्यार्थी और शिक्षक गाँधी जी के समान शालीन और ईमानदार हो कर अपने कर्त्तव्यों का पालन करें। अपने संस्कारों का ध्यान रखें। राष्ट्रभक्ति का गुमान रखें तो हम पुनः विश्व गुरु का स्थान पा सकते हैं और यही 'बापू' का सच्चा सम्मान होगा।

सतत शिक्षा कार्यक्रम अधिकारी
निदेशालय साक्षरता एवं सतत शिक्षा
शिक्षा संकुल, जयपुर (राज.)

***विद्या विवादाय धनं मदाय,***
***शक्ति परेषां पर पीड़नाय।***
***खलस्य साधो विपरीतमेतत्,***
***ज्ञानाय, दानाय च रक्षणाय।।***

1. विषयवस्तु का विवेचन उद्देश्यों का निर्धारण और उन्हें प्राप्त करने के तरीके सोचना।
2. शिक्षण बिन्दुओं का चयन करना।
3. अवबोध की दृष्टि से पाठ को गंभीरता पूर्वक पढ़ना।
4. प्रेरक तत्वों का संकलन और उनके संदर्भ खोजना।
5. श्यामपट पर पाठ के किसी केन्द्रीय भाव या उससे मिलते-जुलते भाव का एक दो शब्दों में प्रस्तुतीकरण तथा उस पर छात्रों के साथ विचार-विमर्श के मुद्दे निर्धारित करना।
6. स्मरणीय तत्व- परिभाषाएँ (जो पाठ में आई हैं) उन्हें छाँटकर अलग करना एवं याद रखने के कुछ सूत्र निर्धारित करना।
7. पाठ की विषय वस्तु पर छात्रों के स्वकथनों का अनुमान लगाना।
8. छात्रों के संभावित उत्तरों पर विचार करना।
9. संभावित उत्तरों को क्रमवार लिख लेना।
10. पाठ में आए क्लिष्ट संप्रत्यों को छाँटना और उनके सरलीकरण के उपाय सोचना।
11. अर्थ के साथ संप्रत्यों की समझ विकसित हो, इस हेतु शिक्षण प्रविधियाँ निर्धारित करना।
12. शब्दों, आकृतियों, स्तंभों आरेखों के प्रयोग के साथ विषयवस्तु का प्रस्तुतीकरण कब और कैसे हों इस पर विचार करना।
13. शब्दों का व्युत्पतिमूलक व्याकरणिक संरचना सहित प्रयोग निश्चित करना।
14. शब्दों की अर्थपरक समझ विकसित करने के उपाय सोचना।
15. संक्षेपण एवं विस्तरण के प्रमुख बिन्दु छाँटना।
16. पाठ में सृजनात्मकता विकसित करने के लिए बिन्दुओं का चयन करना।
17. अध्ययन के प्रति अभिरुचि विकसित करने के उपाय सोचना।
18. मौलिक चिन्तन और मौलिक लेखन के आधार बिन्दु सोचना।
19. ऐसे बिन्दुओं का चयन करना जिनसे ज्ञान की परतें उघाड़ी जा सके।
20. अवबोधात्मक ज्ञान विकसित करने के उपाय खोजना।

## शिक्षण कौशल

# शिक्षण की तैयारी

❒ डॉ. आर.पी. कर्मयोगी

21. मूल्यांकन की प्रविधियों का निर्धारण।

**'ज्ञानं चेतना याम् निहितं' इस दृष्टि से छात्र को पहचानिए, संकेत कीजिए, रुचि जगाइए।**

अधिगम को प्रोत्साहित करने के लिए प्रत्येक विषय में क्रियाकलाप आधारित, शिक्षण विधियाँ अपनाई जाएँ।

- शिक्षण बिन्दु श्यामपट पर प्रस्तुत किए जाएँ, उन पर छात्रों के साथ परिणाममूलक शिक्षण, व्याख्यान से नहीं बल्कि आत्मीय वातावरण की परिचर्चा से प्रारंभ हो।
- शिक्षण-अधिगम को सरल रोचक और विविध प्रकार से छात्रों के स्तरानुकूल बनाया जाए।
- क्रियाकलापों, खोजों और अन्वेषणों के माध्यम से सीखने को प्रोत्साहित किया जाए।
- शिक्षण में व्याख्यान थोपा न जाए, बल्कि कक्षाओं में सृजनात्मकता को बढ़ाने का प्रयास किया जाए।
- पठन सामग्री का उपयोग करते हुए उसमें दिए गए सुझावों के अनुसार अध्यापक प्रदर्शनों, कथा-कहानियों, संस्मरणों एवं संदर्भों को समझते हुए स्वयं कार्य करके सीखने का कौशल विकसित किया जाए।
- प्रत्येक संकल्पना के लिए भिन्न-भिन्न प्रकार के क्रियाकलाप प्रस्तुत किए जाएँ, ताकि प्रयोग करके सीखने को प्रोत्साहित किया जा सके, इस प्रकार विद्यार्थी उन्हें समझकर उनका विश्लेषण करते हुए यथोचित प्रयोग करने में सफल हो सकेंगे।
- क्रियाकलाप ऐसे हों जो विद्यार्थियों में जिज्ञासु बनने का उत्साह जगाएँ।
- प्रत्येक छात्र पढ़ी हुई विषयवस्तु को अपने अनुभवों से जोड़ता चले। इस प्रकार विषय पर विद्यार्थी की पकड़ मजबूत होगी।
- कक्षा में छात्रों को पढ़ाने के अतिरिक्त पढ़ने, समझने और प्रयोग करने के अवसर मिलने चाहिए।
- ज्ञान, संदर्भों के साथ विकसित हो। ज्ञात से अज्ञात, मूर्त से अमूर्त, सरल से कठिन, जैसे सिद्धांतों के प्रकाश में बढ़ें। यह भी कि वह बौद्धिक विकास तक ही सीमित न रहे, बल्कि उसकी गति बौद्धिक नियंत्रण से रूपांतरण तक हो।
- उच्च शिक्षा, यानी स्नातक और स्नातकोत्तर कक्षाओं में पढ़ते-पढ़ते प्रत्येक विषय में छात्र की अभिव्यक्ति प्रभावकारी हो। चूँकि भाषाई दक्षता एक जीवन कौशल है, अतः मानक और परिनिष्ठित भाषा पर ध्यान दिया जाए।
- प्रयास यह हो कि शिक्षण-अधिगम जीवन मूल्यों और मनोवृत्तियों को अनुकूल आकार देता चले।
- शिक्षण-अधिगम में तर्क, तुलना, समीक्षा, विश्लेषण, उद्धरण, दृष्टांत, कल्पनाएँ, सृजन आदि का सहारा लिया जाए और यह कोशिश की जाए कि छात्र, बोध और शोध को समर्पित हो सकें।
- पढ़ाई का मतलब है पढ़ने, समझने और प्रयोग करने में पारंगत होना। कुछ ऐसा प्रयास हो कि छात्र उद्देश्यों को प्राप्त करते चलें।
- शिक्षा केवल किताबों की नहीं, बल्कि जीवन का विषय बने।
- यदि शिक्षण-अधिगम के आशाजनक परिणाम नहीं आते तो, हमें कारण खोजने होंगे। यहाँ निदानात्मक परीक्षण द्वारा किसी नतीजे पर पहुँचना होगा फिर तदनुसार उपचारात्मक शिक्षण की आवश्यकता होगी।
- नए विचार अनुभव के आधार पर बनते है। अतः अनुभव की अभिव्यक्ति होने दीजिए। केवल स्मृति की ही नहीं।
- अभिव्यक्ति में विविधताओं को प्रोत्साहित करें। पढ़ी हुई विषयवस्तु का प्रस्तुतीकरण और विवेचन हो। बोलने और लिखने की छाप पड़नी चाहिए।

- शिक्षण और अधिगम प्रयोजनमूलक हो।
- अभिव्यक्ति कौशल जीवन पर्यन्त अधिगम (Lifelong Learning) से जुड़ा है, अतः इसका निरंतर अभ्यास हो। इसके लिए कोई विषय चुन लिया जाए।
- पाठ्यपुस्तक, पाठ्यक्रम का मूर्त बन जाती है। उसी के चारों ओर शिक्षण घूमता रहता है और उसमें जो कुछ है उसे ही पढ़ाया जाना जरूरी समझा जाता है। पाठ्यपुस्तक और पाठ्यक्रम के चौखटे से बाहर भी तो निकलिए। पाठ के आगे जाकर संभावनाएँ खोजी जाएँ। न कि रटना-रटना-रटना। प्रयास कुछ ऐसा हो कि छात्र किताब खाँ नहीं, बल्कि साहिबे किताब बनें।
- पाठ्यपुस्तक एक नमूना भर होती है। केवल उसी पर निर्भर रहने की बाध्यता न रहे।
- परीक्षक इस बात की परीक्षा करता है कि छात्र को क्या नहीं मालूम, न कि उसकी दक्षताओं की। परीक्षाओं में प्रायः उद्देश्य आधारित प्रश्नों का अभाव रहता है। प्रश्न ज्ञानमूलक हो।
- परीक्षा में छात्र अपनी योग्यता और दक्षता का प्रदर्शन नहीं कर पाते, बल्कि किताबों से रटे-रटाए उत्तर लिखते हैं। मौलिक चिन्तन नहीं उभर पाता। इसे उभारने के लिए अभिनव और सार्थक प्रयास हों।
- छात्रों को स्वमूल्यांकन का अवसर दें।
- शिक्षण-अधिगम को जीवनोन्मुखी बनाने के भरसक प्रयास हों।
- शिक्षण के पूर्व यह देखना होगा कि छात्र कितना जानते हैं? कितना जान सकते हैं? जानने के लिए क्या और कितना शेष है? इसके अनुसार शिक्षण-अधिगम की योजना बनानी होगी।
- शिक्षण के पूर्व छात्रों के शैक्षिक स्तर की जानकारी रखना बहुत आवश्यक है इसी के आधार पर छात्रों के ज्ञान में उत्तरोत्तर वृद्धि हो सकेगी।
- शिक्षण के पूर्व यह देखना होगा कि प्रस्तुत विषयवस्तु में नवीन ज्ञानार्जन के लिए क्या है? याद करने के लिए क्या है? और अवधारणाओं को समझने के लिए क्या है? व्यावहारिक दृष्टि से अभ्यास और उसके अनुप्रयोग के लिए क्या है? वे कौन से Key Words हैं जो अपने अन्दर गहरा अर्थ छिपाएं हैं परिभाषाएँ कौनसी हैं जो विषयवस्तु को समझने में सहायक हो सकती हैं? सच मायने में यह विषयवस्तु का पोस्टमार्टम है।
- विद्यार्थियों के मन में एक प्रश्न उठ सकता है? यह विषयवस्तु हम क्यों पढ़ रहे हैं? इसका क्या उद्देश्य है? इन प्रश्नों का जवाब देने के लिए शिक्षक को स्वयं गहराई से पढ़ना पड़ेगा। उसे उद्देश्यों का निर्धारण करना होगा और साथ ही यह भी तय करना होगा कि इन उद्देश्यों की प्राप्ति कैसे की जाएगी, शिक्षण-विधि क्या होगी? एक बात और देखनी होगी कि क्या छात्र पढ़ने के लिए उत्सुक हैं? प्रसन्नचित्त हैं? यदि नहीं तो पहले शिक्षण-अधिगम के लिए वातावरण बनाया जाए।
- जहाँ तक व्याख्यान का प्रश्न है यह तो अन्तिम तरीका है। पहले अन्य विधियों का प्रयोग किया जाए। कठिन को सरल बनाने के लिए कोई नया उपक्रम रचा जाए प्रयास यह रहे कि छात्रों को समझने की शक्ति विकसित हो। मूल्यांकन की एक परिपाटी बनी हुई है। अच्छा यह होगा कि सतत और स्वमूल्यांकन को अवसर दिए जाएँ। गंभीरता से विचार करते हुए यह देखा जाए कि कितने प्रकार के प्रश्न हो सकते हैं और उनके माध्यम से किस-किस प्रकार की कितनी योग्यताएँ विकसित की जा सकती है?
- सीखने समझने के लिए छात्रों में उत्सुकता जगाते हुए उन्हें स्वतंत्र छोड़ा जाए। प्रथमतः तो छात्र स्वयं खोजें पढ़ें और समझें। अन्त में कठिनाइयों के निवारण के लिए तो शिक्षक है ही।
- शिक्षण-अधिगम की वर्तमान दशा पर विचार करें तो यह प्रतीत होता है कि अब शिक्षण-अधिगम की नई इबारत लिखनी होगी।
- शिक्षक को साँचा बनना होगा।
- छात्र, शिक्षक को देखकर अपने जीवन का नक्शा बनाते हैं इसलिए शिक्षक को परसनल और प्रोफेशनल वैल्यूज के प्रति सजग रहना होगा।

**शिक्षकों को निम्नलिखित पर ध्यान देना होगा।**

### Personal Values

1. निज का व्यक्तित्व विकसित करे।
2. नियमितता, निरंतरता, तत्परता का अनुसरण करें।
3. प्रार्थना में शामिल हों।
4. कक्षा में समय से पहुँचें।
5. छात्रों से अनर्गल बातें न करें।
6. छात्रों के साथ सचमुच का आत्मीय व्यवहार हो।
7. शिक्षक की जीवन शैली अनुकरणीय हो।
8. प्रत्यक्ष और परोक्ष सभी दृष्टियों से छात्रों के समक्ष आदर्श प्रस्तुत करें।
9. कुछ ऐसा हो कि छात्र शिक्षक को देखकर अपने जीवन का नक्शा बना सकें।
10. शिक्षकों की अन्तश्चेतना छात्रों के अन्तःकरण में प्रवेश कर उनकी चेतना को प्रशिक्षित कर सके।
11. कुलार्णव तंत्र के अनुसार शिक्षक, प्रेरक, सूचक, वाचक, दर्शक और बोधक हो।
12. संवेदनशीलता को प्रमुखता।
13. श्रम और सहयोग को प्राथमिकता।
14. सादगी को सम्मान।
15. मितव्ययी जीवन।

### Professional Values

1. अध्यवसायी
2. ज्ञान का अथाह सागर
3. कल्पनाशील
4. बोध, शोध और सृजन को समर्पित।
5. सहायक शिक्षक सामग्री का उत्पादन।
6. कन्सेप्च्युल शिक्षण।
7. छात्रों को ज्ञान की परिधि के अन्दर तक प्रवेश कराना।
8. नवाचार
9. क्रियात्मक अनुसंधान।
10. शिक्षण से बुद्धि-नियंत्रण और हृदय में रूपांतरण।
11. ज्ञान और गुण के समन्वय से अध्यापन का नियोजन।
12. मात्र पढ़ाना नहीं, अपितु पढ़ने के अनेक अवसर प्रदान करना।
13. ऐसा शिक्षण जिससे ज्ञान का उद्भासन हो।
14. अदर देन लैक्चर मैथड् का प्रयोग।
15. सेमीनार, संगोष्ठियों, कार्यशालाओं आदि का सम्यक् आयोजन।

क्या पढ़ाना है मुझे
और कितना क्यों,
मंथन करलें गहराई से
सब शिक्षक सोचें यों।

बिखरा ज्ञान चतुर्दिक फैला
खोजें व्यापक करनी होगी।
रटी पिटी लाइन को छोड़ें
मात्र किताब न काफी होगी।

किताब जो रटते रहे वे
कर न पाए कुछ नया
निर्माण उनसे हो न पाया
ईजाद की फिर आस क्या?

किताबों से बाहर तो निकलें
पाठ्यक्रम के घेरे तोड़ें
हाँ संदर्भों के लिए जरूरी
नया-नया कुछ इसमें जोड़ें।

मौलिकता उभरे अन्दर से
उठें कल्पना कई-कई
वैचारिक मंथन हो ऐसा
जगे चेतना नई-नई।

नए सृजन की नई शक्तियाँ
उभर-उभर अन्दर से आएँ
अपने बलबूते अध्येता
ढेरों ज्ञान सम्पदा पाएँ।

शिक्षण की क्रियाएँ दिखती
पढ़ना और पढ़ाना
पर प्रश्न खड़ा है सम्मुख सबके
कब और कैसे हमें पढ़ाना?

रटी-पिटी विधियों को छोड़ें
नए ज्ञान से नाता जोड़ें
नए-नए अन्वेषण करके
रीति पुरातन तोड़ मरोड़ें।

शिक्षक का काम न पाठ पढ़ाना
और न तथ्यों को रटवाना
फिर कौन पढ़ाएगा शिष्यों को
तो क्या शिक्षण मात्र बहाना?

पढ़ाना नहीं काम शिक्षक का
वह तो मात्र प्रणेता
नए-नए अवसर ला देना
फिर सीखे स्वयं अध्येता।

## पद्य शैली में भी जाने

जब यही रीति शिक्षक की होगी
छात्र न निष्क्रिय होंगे
कुछ करने को मानस उमगेगा
फिर नए-नए मनसूबे होंगे।

चयन संकलन और विवेचन
तुलना तर्क समीक्षण
वैज्ञानिक हो दृष्टिकोण तब
होगा सही परीक्षण।

शिक्षण बिन्दु प्रथमतः देखें
संप्रत्यय कहाँ कठिन है
सूत्र कौन से विषय वस्तु के
बहुविधि व्याप्त जटिल हैं?

स्मृति में क्या रखना होगा
बिन्दु कहाँ व्याख्या के
कितना छात्र स्वयं कर लेंगे।
शेष कौन आख्या के?

चयन करें फिर उद्देश्यों का
गहरे सोच समझकर
किसमें ज्ञान, बिन्दु अभिरुचि के
अवसर कहाँ सृजन के?

विधियों का पुनि निर्धारण हो
किसको क्या करना है?
शिक्षक की क्रियाएँ क्या हों?
क्या पहल प्रथम करना है?

छात्र समझ लें खेल-खेल में
ऐसा रचे उपक्रम
ऊपर से कुछ बोझ न समझें
नहीं ज्ञान का व्यतिक्रम

शिक्षण में उपदेश अकारथ
सुनते छात्र ऊबते रहते
शरीर क्लास में रहता उनका
मन से कहीं विचरते रहते।

किया परिश्रम पूरा-पूरा
निकला परिणाम अधूरा
अब निदान करना ही होगा
फिर करें परीक्षण पूरा।

शिक्षक का स्तर ऊँचा था?
या कि छात्र का नीचा?
या कि वस्तु जटिल थी भारी?
समझ बिलखती रही बिचारी।

जो भी हुआ निदान वस्तुगत
उसका हो उपचार व्यक्तिगत
शिक्षण सफल हुआ तब जानो
जब मिले सफलता स्वयं हस्तगत।

कुछ ऐसा नया उपक्रम रच लें
पढ़ना नित्य सरल हो
ज्ञान चेतना प्रखर हो उठे
निजता में आनन्द विपुल हो।

चले सिलसिला सेमीनार का
भागीदारी सब की
कोई मूक न बैठा होगा
बारी बारी सबकी।

स्वयं सीखने के कौशल पर
आगे करे विचार
सिम्पोजियम की प्रविधि प्रभावी
नए-नए उद्गार

सिम्पोजिम का निज स्वरूप है
विषय समूह विभाजन
हर समूह में चर्चा हो तब
छात्र ज्ञान के भाजन।

अन्तिम चरण सभी का शामिल
हर समूह का वाचन
वस्तु समग्र सामने होगी
यही प्रभावी साधन।

सुप्त चेतना जागृत होगी
मौलिकता पाए अवसर
तभी बनेंगे छात्र दक्ष
जब हों आयोजन अक्सर।

अति महत्व के विषयों पर हों
विषयवार सम्मेलन
वर्कशाप भी समय-समय पर
करें भाव उद्वेलन।

एक्शन रिसर्च नए चिन्तन में
स्वयं खोज का भाव निहित है
सभी समस्या अपनी अपनी
हल करने की भाव विहित है।

वैचारिक मंथन हो ऐसा
नया-नया कुछ उभरे
छात्र लीक से हटकर चल दें
पल-पल जीवन सुधरे।

निदेशक, शिक्षा शास्त्र विभाग, देव संस्कृति विश्वविद्यालय
गायत्रीकुंज-शांतिकुंज, हरिद्वार

## शिक्षा और प्रशिक्षण

# सेवाकालीन शिक्षक

❒ शंकर लाल

शिक्षक - प्रशिक्षण , शिक्षकों के पेशेवर विकास और स्कूली गतिविधियों में बदलाव में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। इससे शिक्षक व्यावहारिक कार्यो के माध्यम से अपने अनुभव को पक्का कर आत्मविश्वास अर्जित करते हैं एवं अन्य शिक्षकों से सम्पर्क-संवाद के अवसर मिलते हैं तथा पेशेवर ढंग से कार्य करने और ज्ञान में नयापन लाने में सहायता मिलती है। शिक्षा आयोग (1964-66) ने सुझाव दिया था कि नौकरी के दौरान शिक्षकों के प्रशिक्षण का आयोजन विश्वविद्यालयों और शिक्षक संगठनों द्वारा किया जाना चाहिए और हर पाँच साल में इस तरह के कार्यक्रम में हर शिक्षक को दो-तीन महीने बिताने चाहिए। इस तरह के कार्यक्रम अनुसंधान के आंकड़ों के आधार पर होने चाहिए और प्रशिक्षण संस्थानों को सालभर सेमिनार, कार्यशालाएँ, रिफ्रेशर कोर्स, ग्रीष्मकालीन इंस्टीट्यूट आयोजित करने चाहिए। शिक्षकों पर राष्ट्रीय आयोग (1983-85) ने शिक्षक केन्द्रों का विचार सामने रखा था, जो एक मिलन मंच हो, जहाँ लोग इकट्ठे हों और अपने-अपने अनुभवों पर विचार- विमर्श करें । इसका सुझाव था कि शिक्षक शिक्षावकाश में ज्ञान के केन्द्रों की यात्रा पर जा सकते हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति-1986 ने सेवा पूर्व और सेवाकालीन शिक्षक-शिक्षा को एक सतत प्रक्रिया में जोड़ दिया। इससे हर जिले में जिला शिक्षा और प्रशिक्षण संस्थान(DIET) का विचार दिया। 250 शिक्षा महाविद्यालयों का दर्जा बढ़ाकर उन्हें शिक्षक शिक्षा महाविद्यालय (CTE) बनाने की अनुशंसा की। साथ ही इसने देश भर में 50 उच्च अध्ययन शिक्षा संस्थान (IASE) स्थापित करने की सिफारिश करते हुए राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् (NCERT) की तर्ज पर राज्यों में स्थापित राज्य शैक्षिक अनुसंधान और परिषद्/संस्थान (SCERT/SIERT) को मजबूत किए जाने की बात पर बल दिया। आचार्य राममूर्ति समीक्षा समिति (1990) ने संस्तुति की कि रिफ्रेशर कोर्स आदि शिक्षकों की विशेष आवश्यकताओं से जोड़ दिए जाएँ और मूल्यांकन तथा उसके बाद फॉलोअप की गतिविधियाँ भी इस योजना का हिस्सा बनें।

जिन स्थानों पर प्राथमिक विद्यालय तक पहुँच बनाने के ख्याल से बहुश्रेणीय स्कूल स्थापित किए गए, वहाँ शिक्षकों को कक्षा प्रबंधन का विशेष प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए। यह उन लोगों के द्वारा दिया जाना चाहिए , जिन्हें कक्षा प्रबंधन तथा संगठन का अनुभव हो। बिना किसी सुविधा के कक्षा प्रबन्धन कैसे हो या इकाइयों और विषय-वस्तु नियोजन के बारे में बता भर देना, शिक्षकों को कोई लाभ नहीं देता, क्योंकि उनका अभिमुखीकरण पूर्णत: एकल श्रेणी के विद्यालयों के लिए होता हैं। केवल यह बताने की बजाय कि क्या करना है, विस्तृत पाठ-योजना अभ्यास के साथ प्रत्यक्ष व्यावहारिक अनुभवों के द्वारा यह दिखाने की जरूरत है कि किस प्रकार बहुस्तरीय स्कूलों में कामकाज होता है । ऐसी परिस्थितियों की फिल्मों का प्रशिक्षण में इस्तेमाल किए जाने की जरूरत है , ताकि शिक्षक अपने आत्मविश्वास में कमी को दूर कर सकें।

**सेवारत शिक्षक - शिक्षा की पहलें और रणनीतियाँ:-**

राष्ट्रीय शिक्षा नीति -1986 के मद्देनजर प्राथमिक और माध्यमिक स्कूल के शिक्षकों की शिक्षा के लिए जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्था (DIET), उच्च अध्ययन शिक्षा संस्थान (IASE), शिक्षक शिक्षा महाविद्यालय (CTE) आदि के गठन पर बल दिया गया। इसके अनुरूप देश भर में लगभग 500 जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान (DIET), 87 शिक्षक शिक्षा महाविद्यालय (CTE), 38 उच्च अध्ययन शिक्षा संस्थान (IASE) और 30 राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्/संस्थान (SCERT/SIERT) का गठन किया गया, पर उनमें से कई अब तक भी संदर्भ केन्द्र के रूप में काम नहीं कर पा रहे हैं। जिला प्राथमिक शिक्षा परियोजना (DPEP) ने खंड और संकुल संदर्भ केन्द्र (BRC/CRC) बनाए और सेवाकालीन शिक्षक शिक्षा का प्रसार किया तथा संकुल स्तर के स्कूलों में शिक्षा तकनीक में महत्त्वपूर्ण बदलाव लाए गए। विस्तृत प्रयासों और बावजूद इसके कि कुछ इलाकों में इससे सुधार हुआ है, सेवाकालीन शिक्षक-शिक्षा का शिक्षण पर कुछ खास प्रभाव नजर नहीं आया।

प्रशिक्षण की गुणवत्ता का एक बड़ा मानक है शिक्षक के लिए उसकी प्रासंगिकता , लेकिन इस तरह के ज्यादातर कार्यक्रम वास्तविक जरूरत को ध्यान में रखकर नहीं बनाए जाते। अधिकांश कार्यक्रमों में भाषण आधारित अधिगम अपनाया जाता है, जिसमें प्रशिक्षुओं को भागीदारी करने का मौका नहीं मिलता। विडम्बना यह है कि गतिविधि आधारित शिक्षा, बड़ी कक्षाओं का प्रबंधन, बहु स्तरीय /श्रेणीय शिक्षा और सामूहिक शिक्षण जैसे विषय , जिन्हें करके दिखाने की जरूरत है , उन्हें भी भाषणों द्वारा पढ़ाया जाता है। स्कूल अनुवर्तन (FOLLOW UP) की शुरूआत भी नहीं हो सकी है और संकुल स्तर की बैठकें ऐसे पेशेवर मंचों के रूप में विकसित नहीं हो सकी है, जहाँ शिक्षक साथ बैठें, चिंतन करें और एक साथ योजना बनाएं।

पाठ्यचर्चा के बदलाव के किसी भी प्रयास के पीछे सुविचारित और सुव्यवस्थित सेवाकालीन शिक्षण और स्कूल आधारित शिक्षण सहयोग होता है। सेवाकालीन शिक्षा एक घटना भर नहीं हो सकती, वह एक प्रक्रिया है, जो ज्ञान, विकास और दृष्टिकोण ,कौशलों, प्रवृतियों व व्यवहार में बदलाव पर आधारित होती है, जो कार्यशालाओं व स्कूल परिस्थितियों में अंतर्क्रिया के माध्यम से दी जा सकती है। इसमें केवल विशेषज्ञों से ज्ञान प्राप्त करने पर ही जोर नहीं रहना चाहिए, बल्कि व्यावहारिक शिक्षा को बढावा दिया जाना चाहिए, अनुभवात्मक अधिगम को प्रोत्साहन, शिक्षकों को सक्रिय विद्यार्थियों में बदलना, व्यवहार की सहकर्मी-आधारित समीक्षा भी व्यापक रणनीति का हिस्सा बन सकते हैं। आत्मचिंतन को इस कार्यक्रम का महत्त्वपूर्ण अवयव माना जाना चाहिए। ऐसी प्रशिक्षण नीति तैयार की जानी चाहिए, जिसमें आवधिकता,संदर्भ और

कार्यक्रम की पद्धतियों की चर्चा हो, लेकिन गुणवत्ता और जीवंतता सुनिश्चित करने के लिए अधिक विकेन्द्रीकृत व्यवस्था की जरूरत होगी , जिसमें प्रशिक्षण की पद्धति और लक्ष्य साफ - साफ निर्धारित हों। नई तकनीकों पर आधारित व्यापक (MASS) प्रशिक्षण का भी प्रयोग किया जा सकता है, लेकिन इसके लिए साहसिकता, रचनात्मकता और ईमानदारी की आवश्यकता होगी, जिसमें सेवारत शिक्षकों के सरोकारों को प्रत्यक्ष रूप से सम्बोधित किया जा सके। इसमें उस गैर-पेशेवर वातावरण की भी बात हो, जिसमें शिक्षक कार्य बिना किसी सहयोग के अलग -थलग कर रहे हैं ।

प्रसार तकनीकों के इस्तेमाल से पाठ्यचर्या सुधार के लिए सकारात्मक माहौल बनाया जा सकता है , अगर उनका उपयोग ऐसे किया जाए कि विचार-विमर्श और वाद-विवाद के काम हों, जिनमें शिक्षक-प्रशिक्षक और समुदाय के लोग भी भाग ले । नई तकनीक में अभिरुचि जागृत करने के लिए जरूरी है कि शिक्षक को खुद इन माध्यमों में कार्यक्रम बनाने का सीधा अनुभव हो। प्रशिक्षण संस्थानों में कम्प्यूटर तथा अन्य तकनीकी सुविधाओं की उपलब्धता अपर्याप्त है । यह एक कारण है कि नई सम्प्रेषण तकनीकी की संभावनाएँ स्कूलों तथा प्रशिक्षण संस्थानों का माहौल बदल सकने में पूरी भूमिका नहीं निभा सकी है ।

सेवा-पूर्व शिक्षण और सेवाकालीन प्रशिक्षण के दौरान शिक्षकों का पर्याप्त अभिमुखीकरण हो और ऐसी क्षमता का विकास हो कि वे पाठ्यचर्या रूपरेखा की चुनौतियों को समझें तथा उसका सामना कर सके । सेवाकालीन प्रशिक्षण विशेष रूप से शिक्षकों के कक्षानुभव के संदर्भ में होने चाहिए । जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थानों (DIET), जिन्हें इन प्रशिक्षणों की जिम्मेदारी दी गई है, को कार्यक्रम इस तरह से आयोजित करने चाहिए कि शिक्षकों और स्कूलों को उससे लाभ हो। उदाहरण के लिए सेवाकालीन प्रशिक्षण को जिस तरह कामचलाऊ ढंग से निपटाया जाता है, उसकी बजाय अगर कुछ स्कूलों का चुनाव कर लिया जाए और कम से कम दो शिक्षक (कम से कम दो ताकि आपस में अनुभवों को बांटा जा सके व उन पर चिंतन हो सके ) प्रत्येक स्कूल से प्रशिक्षण के लिए बुलाए जाएँ। जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान (DIET), ब्लॉक संदर्भ केन्द्र(BRC) के सहयोग से ऐसे स्कूलों का चुनाव कर सकता है । शिक्षण समय प्रभावित न हो और प्रशिक्षु सिद्धान्त और व्यवहार के बीच के संबंध को समझ सके, प्रशिक्षण के लिए आवश्यक अवधि को साल भर में बाँटा जा सकता है ताकि शिक्षक का शैक्षिक कार्यानुभव भी इसमें शामिल हो सके ।

प्रशिक्षण के अन्तर्गत शिक्षक - प्रशिक्षण संस्थानों के व्याख्यानों के आयोजन के अतिरिक्त, कई अन्य प्रकार की गतिविधियाँ भी आती हैं, जैसे स्कूल या समुदाय में कार्यशालाओं का आयोजन तथा शिक्षकों को उनकी कक्षा के लिए प्रोजेक्ट आदि । सेवापूर्व और सेवाकालीन प्रशिक्षण को जोड़ने के लिए सेवापूर्व प्रशिक्षण के दौरान स्कूलों में इंटरशिप आयोजित करवाई जा सकती है और छात्राध्यापकों से कहा जा सकता है कि वे इन स्कूलों में कक्षा के कामकाज का अवलोकन करें। इससे न केवल शिक्षक- प्रशिक्षकों को प्रशिक्षण कार्यक्रम मजबूत बनाने में मदद मिलेगी, बल्कि यह प्रशिक्षण कार्यक्रम के बाद के हिस्से में प्रशिक्षु शिक्षकों को आलोचनात्मक चिंतन का आधार भी दे सकता है । इस प्रक्रिया को आगे बढ़ाते हुए, संबंधित विद्यालय के संस्थाप्रधान के साथ बातचीत के सत्र आयोजित किए जाएँ ताकि वे कक्षा - आधारित पढ़ाई के ढंग में वैसे बदलाव लाने में मदद कर सकें, जो प्रशिक्षु शिक्षक चाहते हों। देखरेख और जायजा लेने के काम में SCERT / SIERT, DIET, BRC तथा CRC को भी शामिल किया जा सकता है ताकि पुनश्चर्या (FOLLOW UP), अभिलेखीकरण (DOCUMENTATION) और शोध (RESEARCH) के रूप में अकादमिक सहयोग (ACADEMIC SUPPORT) मिल सके ।

सहायक कार्यालय अधीक्षक
राजकीय उच्च अध्ययन शिक्षा संस्थान, बीकानेर
**मो. 9829293191**

# हाईटेक होते सरकारी स्कूल

❐ **घनश्याम साँखला**

परिवर्तन संसार का नियम है। शिक्षा प्राचीन काल से आधुनिक होती गई। गुरुकुल से कक्षा शिक्षण (विद्यालय) बना। गुरुदेव (आचार्य) से शिक्षक बने। पाठ्यक्रम बदला, समयानुरूप विषयों को जोड़ा। पढ़ने-पढ़ाने के तरीकों पर पिछले दशकों से खूब बहस हुई-कुछ नवाचार-खेल-खेल में, गतिविधि आधारित प्रभावी शिक्षण के प्रयोग चल रहे है।

इसी बीच हुए कम्प्यूटर युग ने छात्रों को ज्यादा प्रभावित किया, सरकार भी ई-गवर्नेंस को बढ़ावा देने का पूरा जोर लगा रही है। इंटरनेट ने इसमें और संभावनाएँ प्रकट की। सरकारी तंत्र ने इसे डाटा संकलन, संप्रेषण (ई-मेल), संग्रहण में आजमाया। आज शिक्षा विभाग इसी कारण पूर्णतः आश्वस्त होकर नियमित डीपीसी. कर पारदर्शितापूर्ण काउंसलिंग के माध्यम से पदस्थापन कर इच्छित स्थान पर अध्यापकों को भेजकर विद्यालयों को सुदृढ़ कर रहा है।

राज. पत्रिका के 31.5.16 के अंतिम पृष्ठ पर 'सरकारी स्कूलों में बिना बुक और नोट बुक से होगी पढ़ाई' समाचार पढ़ा। जिला कलेक्टर श्री गंगानगर पी.सी. मिशन खुद इन ई-स्कूलों को तैयार कराने में जुट गए है। जिसमें क्लास रूम में ब्लैक बोर्ड के बजाय बड़ी एलईडी. स्क्रीन और उस पर गणित और विज्ञान विषयों का सरलता से नए लुक में समझाने का तरीका। किसी विषय विशेषज्ञ शिक्षक द्वारा तैयार पाठ्य सामग्री बटन दबाते ही अध्यापन की प्रक्रिया शुरू। नये तरीकों एवं बदलावों का वैज्ञानिक तरीकों से सदुपयोग। अपने इलाके में ऐसे पाँच स्कूलों को ई-स्कूल के रूप में तब्दील करने का प्रयोग किया जा रहा है।

कलेक्टर ने स्वयं सभागार में विभिन्न विभागों के अधिकारियों की बैठक में यह खुलासा किया। उनका मानना है कि बच्चों में आधुनिक तकनीकों के उपयोग से हो रहे बच्चों के मन-मस्तिष्क में बदलावों को ध्यान में रखकर पढ़ाई हो तो बच्चे अधिक रुचि लेंगे। इन्टरनेट और फेसबुक के जमाने में पुराना सिलेबस पढ़ने के प्रति सरकारी स्कूलों के बच्चों में रुझान घटा

हैं। ऐसे में स्कूलों को समयानुरूप अपडेट करने का समय आ गया है और इसकी शुरूआत अभी से होनी चाहिए। शहर (श्रीगंगानगर) के राउमावि., मटका चौक स्थित राबाउमावि., हरिजन बस्ती स्थित राउमावि और कालियां गाँव के दो सरकारी स्कूलों को इस योजना में शामिल किया गया है। इसके अलावा कक्षाकक्ष में शिक्षक के साथ मनोरंजन गेम व प्रेरणादायी हिन्दी फिल्में व वृत्त चित्र भी देखे जा सकेंगे तथा साथ ही ई-लाइब्रेरी से भी क्लास रूम को जोड़ा जाएगा।

यह तो एक जिले में शुरूआत है, सरकार व शिक्षा विभाग तथा शिक्षक सभी मिलकर बच्चों के सर्वहित को ध्यान में रखकर तय करें तो क्या संभव नहीं है। भविष्य का स्कूल शायद अब साकार होने वाला है।

इसी आधार पर कह सकते हैं कि अब सरकारी विद्यालय जल्द ही समय की माँग के अनुरूप अपडेट होकर हाईटेक हो रहे है। इस वर्ष के नामांकन वृद्धि में यह भी एक महत्वपूर्ण घटक है कि छात्र/छात्राओं का निजी विद्यालयों से मोह भंग होने लगा है और सरकारी विद्यालयों व शिक्षा विभाग के बेहतर तालमेल से भविष्य संवरने लगा है।

लिपिक ग्रेड-।
माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर
**मो. 9460453224**

# ऐसे थे महान् शिक्षाविद् डॉ. दूलसिंह

**❒ पवन कुमार स्वामी**

बात उन दिनों की है जब मुल्क की आजादी के पश्चात् समग्र विकास के लिए शिक्षा और संस्कृति के क्षेत्र में चन्द लोग जुटे थे अपनी निष्ठा, लगन, अनुशासन, कठोर परिश्रम और राष्ट्रभक्ति के साथ अपने पूरे सामर्थ्य को लेकर देश के नवनिर्माण के सपन को साकार करने में। यह वो दौर था जब हर शिक्षित और समर्पित महापुरुष के लिए शिक्षा जगत में निजी और सार्वजनिक क्षेत्र में बिना किसी भेद के देश की नई तस्वीर बनाने की ललक थी और जज्बा था सबको साथ लेकर चलने का।

राजस्थान राज्य के पिलानी जैसे छोटे से कस्बे को बिड़ला परिवार ने शिक्षा, विज्ञान व टेक्नोलोजी के क्षेत्र में देश के बड़े केन्द्र के रूप में प्रतिस्थापित करने के लिए एक मुहिम चलाई। इसी मुहिम का नतीजा था कि देश को बी.आई.टी.एस. एवं सीरी जैसे संस्थान मिले। शेखावाटी के एक छोटे से ग्राम दिसनाऊ की पवित्र माटी की सौंधी महक से उपजी विलक्षण प्रतिभा के रूप में डॉ. (प्रो.) दूलसिंह इन्हीं संस्थानों की ऐतिहासिक विभूतियों में से एक थे। डॉ. सिंह बी.आई.टी.एस. के असिस्टेन्ट डायरेक्टर के अलावा व्यावसायिक प्रबंधन विभाग के हैड थे तथा उन्होंने ही एम.बी.ए. पाठ्यक्रम को बड़ी शौहरत दिलाई थी। देश-विदेश के विभिन्न विश्वविद्यालयों में प्रोफेसर, डीन, डायरेक्टर, मेम्बर आर.पी.एस.सी. एवं प्रोफेसर ऑफ एमीनेन्स जैसे पदों को सुशोभित करने वाले डॉ. (प्रो.) दूलसिंह ने एम.बी.ए. के लिए विश्वविख्यात अमेरिका के हारवर्ड विश्वविद्यालय में एक साल आउटस्टैंडिंग प्रोफेसर रहने के बावजूद मातृभूमि को ही सेवा के लिए चुना। यूँ तो उनकी विलक्षण प्रतिभा, प्रशासकीय कौशल और कर्त्तव्य के प्रति समर्पण के अनेक किस्से हैं किन्तु किसी प्रतिभा को पहचानकर उसे आग्रहपूर्वक दिशा देने की उनकी बेजोड़ कला का एक छोटा सा प्रसंग उनकी पुण्यतिथि पर यहाँ समीचीन होगा।

वर्ष 1967 में बी.आई.टी.एस. के श्रीयुत् टी.सी. साबू सेक्रेट्रियल सेन्टर के लिए स्टेनो टाईपिंग इंस्ट्रक्टर का साक्षात्कार होना था। साक्षात्कार मण्डल में बतौर कार्यवाहक निदेशक बी.आई.टी.एस. श्रीमती उपाध्याय, डॉ. (प्रो.) दूलसिंह, डॉ. विद्याधर शर्मा और प्रो. कृष्णा मोहन जैसी हस्तियाँ थीं। एक सहज व सरल वातावरण में साक्षात्कार चलता रहा। अंतिम रूप से श्री ए.पी. गिरधर का चयन सहायक प्रवक्ता कैडर के तहत किया गया एवं तमाम सुविधाओं की पेशकश भी की गई किन्तु डॉ. सिंह को आशंका थी कि आशार्थी मुश्किल से सहमत होगा। दरअसल श्री गिरधर उच्च प्रतिष्ठा प्राप्त भारत हैवी इलैक्ट्रीकल्स लिमिटेड़ में पहले से नियोजित थे। श्री गिरधर को एक साथ दो अग्रिम वेतनवृद्धियाँ देने का निश्चय किया गया। साथ ही पृथक से काऊंसलिंग भी की गई। आशार्थी ने एक सपाट प्रश्न पूछ लिया, ''श्रीमान्, क्या मेरी यह नौकरी स्थाई होगी?'' प्रो. सिंह साहब ने एक पल के लिए सोचा और तपाक से उत्तर दिया, ''मि. गिरधर, नौकरी हमेशा अस्थाई होती है, केवल काम ही है जो स्थाई होता है।'' श्री गिरधर उनकी हाजिर जवाबी और बुद्धि कौशल से इतने प्रभावित हुए कि उन्होंने तत्काल सहमति पत्र हस्ताक्षर कर दिये। कालान्तर में यही श्री ए.पी. गिरधर बी.के. बिड़ला इन्स्टीट्यूट ऑफ इंजीनियरिंग एण्ड टेक्नोलोजी, पिलानी में प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष (अंग्रेजी) रहे।

प्रो. गिरधर कहते हैं कि उस साक्षात्कार ने जीवन के प्रति उनके अपने नजरिये को तब्दील कर दिया तथा वे अलग तरह के इन्सान बन गए। प्रो. गिरधर एक जगह लिखते है कि, 'डॉ. दूलसिंह एक सख्त अनुशासनप्रिय शिक्षाविद् थे। वे स्वयं बहुत अनुशासित थे तथा दूसरों से भी ऐसे ही अनुशासन की अपेक्षा रखते थे। वे सही मायने में शिक्षा क्षेत्र के महानायक थे तथा उनका अनुभव असीम था। कार्यग्रहण उपरान्त मुझे तनिक विलम्ब से आने की आदत थी। मेरी कक्षा प्रातः 8:00 बजे पहुँचता तथा विद्यार्थियों को इंतजार करते पाता। प्रो. दूलसिंह अपने कक्ष में कार्य कर रहे होते, जब मैं उधर से गुजरता। एक दिन वह क्षण आ ही गया जिसका कि मुझे डर था। प्रो. साहब से संवाद हुआ। उन्होंने बताया कि उनकी कक्षा प्रात 9:00 बजे होती, जबकि वे आठ बजे अपने कक्ष में लेक्चर की पूर्व तैयारी कर रहे होते। केवल इसलिए कि जल्दबाजी न हो तथा कक्षा कक्ष शिक्षण की परफैक्ट तैयारी हो सके। मैं शर्मिन्दा हुआ और मैंने हमेशा के लिए वक्त की पाबन्दी को अपनी जीवनचर्या का हिस्सा बना लिया।''

एक सच्चे शिक्षाविद् के रूप में प्रो. साहब की पुण्यतिथि (4 अक्टूबर) के अवसर पर हम उन्हें श्रद्धावनत होकर नमन करते हैं तथा शिक्षक समुदाय से अपेक्षा करते हैं कि स्व. डॉ. दूलसिंह द्वारा प्रतिस्थापित उच्च आदर्शों का वे अनुसरण करेंगे।

लिपिक ग्रेड-।
माध्यमिक शिक्षा निदेशालय, बीकानेर

## लेखा-स्तम्भ

# लेखों का अंकेक्षण-संक्षिप्त परिचय

❒ विष्णुदत्त पुरोहित

माध्यमिक शिक्षा विभाग के अन्तर्गत राजकीय माध्यमिक विद्यालय एवं उच्च माध्यमिक विद्यालयों को बजट आवंटन निदेशालय स्तर पर किया जाता है तथा समय-समय पर आवंटन के अनुसार बजट मदवार व्यय करने के निर्देश दिए जाते हैं ताकि राज्य सरकार द्वारा आवंटित राशि का उसी वित्तीय वर्ष में सदुपयोग हो। इसी क्रम में उस संस्था के वित्तीय अनुशासन को बनाए रखने के लिए यह आवश्यक है उस संस्था प्रधान द्वारा उस वित्तीय वर्ष में किए गए समस्त वित्तीय व्यवहारों का नियमित रूप से अंकेक्षण हो तथा अंकेक्षण दल के द्वारा ध्यान में लाई गई समस्त वित्तीय अनियमितताओ का निराकरण समय पर हो तथा भविष्य में भी गंभीर अनियमितता की संभावनाएं समाप्त हो जाएँ साथ ही पुनरावृत्ति नहीं हो।

माध्यमिक शिक्षा विभाग के अन्तर्गत आने वाले समस्त विद्यालयों का अंकेक्षण मुख्यतया दो प्रकार से किया जाता है:-

**1. महालेखाकार राजस्थान जयपुर द्वारा किया गया अंकेक्षण:-** महालेखाकार राजस्थान जयपुर द्वारा CAG (DPC) Act, 1971 के प्रावधानों के तहत राज्य सरकार के प्रत्येक कार्यालयाध्यक्ष के लेखों की जाँच की जाकर अंकेक्षण प्रतिवेदन जारी किया जाता है। जिसमें समस्त राजकीय माध्यमिक विद्यालय के प्रधानाध्यापक एवं राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय के प्रधानाचार्य कार्यालयाध्यक्ष हैं जिनकी संस्था का महालेखाकार द्वारा अंकेक्षण किया जाना कानूनी रूप से आवश्यक है। महालेखाकार कार्यालय का अंकेक्षण दल महालेखाकार कार्यालय द्वारा जारी अंकेक्षण कार्यक्रम अनुसार संबंधित विद्यालय का अंकेक्षण कर प्रतिवेदन जारी करता है जिसकी एक प्रति निदेशालय को, दूसरी प्रति संबंधित जिला शिक्षा अधिकारी कार्यालय तथा तृतीय प्रति संबंधित विद्यालय को प्रेषित करता है।

**2. विभागाध्यक्ष के आंतरिक जाँच दलों द्वारा किया गया अंकेक्षण:-** राज्य सरकार के निर्देशानुसार प्रत्येक विभागाध्यक्ष स्तर पर आंतरिक जाँच दल का गठन किया जाता है जिसके सहायक लेखाधिकारी ग्रेड-।, कनिष्ठ लेखाकार एवं लिपिक वर्ग का कर्मचारी होता है। माध्यमिक शिक्षा विभाग के अधीन प्रत्येक जिला स्तर पर उक्त अंकेक्षण दल कार्यरत है जिनका मुख्यालय संबंधित जिला शिक्षा अधिकारी प्रथम/द्वितीय का कार्यालय होता है इनका कार्य संबंधित जिले में संचालित रामावि/राबामावि/राउमावि/ राबाउमावि का अंकेक्षण करना होता है। उक्त अंकेक्षण दल निदेशालय द्वारा जारी अंकेक्षण कार्यक्रम अनुसार संबंधित विद्यालय का अंकेक्षण कर अंकेक्षण प्रतिवेदन जारी करता है जिसकी एक प्रति निदेशालय को, दूसरी प्रति संबंधित जिला शिक्षा अधिकारी कार्यालय तथा तृतीय प्रति संबंधित विद्यालय को प्रेषित करता है।

**महालेखाकार कार्यालय एवं विभागाध्यक्ष के आंतरिक जाँच दलों द्वारा जारी अंकेक्षण प्रतिवेदन की प्रथम अनुपालना एक माह के भीतर नियंत्रण अधिकारी के माध्यम से निदेशालय को भिजवानी आवश्यक होती है।**

**अंकेक्षण कार्यक्रम प्राप्त होते ही संस्था प्रधान द्वारा करणीय कार्यवाही**

**1.** जिस अवधि का अंकेक्षण कार्य किया जाना है उनसे सम्बन्धित समस्त रिकार्ड यथा रोकड़ बही, छात्रकोष रोकड़ बही, विकास कोष रोकड़ बही, क्रय पत्रावलियाँ, वेतन बिल पत्रावलियाँ, यात्रा एवं चिकित्सा बिल पत्रावलियाँ, एफ.वी.सी. बिल पत्रावलियाँ, डाक टिकट रजिस्टर, छात्रवृत्ति पत्रावली, स्टॉक रजिस्टर, बिल रजिस्टर, इन्केसमेंट रजिस्टर आदि समस्त रिकॉर्ड का पुनरावलोकन कर यथा स्थान सुरक्षित कर देना चाहिए ताकि अंकेक्षण दल के आते ही समस्त वांछित रिकॉर्ड समय पर प्रस्तुत किया जा सके।

**2.** अंकेक्षण कार्यक्रम के दौरान अंकेक्षण दल द्वारा वांछित समस्त रिकॉर्ड तुरन्त उपलब्ध करवा देना चाहिए यदि किसी कारणवश कोई रिकॉर्ड अथवा पत्रावली उपलब्ध नहीं करवाना संभव हो रहा हो तो अंकेक्षण दल को उचित कारण बताते हुए इस बाबत निवेदन कर देना चाहिए तथा जहाँ तक संभव हो अंकेक्षण कार्यक्रम के समाप्ति से पूर्व वह रिकॉर्ड उपलब्ध करवा देना चाहिए ताकि अनावश्यक रूप से उक्त रिकॉर्ड नहीं करवाने का आक्षेप नहीं बने तथा भविष्य में इस बाबत कोई परेशानी का सामना नहीं करना पड़े।

**3.** अंकेक्षण कार्यक्रम के दौरान अंकेक्षण दल द्वारा किसी प्रकरण पर ज्ञापन प्रस्तुत किया जाता हो तो उसका प्रति उत्तर तुरन्त समस्त संबंधित रिकॉर्ड का अवलोकन कर पूर्ण विवेक के साथ निर्धारित प्रारूप में साक्ष्यों सहित प्रस्तुत कर देना चाहिए ताकि अनावश्यक आक्षेप नहीं बने।

**4.** अंकेक्षण कार्यक्रम की समाप्ति पर दल के साथ प्रस्तावित आक्षेपों पर विचार विमर्श कर जहाँ तक सम्भव हो यदि किसी आक्षेप का प्रति उत्तर तुरन्त दिया जाना सम्भव हो तो निर्धारित प्रारूप में साक्ष्यों सहित प्रस्तुत कर देना चाहिए ताकि अनावश्यक आक्षेप नहीं बने।

**अंकेक्षण प्रतिवेदन प्राप्त होते ही संस्था प्रधान द्वारा करणीय कार्यवाही**

**1.** अंकेक्षण प्रतिवेदन प्राप्त होते ही संस्था प्रधान को प्रतिवेदन में लिए गए समस्त आक्षेपों का गहनतापूर्वक अध्ययन करना चाहिए तथा उनके निराकरण बाबत किए जाने वाले कार्य/आगामी आवश्यक कार्यवाही हेतु निर्देश/पत्र जारी करना प्रारम्भ कर देना चाहिए।

**2.** अंकेक्षण दल द्वारा यात्रा भत्ता/ चिकित्सा बिलों से तय की गई वसूली राशि हेतु संस्था में कार्यरत संबंधित कर्मचारी जिसके विरुद्ध उक्त वसूली का आक्षेप बना है, को पत्र द्वारा उक्त आक्षेप के समस्त विवरण अवगत करवा देना चाहिए साथ ही समय पर उसका समुचित प्रतिउत्तर अथवा राशि विद्यालय के रोकड़ियाँ को जमा करवाने के निर्देश दे देने चाहिए। यदि कोई कर्मचारी जिसके विरुद्ध उक्त वसूली का आक्षेप बना है, का स्थानान्तरण अन्य किसी विद्यालय/कार्यालय में हो चुका हो तो पत्र द्वारा उक्त आक्षेप के समस्त विवरण संबंधित कर्मचारी एवं उसके नियंत्रण अधिकारी को अवगत करवा देना चाहिए साथ ही निवेदन कर देना चाहिए कि संबंधित कर्मचारी से राशि वसूल कर राशि को राजकोष में संबंधित मद में जमा करवा कर चालान की एक प्रमाणित प्रति भिजवाएँ ताकि पालना के समय उस चालान की प्रति साक्ष्य के रूप में संलग्न की जा सके।

**3.** छात्रवृत्ति से संबंधित आक्षेप बनने पर रोकड़िया को उक्त आक्षेप की अनुपालना से संबंधित समस्त कार्यवाही प्रारम्भ करने के निर्देश दे देने चाहिए। यदि किसी छात्रवृत्ति के उपयोगिता प्रमाण-पत्र का आक्षेप बना तो वांछित कार्यवाही कर संबंधित उपयोगिता प्रमाण पत्र निर्धारित प्रारूप तैयार करवा देना चाहिए।

**4.** विद्यालय के अनुपयोगी सामग्री के निस्तारण के अभाव का आक्षेप बना हो समस्त नियमानुसार कार्यवाही करते हुए प्रकरण जिला शिक्षा अधिकारी को प्रेषित कर देना चाहिए ताकि समय पर सामग्री के निस्तारण की कार्यवाही सम्पन्न हो सके तथा उक्त निस्तारण से प्राप्त राशि को संबंधित मद में राजकोष में जमा करवा देनी चाहिए ताकि पालना के समय उस चालान की प्रति साक्ष्य के रूप में संलग्न की जा सके।

**5.** सेवा पुस्तिका से संबंधित लिए आक्षेपों के संबंध में संबंधित लिपिक को सेवा पुस्तिकाओं का अवलोकन कर आक्षेपों के निराकरण के संबंध में कार्यवाही कर संबंधित सेवा पुस्तिकाओं को दुरस्त कर देना चाहिए ताकि तद्नुसार पालना प्रस्तुत कर आगामी जाँच दल/जिशिअ के लेखाकर्मी को अवलोकन करवाया जा सके।

**6.** चालान के सत्यापन का अभाव का आक्षेप बनने पर संबंधित चालान द्वारा जमा राशि का सत्यापन कोष कार्यालय से शीघ्र निर्धारित प्रारूप में सूचित करते हुए करवा लेना चाहिए ताकि तद्नुसार पालना प्रस्तुत की जा सके।

**7.** उक्त बिन्दु सं. 1 सं 6 तक की कार्यवाही सम्पन्न करने के पश्चात् अंकेक्षण प्रतिवेदन में लिए गए आक्षेपों की अनुपालना अग्रलिखित प्रारूप में तैयार कर देना चाहिए।

**A महालेखाकार अंकेक्षण प्रतिवेदन की अनुपालना का प्रारूपः–**

| क्र. सं | आक्षेप संख्या | आक्षेप का संक्षिप्त विवरण | संस्था प्रधान की अनुपालना | जिला शिक्षा अधिकारी की टिप्पणी | निदेशालय की टिप्पणी | महालेखाकार कार्यालय की टिप्पणी |
|---|---|---|---|---|---|---|

**नोटः–** उक्त अनुपालना जहाँ तक सम्भव हो A-4 साइज के कागज में चार प्रतियों में तैयार करनी चाहिए जिसमें से तीन प्रति जिला शिक्षा अधिकारी को संबंधित साक्ष्यों सहित प्रेषित कर देनी चाहिए। जिला शिक्षा अधिकारी कार्यालय स्तर पर इस पर अपनी टिप्पणी अंकित करने के पश्चात् दो प्रतियाँ निदेशालय को भिजवानी होती हैं जिस पर निदेशालय स्तर पर अपनी टिप्पणी अंकित कर एक प्रति महालेखाकार कार्यालय को भिजवायी जाती है। तत्पश्चात् आक्षेप निस्तारण की कार्यवाही महालेखाकार कार्यालय स्तर पर की जाकर समीक्षा पत्र जारी किया जाता है।

**B विभागीय अंकेक्षण प्रतिवेदन की अनुपालना का प्रारूपः–**

| क्र. सं | आक्षेप संख्या | आक्षेप का संक्षिप्त विवरण | संस्था प्रधान की अनुपालना | जिला शिक्षा अधिकारी की टिप्पणी | निदेशालय की टिप्पणी |
|---|---|---|---|---|---|

**नोटः–** उक्त अनुपालना जहाँ तक सम्भव हो A-4 साइज के कागज में तीन प्रतियों में तैयार करनी चाहिए जिसमें से दो प्रतियों में जिला शिक्षा अधिकारी को संबंधित साक्ष्यों सहित प्रेषित कर देनी चाहिए। जिला शिक्षा अधिकारी कार्यालय स्तर पर इस पर अपनी टिप्पणी अंकित करने के पश्चात् एक प्रति निदेशालय को भिजवानी होती है जिस पर निदेशालय स्तर पर अनुपालना का विवेचन कर आक्षेप निस्तारण की कार्यवाही निदेशालय स्तर पर की जाकर समीक्षा पत्र जारी किया जाता है।

**विशेषः–** उक्त समस्त विवरण लेखक द्वारा अपने विवेक से तैयार किए गए हैं पाठक अपने स्वविवेक से विवेचन कर उच्चाधिकारियों के निर्देशानुसार एवं राज्य सरकार द्वारा पूर्व में जारी परिपत्रों का अध्ययन कर आगामी कार्यवाही करें।

लिपिक ग्रेड-।
ए.जी. ऑडिट अनुभाग
निदेशालय माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर

## भगवान से भी पहले देश

नोबल पुरस्कार से सम्मानित विश्वकवि रवीन्द्रनाथ ठाकुर जापान के प्रवास पर थे। एक विद्यालय में बच्चों के कार्यक्रम में वे आमन्त्रित थे। उन्होंने वहाँ बालकों से प्रश्न किया-''तुम किस धर्म को मानते हो?'' उत्तर मिला-''बौद्ध धर्म।'' ''क्या तुम जानते हो कि बौद्ध धर्म के प्रणेता बुद्ध भारत में उत्पन्न हुए थे?'' ''जी हाँ जानते हैं''-बालकों ने बड़ी सरलता से उत्तर दिया। रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने आगे एक बहुत ही पेचीदा प्रश्न किया-''कल्पना करो कि महात्मा बुद्ध सेना का नेतृत्व कर, तुम्हारे देश जापान पर आक्रमण कर दें तो तुम क्या करोगे?'' एक बालक फुर्ती से उठा और रोष के साथ बोला-''हम बुद्ध का सामना करेंगे, भगवान बुद्ध की मूर्तियाँ पिघलाकर गोलियाँ बनायेंगे और आक्रमणकारी तथा उसकी सेना को भून डालेंगे।''

गुरुदेव यह उत्तर सुन बालकों में जापान का उज्ज्वल भविष्य देख रहे थे और उनका मस्तक उनकी देशभक्ति के सम्मुख झुक रहा था।

-संकलन : **दुर्गाशंकर हर्ष**, सी-47, मुरलीधर व्यास नगर, बीकानेर **मो. 9414012046**

# पुस्तक समीक्षा

## पर्यावरण प्रदूषण-समाधान चिंतन

**लेखक** : मोहन लाल गहलोत **प्रकाशक** : पाली देवी (गहलोत प्रकाशन) गाँधीपुरा, बालोतरा **संस्करण** : 2015 **पृष्ठ संख्या** : 56 **मूल्य** : ₹150

वर्तमान जीवन में अनेक समस्याओं के साथ एक बड़ी समस्या उभर कर आ रही है-वह है पर्यावरण प्रदूषण की समस्या जो प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप से हमारे जीवन को प्रभावित कर रही है। आज समूचा विश्व चिंतन कर रहा है कि इसे कैसे दूर करें, समाधान हेतु नए-नए शोध किए जा रहे हैं। साहित्य में भी पर्यावरण पर गद्य-पद्य दोनों विधाओं में लेखक-रचनाकार अपनी लेखनी निरंतर चला, भावनाओं को संवेदना के साथ कागज पर उकेर रहे हैं। ऐसे ही भावों एवं विचारों को मोहनलाल गहलोत ने अपनी हिन्दी कृति 'पर्यावरण प्रदूषण-समाधान चिंतन' में सोद्देश्य उजागर किया है। इस कृति में उनकी 8 रचनाओं में आठ प्रकार के प्रदूषणों एवं नौवीं रचना 'सभी प्रदूषण-समस्याओं का समाधान' रूप में प्रस्तुत है। प्रथम रचना 'वायु प्रदूषण से मुक्ति' जिसमें उद्योगों के कल-कारखानों से उड़ता विषैला धुआँ, जिसमें मिलती वायु और फिर विषैली वायु से सारा जीव जगत कैसे उसकी चपेट में आकर प्रभावित होता है- 'पवन बिगड़ता है जब सारा, जीव विचरेगा कहाँ बिचारा' गहन चिंतन दिखाता है। जल प्रदूषण विभीषिका में 'खग वृंद की भी मिटी किलोल दिखा उसे दूषित यह घोल', यदि वह भी मिल न सकेगा, भूखा-प्यासा रोगग्रस्त फिरेगा। आगे ध्वनि प्रदूषण में- 'ऊँचा शोर शराबा दूषित, कर देगा सबको मूर्च्छित', और 'शांत वात हर जन को भावे, कर स्थापित मन मुस्कावे' सीख देते है। सामान्य प्रदूषण में नहुष पौराणिक पात्र के भाव को उजागर करती है। 'शुद्ध स्वच्छ वायु और जल, शांत वात में ही तू पल' जैसे स्वच्छ वातावरण की बात करते हैं तो सांस्कृतिक प्रदूषण में 'भूले वैदिक यज्ञ अरू होम, द्वापर के मंत्रों के नाम, त्रेता की शक्ति का क्या काम, वाह रे कलयुग वाह तेरा नाम, हर युग की कथा व्यथा है, न्यारी, सतरंगी संस्कृति थी हमारी' कहकर आधुनिकता की दौड़ में संस्कृति से जोड़ने की बात कही है। राजनैतिक प्रदूषण-'उचित अनुचित सब है जायज, साम, दाम, दण्ड, भेद नहीं सब नाजायज, स्वार्थ सिद्धि है इनका नारा केवल यह सुनने में लगता प्यारा, पर व्यावहारिकता में क्या ये जायज' आर्थिक प्रदूषण-'कमीशन खोरी का बड़ा मान, बढ़ती इससे उनकी जो शान, चोरी इसको कब किसने माना, चलते-चलते डाले सब दाना' शैक्षिक प्रदूषण-'संस्कारहीन उछल कूद भरी, भाषा भेद से विकृति उभरी, नूतनता के नव प्रयोगों से ह्रास हो रहा विविधता से, अपना न सके एक को प्यारे।' अंतिम रचना-सभी प्रदूषण-समस्याओं का समाधान-'यज्ञ होम अरू संध्योपासना, शीतल जल अरू संगीत सुनाना, छाया शीतल लेने मधुबन में जाना, ऋषि-मुनियों का संग वन में पाना, स्वस्थ जीवन के गुर गुरु में पाना, बैठ उन्हीं संग यह भेद है जाना' कहकर 'अग्निहोत्र' द्वारा पर्यावरणीय शुद्धि की बात कही है, हवन द्वारा विविध रोगों की चिकित्सा विधि भी बताई गई है। यज्ञ द्वारा सन्तान उपलब्धि की बात पौराणिक आधार देकर बताई गई है।

अंत में पर्यावरणीय चिंता पर अपनी बात कहते हुए विभिन्न रिपोर्टों का आकलन कर जलवायु परिवर्तन के विभिन्न सोपानों पर छपे-लेख-आलेखों का सारांश देकर अपना चिंतन प्रस्तुत किया है।

मोहनलाल गहलोत ने मानवीय जीवन के अनुभवों तथ्यों के आधार पर अपनी भावनाओं, विचारों एवं हृदय की पीड़ा-संवेदना को शब्द-विधान में ढाला है। कागज का स्तर व छपाई एवं मुख पृष्ठावरण आकर्षक व अच्छा है। उनका लेखन आशावादी विचार देता है। रचनाकार को सत् साहित्य सृजन हेतु बधाई।

-समीक्षक : **डॉ. कृष्णा आचार्य**
वरिष्ठ शारीरिक शिक्षिका
रा.बा.उ.मा. लक्ष्मीनाथ घाटी,
बीकानेर (राज.)
**मो. 9461036201**

## भक्तिमति समान बाई : जीवन और काव्य

**सम्पादन** : डॉ. मंजुला बारैठ **प्रकाशक** : कमला प्रकाशन, सुदर्शना नगर, बीकानेर **संस्करण** : 2015 **पृष्ठ संख्या** : 100 **मूल्य** : ₹200

भक्तिकाल में अनेक भक्त कवयित्रियों ने अपने पदों और साखियों का सृजन किया। मीरां बाई, सहजो बाई, दया बाई, डाली बाई, लाली बाई और समान बाई आदि। इनमें मत्स्य की मीरां समान बाई की भक्ति धारा प्रमुख है। प्रसिद्ध कवि शकनाथजी कविया के जन्मी समान बाई के मन में भक्ति और श्रद्धा के बीज-भाव बचपन से ही अंकुरित हो गये। माओद के प्रसिद्ध कवि उम्मेदरामजी के वंशज रामदयालजी के साथ आपका विवाह हुआ। ससुराल में भी आपको भक्तिमय माहौल व वातावरण मिला। मीरां बाई के ससुराल वाले राणाजी तो उनकी भक्ति यात्रा में बाधक थे परन्तु समान बाई के पति ने उनका भरपूर साथ दिया। समान बाई अपने पति के प्रति समर्पित थीं। पति को भोजन करवाने के बाद ही अन्न ग्रहण करती थी। पति के सम्मान में 'पति शतक' लिखा, जो भक्ति साहित्य का अनूठा उदाहरण है।

समान बाई के सवैयों-छंदों में ईश्वर के प्रति अगाध आस्था प्रकट करने वाले भाव के सवैये सर्वाधिक लोक प्रचलित व प्रसिद्ध हैं। ये रचनाएं राजस्थान तथा गुजरात में जन-जन के कण्ठहार है। -'शत्रुन के घर सैन करो, श्मसान के बीच लगायले डेरो / जानकीनाथ संताव करै तब, कौन बिगाड़ करै ना तेरो।' ऋषि पत्नी अहिल्या उद्धार के 10 सवैये, नृसिंह अवतार के 13, सबरी प्रसंग के 1, राजकुमार ध्रुव के 10, केवट प्रसंग के 7, गज उद्धार के 5 सवैये उपलब्ध हैं। समान बाई के जीवन प्रसंग को देखें तो सती भटियाणी बाई से अंतरंग सम्बन्ध देखने को मिलते हैं। समान बाई के पति ठाकुर साहब का स्वास्थ्य खराब हो गया। समय के साथ वैद्य तथा परिजन सभी चिन्तित होने लाजमी थे। क्योंकि स्वास्थ्य बिगड़ता ही जा रहा था, तब

भटियाणी बाई ने याद दिलाया कि आपने कहा था कि सती स्त्री होते हुए पति का कुछ बुरा नहीं हो सकता। तब फिर अब ठाकुर साहब की यह स्थिति क्यों हो रही है? तब एक दिन समान बाई ने भक्त-वत्सल भगवान से करुण पुकार की और कहा कि आपने पानी में डूबते हुए गज की रक्षा की, भारी विपत्ति में राणी रुक्मणी की लाज रखी, तब भला इस अबला की पुकार को आप कैसे अनसुना कर सकते हैं -'अब हरि आओ जी, भीर परी, भीर परी राणी रुक्मण पे, जिण प्रभु आपो वारी, भीर परी द्रोपद तनमा पे, सारी अनन्त करी/कहत समान सुणो बृजनंदन, अबला पुकार करी ।' कुछ समय पश्चात ठाकुर साहब के स्वास्थ्य में सुधार हो गया। सुहागिन होते हुए समान बाई ने संवत् 1942 श्रावण बदी अमावस्या को अपने पति के हाथों में सांसारिक नश्वर देह को त्याग अमरत्व प्राप्त किया। समान बाई की सर्वाधिक लोकप्रियता वैवाहिक गीत 'बन्ना' के कारण भी रही है। आज भी उन्हें राजस्थान के सभी अंचलों में गाया जाता है। भक्ति गीतों में भगवान राम व कृष्ण के रूप-छवि का भावपूर्ण चित्रण देखने को मिलता है। ये गीत हमारी लोक परम्परा के गीत हैं। विवाह संस्कार में गणपति पूजन, बान बैठना, हल्दी-केसर उबटन लगाना, घोड़ी पूजन, सीता स्वयंवर, कामण, हाथ के कांकण-डोरा खेलना, विदाई गीत की रचनाएं मन मोह लेती है। 'सियावर तोरण आया है सहेली, सियावर तोरण आया है/रघुवर अंग नापण तिय लानी, लछमणजी मुस्काया है, बावन होम छव्या बलि राजा, ता दिन क्यों ने नपाया है/कहत समान देखि यह छवि कूं, हरिष जनम फल पाया है।'

समान बाई ने के सवैयों, कवित्त और पद्य का काव्य उत्कृष्ट काव्य कला का नायाब उदाहरण है। निर्मलता और स्वच्छता आपके गीतों की विशेषता है। आपके गीत चन्द्रसखी जैसे भक्त कवयित्री समान समर्पित भाव-बोध के गीत हैं। इस प्रकार समान बाई का काव्य पांडित्य प्रदर्शन न होकर प्राकृतिक और स्वाभाविक भाव में रचित काव्य-धारा है। विदुषी संपादिका डॉ. मंजुला बारैठ को इस शोधपूर्ण कार्य के लिए साधुवाद।

-समीक्षक : **पृथ्वीराज रतनू**
एफ सी आई गोदाम रोड, इंदिरा कॉलोनी,
बीकानेर **मो. 9414969200**

## विजयादशमी

# विजय पर्व दशहरा

❐ **अचल चन्द जैन**

दशहरा भारतीयों का एक विशिष्ट त्योहार है। यह आश्विन मास के शुक्ल पक्ष की दशमी को मनाया जाता है। कहते हैं कि अयोध्या के राजा श्री राम ने इसी दिन लंका के राजा रावण का वधकर विजय प्राप्त की थी। इसी कारण इस दशमी को विजयादशमी के नाम से जाना जाता है। यह त्योहार असत्य पर सत्य की विजय के रूप में मनाया जाता है। अर्थात् दशहरा बुराइयों पर अच्छाइयों की विजय का त्योहार है।

ज्योतिष शास्त्र के अनुसार साल भर में दो तिथियों को अत्यन्त शुभ माना गया है 1. दशहरा व 2. अक्षय तृतीया। ये दोनों तिथियाँ शुभ होने के कारण लोग इन्हीं दिनों नया काम प्रारम्भ करते हैं। मुहूर्त के लिहाज से ये दोनों तिथियाँ श्रेष्ठ हैं।

आश्विन शुक्ला दशमी को तारा उदय होने के समय विजय मुहूर्त होता है। अतः यह काल सर्व सिद्धि दायक होता है। अक्षय तृतीया की तिथि तो इतनी शुभ है कि इस दिन को अबूझ मुहूर्त माना जाता है। इस तिथि का कभी क्षय नहीं होता।

प्राचीनकाल में राजा-महाराजा दशहरे के दिन शस्त्रों की पूजा के साथ अपने इष्ट देव से युद्ध में विजय की प्रार्थना करते हुए शुभ मुहूर्त में रणभूमि के लिए प्रस्थान करते थे।

यह त्योहार विभिन्न प्रदेशों में विभिन्न रूपों में मनाया जाता है। महाराष्ट्र में दशहरे का त्योहार सिलंगण महोत्सव के रूप में मनाया जाता है। सायंकाल के समय सभी ग्रामीण जन नये-नये वस्त्र पहन कर गाँव की सीमा पर खड़े शमी वृक्ष की पूजा करते हैं और उसके कुछ पत्ते तोड़कर घर में पूजा स्थल पर रखते हैं। शमी वृक्ष के पत्तों को शुभ माना जाता है। शमी वृक्ष के पूजन के पीछे एक पौराणिक कथा प्रचलित है जो इस प्रकार है:-

पांडवों के 13 वर्ष के अज्ञातवास में अर्जुन ने अपने धनुष-बाण शमी नाम के वृक्ष पर रखा था और स्वयं ने वेश बदलकर वृहन्नला के वेश में राजा विराट के यहाँ नौकरी कर ली थी।

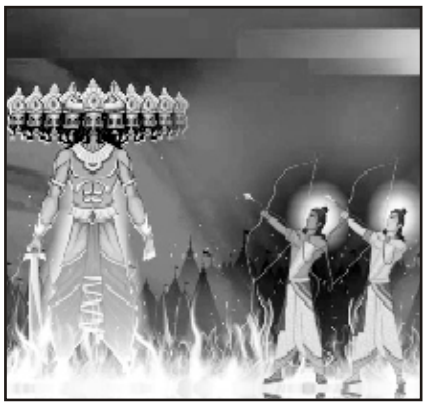

गौ-रक्षा के लिए, राजा विराट के पुत्र धृष्टद्युम्न के साथ युद्ध में जाते हुए अर्जुन ने शमी वृक्ष पर रखे हुए धनुष बाण से शत्रुओं पर विजय प्राप्त की थी। तभी से शमी वृक्ष की पूजाकर विजयादशमी का त्योहार मनाया जाता है। भारत के विभिन्न प्रदेशों में दशहरे के दिन जगह-जगह मेले लगते हैं। रामलीला का आयोजन होता है। रावण, मेघनाथ आदि के पुतले जलाए जाते हैं एवं विजय की खुशी में आतिशबाजी की जाती है, इस तरह दशहरा हर्ष, उल्लास एवं विजय के त्योहार के रूप में मनाया जाता है। इस दिन शक्ति की देवी दुर्गा की पूजा की जाती है। दशहरा और दुर्गा की भी पूजा एक ही दिन मनाए जाते हैं। दोनों ही रूपों में यह शक्ति पूजा का अनूठा त्योहार है।

दशहरे का आध्यात्मिक पहलू भी है जो हमें दस प्रकार के दुर्गुणों को छोड़ने की प्रेरणा देता है। ये दुर्गुण हैं:- काम, क्रोध, मोह, लोभ, अहंकार, आलस्य, हिंसा, चोरी, चुगली और पर निन्दा। ये सभी दुर्गुण त्यागने योग्य हैं। मन पर विजय प्राप्त करके ही इन दुर्गुणों को त्यागा जा सकता है।

भारतीय संस्कृति शौर्य की उपासक है। हमारी संस्कृति में वीरता की पूजा होती है। यहाँ वीरों एवं वीरांगनाओं के वीरता की गाथाएँ गायी जाती है। जो इतिहास में अजर-अमर है। महाराणा प्रताप, झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई, मेजर शैतानसिंह आदि अनेक वीरता के उदाहरण भारतीय इतिहास में मौजूद हैं। व्यक्ति और समाज बुराइयों पर विजय प्राप्त करे एवं हमारे खून में वीरता बनी रहे इसलिए दशहरे का त्योहार विजयादशमी के रूप में मनाया जाता है।

गाँधी मुहत्तो का बास
सायला (जालोर)

## शाला प्रांगण से

**राउप्रा. विद्यालय बिंझरवाली में पौधरोपण**

बीकानेर के लूणकरणसर तहसील के गाँव बिंझरवाली की रा.उ.प्रा. विद्यालय में बच्चों ने शिक्षकों एवं ग्रामीणों के साथ पौधरोपण दिनांक 29.7.16 को किया। दैनिक भास्कर के ''सांसे हो रही है कम, आओ पेड़ लगाएँ हम'' अभियान के तहत विद्यालय के बाल उद्यान में बच्चों ने पीपल, नीम, शीशम, गुलमोहर व आँवला आदि के 21 पौधे लगाए। गत वर्षों में लगाए गए लगभग 60 पौधे अब वृक्ष का रूप लेने लगे हैं। दीवार के पास तारबंदी कर पौधे लगाए गए हैं। इस जगह का नाम बाल उद्यान रखा गया है। पौधरोपण में इन्द्रजीत साहू सीताराम, भोमराज वर्मा, अजय कुमार यादव, हरीराम ज्याणी व मंजू शर्मा आदि ने पूर्ण सहयोग किया।

**राउमावि छतरगढ़ में एसएमसी. का गठन**

बीकानेर में अभिभावकों की साधारण सभा (दि. 30.7.16) में सर्व सम्मति से विद्यालय प्रबन्ध समिति का गठन किया गया। जिसमें शाला प्रधानाचार्य यशपाल शर्मा को अध्यक्ष व बाबूलाल लोथिया को सचिव बनाया गया। शेष कार्यकारिणी सदस्यों का मनोनयन सर्वसम्मति से किया गया। साधारण सभा में मुख्य रूप से विद्यालय विकास योजना सम्बन्धी प्रस्तावों पर चर्चा की गई जिनमें प्रमुख रूप से बालिका विद्यालय को राउमावि में मर्ज से उत्पन्न 800 छात्र-छात्राओं के दाखिले से उत्पन्न व्यवस्था पर चर्चा हुई। प्रधानाचार्य ने सभी अभिभावकों का आभार जताते हुए नव चयनित सदस्यों से सकारात्मक सहयोग की अपील की।

**रतननगर (चूरू) में सम्मान समारोह**

राउमावि के प्रांगण में 30 जुलाई 16 को श्रद्धेय गुरुदेव स्व. घनश्याम शर्मा एवं श्री पदमाराम शर्मा की पावन स्मृति में उनके सुपुत्र डॉ. वेदप्रकाश शर्मा द्वारा कक्षा 8 से 12 तक में प्रथम स्थान प्राप्त 5 छात्र/छात्राओं को 1100 रु. नकद, एक स्कूल बैग तथा प्रशस्ति पत्र प्रदान किए गए। विद्यालय में अध्ययनरत असुविधाग्रस्त व बीपीएल वर्ग के 11 छात्र/छात्राओं को स्कूल फीस के रूप में 7200 रु. नकद प्रदान किए एवं 32 कक्षा मॉनिटरों को प्रतीक चिह्न देकर सम्मानित किया। संस्था प्रधान श्रीमती कुसुम शेखावत ने अतिथियों का स्वागत किया। डॉ. वेदप्रकाश शर्मा की 'अन्तर्वेदना' एवं श्री याकूब खान की 'जमाने की सलवटें' पुस्तकालय हेतु पुस्तकें भेंट स्वरूप प्राप्त की । कार्यक्रम का संचालन श्री हरदयाल सिंह वरिष्ठ अध्यापक ने किया।

**हरियाळो राजस्थान के तहत पौधरोपण**

बच्चों के लिए उरमूल सीमान्त समिति, बज्जू (कोलायत) बीकानेर द्वारा शिक्षा के क्षेत्र में किया जा रहा प्रयास सराहनीय है। 30 जुलाई 16 को माध्यमिक शिक्षा उपनिदेशक, बीकानेर श्री ओमप्रकाश सारस्वत ने अपने निरीक्षण के दौरान हरियाळो राजस्थान के तहत शाला में पौधरोपण किया तथा पाया कि विद्यालय भवन का निर्माण छात्रों की सुविधानुसार निर्मित किया गया है एवं फर्नीचर व पाठ्यपुस्तकों का समुचित उपयोग किया जा रहा है। विद्यालय का प्राकृतिक वातावरण बहुत ही सुंदर व आनंददायक है। उरमूल स्कूल को बच्चों की शिक्षा की गुणवत्ता के अनुकूल पाया, खुला वातावरण 25 बीघा जमीन में फैले विशाल परिसर को देखने के बाद उन्होंने कहा कि यह स्कूल एक नया शांति वन की ही तरह लग रहा है। सार्थक प्रयास करते रहने से भविष्य में यह विद्यालय पूरे क्षेत्र के लिए आदर्श स्थापित कर सकेगा।

**मुंशी प्रेमचन्द की जयंती मनाई गई**

स्वामी विवेकानन्द राजकीय मॉडल स्कूल सिवाना, बाड़मेर में महान उपन्यासकार मुंशी प्रेमचन्द की जयंती मनाई गई। इस अवसर पर श्री ईसराराम पंवार व.अ. हिन्दी ने प्रेमचन्द के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर प्रकाश डाला। प्रेमचन्द हिन्दी साहित्य जगत में कहानी व उपन्यास विधा के महान हस्ताक्षर थे उन्होंने अपनी रचनाओं में जनमानस का सरल चित्र खींचा है। विद्यालय में चित्र बनाओ, कहानी बनाओ प्रतियोगिता में प्रथम राहुल, द्वितीय सीमा, तृतीय स्थान हितेश ने प्राप्त किया। निबन्ध में प्रथम प्रेरणा परमार, द्वितीय भावना व तृतीय स्थान खुशबू ने प्राप्त किया। स्वरचित कहानी में दीपिका व प्रेमकुमार की रचनाएँ रही। कार्यक्रम प्रेरणादायी, उत्साहवर्धक रहा।

**विद्यार्थियों ने सीखे गणित के गुर**

सादुलपुर तहसील के गाँव ढाणी छोटी के राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय में छात्रों को आशा देवी इंस्टीट्यूट के कॉर्डिनेटर महेन्द्र चौधरी ने गणित के गुर सिखाए। महेन्द्र चौधरी ने बताया कि गणित विषय में कैलकुलेशन स्किल कैसे बढ़ा सकते हैं और गणित विषय के भय को दूर करते हुए आनंदमयी बनाया जा सकता है। ग्रामीण अभिभावक प्रतापसिंह बेनीवाल, जगदीप चाहर, भरतसिंह चाहर, बहादुर चौपड़ा ने कहा कि ऐसी कार्यशाला हमारे विद्यालय में बार-बार की जावे ताकि ग्रामीण परिवेश के छात्र भी आने वाली प्रतियोगिताओं में सफल हो सकें।

**पौधरोपण कर संरक्षण का संकल्प लिया**

राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय आडसर बास, श्री डूँगरगढ, बीकानेर में अलायंस क्लब की स्थानीय इकाई द्वारा बुधवार दिनांक 30.8.2016 को पौधरोपण कार्यक्रम आयोजित किया गया। क्लब के रूपचंद सोनी, हरिकिशन बाहेती, पी.डी. स्वामी, जयसिंह राजोतिया व मांगीलाल बिहानी ने विद्यालय के छात्रों के सहयोग से पौधरोपण किया। संस्था प्रधान ने विद्यार्थियों को पर्यावरण संरक्षण की जानकारी दी। पौधों के संरक्षण की जिम्मेदारियाँ भी तय की गई।

**'विश्व युवा कौशल' दिवस का आयोजन**

रा.आ.उ.मा.वि., कालियास, आसीन्द, भीलवाड़ा के शाला परिवार ने दिनांक 15.7.16 को विश्व युवा कौशल दिवस का आयोजन किया जिसकी अध्यक्षा श्रीमान प्रधानाचार्य महोदय ने की। इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि प्राध्यापक श्री दिनेश कुमार कौली व विशिष्ट अतिथि प्राध्यापक श्री भीमसिंह राठौड़ रहे। इस अवसर पर पोस्टर प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसमें अव्वल आए छात्र-छात्राओं को विद्यालय की ओर से पुरस्कृत किया गया। प्रशिक्षक श्री श्याम सुन्दर साहू व हंसराज लक्षकार ने आदर्श वार्ताएँ प्रस्तुत की। प्रधानाध्यापक ने राजकीय योजनाओं की सविस्तार उपयोगितापूर्ण जानकारी छात्र-छात्रा के समक्ष प्रस्तुत की। कार्यक्रम का संचालन प्रशिक्षक साहू ने किया।

**संकलन : नारायण दास जीनगर**

प्रकाशन सहायक शिविरा

# चतुर्दिक समाचार

समाचार पत्रों में कतिपय रोचक समाचार/दृष्टांत समय-समय पर छपते रहते हैं। इन्हें पढ़कर हमें विस्मय तो होता ही है, साथ ही हमारा ज्ञानवर्धन भी होता है। ऐसे समाचार/दृष्टांत चतुर्दिक स्तम्भ के अन्तर्गत प्रकाशित किये जाते हैं। आप भी ऐसे समाचारों का पुनर्लेखन कर संदर्भ एवं पेपर कटिंग के साथ शिविरा में प्रकाशन हेतु हमें भिजवा सकते हैं।

-वरिष्ठ सम्पादक

## कार्बन-डाइ-ऑक्साइड से बनेगा- ईंधन

वैज्ञानिकों ने वातावरण में मौजूद कार्बन डाई ऑक्साइड से ईंधन तैयार करने में सफलता हासिल की है। इस प्रक्रिया में सौर बैटरी के इस्तेमाल से कार्बनडाई ऑक्साइड को हाईड्रोकार्बन में तबदील कर ईंधन के रूप में तैयार किया है। यूएस डिपार्टमेंट ऑफ एनर्जी आरगोने नेशनल लेबोरेट्री की शोधकर्त्ता लैरी क्यूरटिस ने कहा कि '' इस पूरे शोध में हम पौधों की प्रकाश संश्लेषण की प्रक्रिया को ही अपना रहे है। बस इस पूरी प्रक्रिया से उत्पन्न होने वाला ईंधन नहीं अलग है।'' क्यूरटिस ने बताया कि इस प्रक्रिया में कार्बन डाई ऑक्साइड से हाईड्रोकार्बन तैयार करना मुश्किल रहा क्योंकि रासायनिक तौर पर यह निष्क्रिय होती है और इसे दूसरी किसी चीज में बदलना मुश्किल होता है परन्तु यह विधि पारंपरिक विधि से सस्ती भी है । यह पूर्णत: प्राकृतिक है और पर्यावरण में मौजूद तत्वों का ही उपयोग करती है। साथ ही इससे किसी प्रकार का कोई प्रदूषण नहीं फैलता । शोधकर्ताओं को उम्मीद है कि इस नई खोज से विश्वभर में ईंधन की समस्या को दूर किया जा सकेगा तथा साथ ही वैश्विक तापमान में हो रही वृद्धि के स्तर को भी रोका जा सकेगा।

## प्रकाश तरंगों द्वारा इंटरनेट से जुड़ेंगे डिवाइस

**सैन फ्रांसिस्को।** दूर दराज इलाकों में इंटरनेट की खराब गति या सिग्नल नहीं मिलने की शिकायत बीते दिनों की बात हो जाएगी। सोशल नेटवर्किंग साइट फैसबुक के वैज्ञानिकों ने इसकी उम्मीद जगाई है। वैज्ञानिकों ने प्रयोगशला में प्रकाश संकेतों की पहचान कर उन्हें फिर से डाटा में तब्दील करने की तकनीक विकसित करने का दावा किया है। शोधकर्ता टोबियस ने कहा, प्रकाश आधारित बेतार संचार को फ्री स्पेस ऑप्टिकल कम्युनिकेशन भी कहा जा सकता है।

## कम्प्यूटर से याददाश्त दुरुस्त

**वॉशिंगटन एजेन्सियाँ–** कम्प्यूटर का इस्तेमाल करने से याददाश्त से जुड़ी समस्याएँ विकसित होने का खतरा कम हो सकता है। एक नए अध्ययन में यह बात सामने आई है। शोधकर्ताओं ने पाया कि अधिक उम्र के जो लोग प्रति सप्ताह कम से कम एक बार कम्प्यूटर का इस्तेमाल करते हैं उनमें याददाश्त और सोचने-विचारने से जुड़ी समस्याएँ पैदा होने का खतरा ऐसा नहीं करने वाले लोगों के मुकाबले काफी कम होता है। अमेरिका स्थित मेयो क्लीनिक के शोधकर्ताओं ने 70 वर्ष और उससे अधिक आयु के 1929 लोगों पर अध्ययन करने के बाद यह नतीजा पाया। अध्ययन से पहले इसमें शामिल होने वाले प्रतिभागियों की याददाश्त और सोचने की क्षमता सामान्य थी।

शोधकर्ता यह पता लगाना चाहते थे कि शोध में भाग लेने वाले लोगों की सोचने विचारने की क्षमता कैसी है। जिन लोगों ने सप्ताह में एक दिन भी कम्प्यूटर का इस्तेमाल किया, फायदेमंद रहा बनिश्पत नहीं चलाने वालों की तुलना में। जिन्होंने सप्ताह में एक से अधिक बार चलाया ऐसा नहीं करने वालों की तुलना में याददाश्त व सोचने विचारने की समस्याएँ विकसित होने की 42 प्रतिशत कम संभावना थी। सामाजिक गतिविधियों में शामिल रहने वाले लोगों में ऐसी समस्याएँ विकसित होने की 23 प्रति कम संभावना थी जो ऐसा नहीं करते । विशेषज्ञों का शोध के आधार पर कहना है कि अधिक उम्र में मानसिक सक्रियता से जुड़े काम करने से मस्तिष्क की गतिविधि नियमित बनी रहती है।

## स्वस्थ जीवन के लिए सामाजिक दायरा बढ़ाएँ

जो लोग सामाजिक तौर पर ज्यादा सक्रिय रहते हैं, वह एक स्वस्थ जीवन बिताते हैं। एक नए अध्ययन के अनुसार किशोरावस्था और प्रौढ़ावस्था के दौरान सामाजिक तौर पर सक्रिय रहने वाले लोग कम बीमार पड़ते हैं। शोधकर्ताओं के अनुसार सामाजिक तौर पर व्यस्त व्यक्ति को मोटापा, उच्च रक्तचाप जैसी समस्याएँ कम होती हैं। इन समस्याओं का संबंध हृदयरोग, कैंसर और पक्षाघात से होता है। यानी जो व्यक्ति सामाजिक तौर पर सक्रिय है, उसे हृदय रोग, कैंसर और आघात का खतरा अन्य की अपेक्षा कम होता है। शोधकर्त्ताओं ने यह भी पाया कि किशोरावस्था से लेकर वृद्धावस्था तक सामाजिक सक्रियता उच्च तनाव को नियंत्रित करती है जिससे स्वस्थ रहने में मदद मिलती है।

## झपकी से बढ़ती है सीखने की क्षमता

**लंदन–** घंटों पढ़ाई के दौरान थोड़ी देर की झपकी लेना बच्चों की सीखने की क्षमता को बढ़ाती है। इससे वह पाठ तेजी से लंबे समय तक याद कर पाने में सक्षम होते हैं। फ्रांस स्थित यूनिवर्सिटी ऑफ लेयोन की शोधकर्ता स्टेफनी माज्जा ने कहा कि लम्बे अभ्यास के बीच में झपकी लेने का दोहरा फायदा होता है ऐसा करने से मस्तिष्क आराम के दौरान व्यवस्थित हो जाता है और अधिक सूचना ग्रहण करने के लिए सहज रूप से तैयार हो जाता है।

## वे संस्कृत में वकालत करते हैं

बनारस के श्यामजी उपाध्याय पिछले 38 साल से संस्कृत भाषा में ही वकालत कर रहे हैं। बच्चों को रोजाना मुफ्त संस्कृत पढ़ाकर वे इस भाषा के प्रचार-प्रसार के लिए काम भी कर रहे हैं। वे अब तक 60 उपन्यास भी संस्कृत में लिख चुके हैं।उन्हें वर्ष 2003 में मानव संसाधन विकास मंत्रालय ने संस्कृत भाषा में अभूतपूर्व योगदान के लिए 'संस्कृत मित्र' राष्ट्रीय पुरस्कार से सम्मानित किया था।

सन् 1976 से वकालत की शुरुआत करने वाले आचार्य पंडित श्यामजी उपाध्याय 1978 में अधिवक्ता के तौर पर पंजीकृत हुए थे। उन्होंने तय किया है कि जन-वाणी संस्कृत में ही वकालत करेंगे। तब से वे सभी अदालती कामकाज जैसे शपथ पत्र, प्रार्थना पत्र, दावा, वकालतनामा और यहाँ तक कि बहस भी संस्कृत में ही करते चले आ रहे हैं। पिछले 4 दशकों से संस्कृत में वकालत के दौरान श्यामजी के पक्ष में जो भी फैसला और आदेश हुआ, जज साहब ने संस्कृत या हिन्दी में ही सुनाया।

श्याम जी बताते हैं कि वे संस्कृत के सरल शब्दों का प्रयोग करते हैं, जिससे जज से लेकर विपक्षियों तक को कोई दिक्कत नहीं होती है और अगर कभी सामने वाला समझ नहीं पाए तो वे हिन्दी में भी अपनी बात कह देते हैं। संस्कृत भाषा में आस्था रखने वाले श्याम ही हर वर्ष कचहरी में संस्कृत दिवस समारोह भी मनाते चले आ रहे हैं। कचहरी खत्म होने के बाद इनका शाम का वक्त संस्कृत के प्रति जिज्ञासु वकीलों को पढ़ाकर बीतता है। संस्कृत भाषा की यह शिक्षा श्यामजी निःशुल्क देते हैं।

**संकलन–नारायण दास जीनगर**
**प्रकाशन सहायक शिविरा**

## सवाई माधोपुर

**रा.उ.मा.वि. बाढ़कलाँ, तह. गंगापुरसिटी** को श्री रामनिवास शर्मा एवं श्रीमती ममता मुदगल से एक माइक सैट लागत 5,200 रुपये, श्री गजानंद शर्मा से 10 सैट स्टूल-टेबल लागत 7,000 रुपये, श्रीमती रजनी गोयल द्वारा मंदिर गेट निर्माण हेतु 1,800 रुपये, सर्व श्री योगेन्द्र कुमार गर्ग, राजकुमार गोयनका, गौरीशंकर खण्डेलवाल, अरविन्द गर्ग, जगदम्बा एजेंसीज से प्रत्येक से एक-एक पंखा तथा प्रत्येक की लागत 1,400 रुपये, श्री रामस्वरूप बैरवा से एक अलमारी लागत 6,000 रुपये, श्री मोहन लाल गुप्ता से 5 टेबल-स्टूल सैट व 2 बैंच लागत 7,500 रुपये, श्री महेन्द्र कुमार शर्मा 10 ट्रोली मिट्टी लागत 2,000 रुपये, राजहंस उ.प्रा.वि. महूकलाँ से 2 कुर्सी प्लास्टिक लागत 1,500 रुपये, श्री दिलसुख बैरवा से 10 ट्रॉली मिट्टी लागत 2,500 रुपये, श्रीमती स्नेहलता शर्मा व श्री राजेन्द्र कुमार शर्मा से यूनिफॉर्म के 18 सैट लागत 4,000 रुपये, श्रीजी यात्रा समिति करौली से 3 बच्चों के बैठने की बैंच लागत 2,500 रुपये, ज्ञान रश्मि उ.मा.वि. व सेंट जूड्स मा. वि. गंगापुर सिटी द्वारा विद्यालय के मेन गेट का बोर्ड लागत 5,000 रुपये, माँ भारती आदर्श विद्यापीठ बामन बड़ौदा से 3 बच्चों के बैठने की बैंच लागत 2,000 रुपये, आशीष आदर्श प्रा. वि. बामन, बड़ौदा से 2 चेयर प्लास्टिक लागत 1,500 रुपये, श्री हरिसिंह राजपूत बड़ी उदेई से 3 बच्चों के बैठने की बैंच लागत 1,500 रुपये, श्री गिर्राज प्रसाद शर्मा, बाढ़कलाँ से 3 बच्चों के बैठने की बैंच लागत 2,000 रुपये, श्री रामजीलाल मीणा, गांवड़ी कलां से 12 बच्चों के बैठने की बैंच लागत 2,000 रुपये, श्रीमती रामबाई से 4 बैंच टेबल लागत 4,000 रुपये, श्री जगदीश सिंह राजपूत (प्र.अ.) से ऑफिस टेबल 2 लागत 3,000 रुपये, एस.एस. स्टील फर्नीचर गंगापुर सिटी से फर्नीचर का परिवहन व्यय हेतु खर्चा 500 रुपये, गुप्त भामाशाह द्वारा विद्यालय की रंगाई-पुताई लागत 10,000 रुपये, स्व. श्री गिर्राज प्रसाद गुप्ता व श्री रामावतार जीसीए गंगापुर सिटी से 4 टेबल व 4 बैंच लागत 5,600 रुपये, मंगलम् मैरिट पाइन्ट गंगापुर सिटी से 4 टेबल व 4 बैंच लागत 6,000 रुपये, श्री रघुवीर प्रसाद शर्मा व श्रीमती कृष्णादेवी शर्मा से 35 ऊनी स्वेटर बालकों हेतु लागत 7,000 रुपये, गुप्त भामाशाहों के अवदान का वर्णन प्रतिमाह इस कॉलम में कर पाठकों तक पहुँचाने का विनम्र प्रयास किया जाता है। आइये, आप भी इसमें सहभागी बनें। **-वरिष्ठ संपादक**

भामाशाह से विद्यालय में कोटेशन एवं सूचना बोर्ड बनवाना एवं बालकों के लिए हाथ धोने एवं बर्तन साफ करने की सिंक लागत 2,000-2,000 रुपये, लायंस क्लब मण्डावरा दौसा से 28 बालकों को चश्मा वितरण लागत 7,000 रुपये, श्री जगदीश प्रसाद गर्ग से प्रिण्टर विद स्कैनर लागत 11,000 रुपये, श्री अजय शर्मा द्वारा विकास कोष में दान चैक द्वारा 5,100 रुपये, गुप्त भामाशाह से बालकों को इनाम की सामग्री लागत 2,000 रुपये, श्री महेन्द्र कुमार शर्मा (व.अ.) से लोहे की भट्टी लागत 1,000 रुपये, गुप्त भामाशाह से 2 शौचालयों में टाइल्स लागत 2,500 रुपये, गुप्त भामाशाह से शत प्रतिशत उपस्थित वाली कक्षा को ईनाम वितरण 2,500 रुपये, प्रिंसीपल एम.एम.सी उ.मा. वि. गंगापुर सिटी से कम्प्यूटर यू.पी.एस. लागत 2,000 रुपये, लायंस क्लब गंगापुर सिटी से 100 ऊनी स्वेटर लागत 20,000 रुपये, मंगलम् मैरिट पाइन्ट गंगापुर सिटी द्वारा 4 फर्श निर्माण लागत 2,000 रुपये, विद्यालय स्टाफ बाढ़कलाँ से 16 ऊनी स्वेटर लागत 3,500 रुपये, श्री अशोक कुमार गुप्ता व.अ. एवं श्री विनोद एडवोकेट से 22 ऊनी स्वेटर लागत 4,400 रुपये, श्री साबिर खान मिस्त्री, वजीरपुर से बैट्री मरम्मत लागत 1,000 रुपये, श्री मनखुश बेनीवाल से 4 चेयर प्लास्टिक लागत 2,400 रुपये, गुप्त भामाशाह से 1 कुर्सी प्लास्टिक लागत 600 रुपये। **रा.उ.मा.वि. बलरिया** को चौथमाता ट्रस्ट चौथ का बरवाड़ा द्वारा 127 छात्र-छात्राओं को जर्सी वितरण जिसकी लागत 16,250 रुपये, विद्यालय विकास कोष में श्री कालूराम मीणा (पूर्व सरपंच) से 5,000 रुपये, श्री पन्नालाल से 5,000 रुपये, श्री गजानन्द मीणा से 1,000 रुपये, श्री रामस्वरूप गिरदावर से 5,101 रुपये, श्री नरेन्द्र सिंह (पूर्व सरपंच) से 1,100 रुपये, श्री छीतरमल मीणा से 2,100 रुपए नकद प्राप्त हुए।

**रा.उ.प्रा. वि. सीनोली** को श्री धर्मराज मीना द्वारा विद्यालयों के 35 बालकों को ड्रेस सप्रेम भेंट। श्री सांवरिया मीना द्वारा विद्यालय की 70 बालिकाओं के लिए 70 पोशाक सप्रेम भेंट। सर्व श्री हनुमान मीना, मेघराज मीना, रामजी लाल प्रजापत, फतेहलाल मीना प्रत्येक से एक-एक पंखा प्राप्त हुआ। श्रीराम मीना (पूर्व कोषाधिकारी) व श्री बाबूलाल मीना (एस.एम.सी. अध्यक्ष) द्वारा कक्षा 6-7 तक के लिए 30 छात्रों हेतु फर्नीचर लागत 11,000 रुपये, श्री ओमप्रकाश मीना (रिटायर्ड बाबूजी) से एक हारमोनियम, श्री शेरसिंह मीना द्वारा 108 बच्चों को टिफिन भेंट, श्री लक्ष्मीनारायण मीना द्वारा 100 कापी बच्चों को भेंट लागत 1,000 रुपये, श्री शिवकरण बैरवा द्वारा 100 पेन बच्चों को भेंट, श्री लखपत मीना 'चाचा' द्वारा 100 कापी बच्चों को भेंट।

## हमारे भामाशाह

## बाँसवाड़ा

**रा.उ.मा.वि. गोपीनाथ का गढ़ा** को स्थानीय भामाशाह द्वारा 50 सेट्स टेबल-स्टूल लागत मूल्य 50,000 रुपये, 4 दरियाँ (10×12) लागत 15,000 रुपये, 4 कारपेट्स 5×40 लागत 5,000 रुपये, एक जाजम लागत 900 रुपये, एक स्पीच स्टैण्ड लागत 3,500 रुपये, 6 वाटर कन्टेनर 12 नग (20 लीटर) लागत 6,000 रुपये, आर.ओ.प्लान्ट हेतु अभिभावकों द्वारा जनसहयोग से 21,000 रुपये प्राप्त हुए। **राजकीय नगर उ.मा.वि. बाँसवाड़ा** को सर्वश्री निमेश मेहता, रचना दोसी, हिमांशु वसानिया, प्रबंधक एस.बी.बी.जे. माही कॉम्पलेक्स बांसवाड़ा द्वारा सबमर्सिबल पम्प, शौचालय-मूत्रालय नल फिटिंग व रंग-रोगन एवं आरओ वाटर प्यूरीफायर के रूप में लगभग 46,000 रुपये प्राप्त हुए। **रा.आदर्श उ.मा.वि. मोटा गाँव** को श्री रघुवीर सिंह चौहान से 21,000 रुपये नकद, श्री नरेश नायक से 5,100 रुपये नकद, सर्व श्री धनपालजी कोठारी, राजेन्द्र कुमार उकाउत गीताबेन पटेल, नीपा निर्भय, संध्या दवे, अरविन्द चन्द्र पण्डया, रामसिंह चौहान, स्व. नाथूलाल कलाल, सुरेन्द्र सिंह चौहान से प्रत्येक से 5,000-5,000 रुपये नकद प्राप्त हुए। सर्व श्री जयशंकर पण्ड्या, स्व. नरेन्द्र सोनी से प्रत्येक से 3,100-3,100 रुपये नकद प्राप्त हुए। श्री कन्हैयालाल शर्मा से सीमेन्ट की टंकी 500 लीटर की एक प्राप्त हुई।

संकलन-**रमेश कुमार व्यास**
प्रकाशन सहायक शिविरा

शिविरा पत्रिका (मासिक) : अक्टूबर 2016 / निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर द्वारा प्रकाशित एवं प्रसारित तथा हरिहर प्रिण्टर्स, जे-97, अशोक चौक, आदर्श नगर, जयपुर-302 004 फोन : 0141-2600850 से मुद्रित। © वरिष्ठ सम्पादक : प्रकाश चन्द जाटोलिया, प्रकाशन हेतु सामग्री चयन के लिए उत्तरदायी।